घाघ और भड्डरी की कहावतें

सम्पादक डॉ. रमेश प्रताप सिंह

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

BVP - 1925

8/2/18

(26/66)

घाघ और भड्डरी

की

कहावतें

घाघ और भड्डरी की कहावतें

सम्पादक

डॉ. रमेश प्रताप सिंह

एम.ए. एम. फिल्, पी-एच.डी.

हिन्दी विभाग

श्री जय नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय

लखनऊ

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

(प्राचीन एवं दुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशन योजना)

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

6, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ

प्रकाशक
डॉ० सुधाकर अदीब
निदेशक
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,
लखनऊ।

ग्रन्थमाला संख्या- 5

प्राचीन एवं दुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित।

© उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2008
द्वितीय संस्करण : 2011
तृतीय संस्करण : 2013

प्रतियाँ : 1100

मूल्य : ₹ 60.00

ISBN : 978-93-82175-09-4

मुद्रक
प्रकाश पैकेजर्स
257, गोलागंज, लखनऊ।

प्रकाशकीय

किसी भी समाज की वास्तविक पहचान उसकी लोक संस्कृति से होती है। वह लोक संस्कृति, जिसमें रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, संगीत, कला और साहित्य के माध्यम से उसकी गौरवमयी परम्परा सामने आती है। जहां तक लोक भाषा का संदर्भ है, कहवातों व लोकोक्तियों आदि में उसकी सम्पूर्ण गरिमा मुखरित होती है। ये कहावतें, सच कहा जाय तो माटी की सुगंध की तरह हैं और उनमें जीवन के अनेक आरोह–अवरोह स्वाभाविक अभिव्यक्ति पाते हैं। इन्हें समग्रता में देखना–पढ़ना हर दृष्टि से उपयोगी है।

डॉ0 रमेश प्रताप सिंह ने सम्पूर्ण पुस्तक को 20 अध्यायों में बाँटा है, जिनमें विषयानुसार न केवल इनकी अवधी व भोजपुरी कहावतें संकलित हैं, अपितु सरल हिन्दी में इनका अर्थ भी दिया गया है। इन 20 अध्यायों में पहला अध्याय वर्षा सम्बन्धी है। यह बहुत स्वाभाविक है क्योंकि न केवल उनकी इस विषय पर कहावतें बहुतायत में मिलती हैं, अपितु एक कारण यह भी है कि कृषि प्रधान देश होने के कारण भारतवर्ष की अर्थव्यवस्था में वर्षा का योगदान आदिकाल से रहा है। अगले अध्याय अकाल, खेती, किसान, वायु, जुताई, बोवाई, सिंचाई, खाद, निराई–गुड़ाई, फसल रोग, खेत रक्षा, कटाई, मड़ाई, पैदावार और पशु आदि से सम्बन्धित होने के कारण यह स्पष्ट करने में पूरी तरह समर्थ हैं कि दोनों ही लोककवियों के चिंतन–मनन में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का स्थान बहुत ऊँचा था। अंतिम चार अध्याय नीति, ज्योतिष, शुभाशुभ और स्वास्थ्य सम्बन्धी हैं और अपनी उपादेयता स्वयं सिद्ध करते हैं। पहली ही दृष्टि में यह पहचानते देर नहीं लगती कि घाघ और भड्डरी की ये कहावतें न केवल ज्ञान व अनुभव से

भरी–पूरी हैं, सर्वकालिक हैं और अपनी सरलता व सारगर्भिता की स्वयं प्रमाण हैं।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान अपनी प्राचीन एवं दुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशन योजना के अन्तर्गत इसका प्रकाशन कर प्रमुदित है। हमें विश्वास है कि हिन्दी साहित्य, लोक संस्कृति और भारतीय समाज के विकास क्रम को व्यापक धरातल पर जानने–समझने के इच्छुक सुधीजनों के बीच इस ग्रंथ का समुचित समादर होगा।

डॉ. सुधाकर अदीब
निदेशक

निवेदन

लोक जीवन में कहावतों और लोकोक्तियों की उपादेयता और उपयोगिता निर्विवाद है। अत्यन्त प्राचीनकाल से विभिन्न समाजों विशेष रूप से उनके ग्रामीण अंचलों में इन कहावतों आदि की लोकप्रियता पग-पग पर आज भी दिखाई देती है। कहावत का अर्थ है जो बात प्रायः जनजीवन की बोलचाल में उद्धृत की जाय। दुनिया की विभिन्न भाषाओं में इसके समानार्थी शब्द बहुलता से मिलते हैं। जहाँ तक हिन्दीभाषी उत्तर भारत का सम्बन्ध है, यहाँ के गाँवों में विशेषकर घाघ, भड्डरी और डाक की कहावतें आज भी कभी न कभी चर्चा में आते देर नहीं लगती। इन लोककवियों की कहावतों की यह लोकप्रियता अनायास नहीं बनी, अपितु उनकी उपादेयता का परिणाम है। घाघ जहाँ खेती से जुड़ी कहावतों के लिए अधिक विख्यात थे, वहीं भड्डरी की रचनाएं ज्योतिष और आचार-व्यवहार से अधिक सम्बन्धित हैं। दोनों ही ने लगभग चार सौ वर्ष पूर्व इस धरती को धन्य किया। दोनों के ही सम्बन्ध में अनेक किंवदंतियां हैं। कहा जाता है कि घाघ की पुत्रवधू भी अत्यंत विदुषी थी। वह प्रायः घाघ की कहावतों का उल्टा जवाब कहावतों में ही देती। इसी तरह, लाल बुझक्कड़ नाम के अन्य जनकवि से उनकी लाग-डांट की चर्चाएं भी कम नहीं हैं, परन्तु यह अधिक विश्वसनीय नहीं हैं, क्योंकि लाल बुझक्कड़ मूलतः पहेलियां कहते थे और कहावतों से उनका अधिक सरोकार नहीं था।

इतना निश्चित है कि अपनी कहावतों व लोकोक्तियों की उपादेयता के चलते दोनों ही विद्वान-- घाघ और भड्डरी-- अपने जीवनकाल से लेकर आजतक लोकप्रिय हैं। ये क्रम आगे भी निरंतर गतिशील रहेगा। घाघ और भड्डरी की कहावतें हैं। लोकोक्तियां अधिकांश संदर्भों में जीवन के व्यावहारिक पहलुओं से जुड़ी और न केवल साधारण व्यक्ति इन्हें आसानी से याद रख सकता है, अपितु दिन प्रतिदिन के जीवन में उन्हें प्रयोग में लाने से उनकी अभिव्यक्ति की शक्ति में वृद्धि होती है। खेती, ज्योतिष, मौसम और दैनिक जीवन से जुड़ी इन कहावतों की उपयोगिता के लिए आज किसी परिचय की

आवश्यकता नहीं है। इनसे यह भी प्रमाणित होता है कि कहावतों व लोकोक्तियों को मुहावरों, पहेलियों और अनमोल वचनों से अलग करके ही देखा जाना चाहिये क्योंकि इनकी प्रवाहपूर्ण सरल प्रस्तुति का लक्ष्य उनसे बिल्कुल भिन्न होता है।

विश्वास है कि उत्तर भारतीय जनजीवन, अर्थव्यवस्था, मौसम और सम्पूर्णता में लोकसंस्कृति को आत्मसात करने के लिए इच्छुक पाठक के मध्य 'घाघ और भड्डरी की कहावतें' के इस तीसरे संस्करण का भी समुचित आदर होगा।

उदय प्रताप सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष

सम्पादकीय

तृतीय संस्करण

घाघ और भड्डरी की कहावतें का तृतीय संस्करण सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हिन्दी पुस्तकों की पठनीयता पर आज प्रश्नचिह्न लगाा है किन्तु इतने कम समय में पुस्तक के दो संस्करण इस बात को प्रमाणित करते हैं कि आज भी भारतीय जन मानस में घाघ और भड्डरी बसे हुए हैं। पुस्तक की अनुदिन माँग इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। विज्ञ सामज के साथ ही अल्प साक्षर ग्रामीण समाज ने भी इसे विशेष रूप से अपनाया है। आज यहाँ एक तरफ इंटरनेट और पाश्चात्य संस्कृति भारतीय चेतना पर निरन्तर हावी हो रही है वहीं लोक विश्वासों पर आधारित इन कहावतों का पढ़ा जाना यह इंगित करता है कि भारतीय जन-जीवन में पुरातन के प्रति आस्था की जड़े गहराई तक प्रवेश कर चुकी हैं।

इस पुस्तक के तृतीय संस्करण के प्रकाशन में उ०प्र० हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह, निदेशक डॉ० सुधाकर अदीब, प्रधान संपादक श्री अनिल मिश्र और प्रकाशन अधिकारी डॉ० अमिता दुबे ने जो रुचि दिखायी है इसके लिए मैं इन सब का हृदय से कृतज्ञ हूँ। इसके अतिरिक्त गुरुवर डॉ० कमलाशंकर त्रिपाठी, कालेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री वी०एन० मिश्र एवं प्राचार्य डॉ० एस० डी० शर्मा जी भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने अपना स्नेह और आशीर्वाद मुझ पर हमेशा बनाये रखा है। आशा है कि इस पुस्तक के पाठक इसी रूप में इसे निरन्तर अपनाते रहने की कृपा करते रहेंगे।

रमेश प्रताप सिंह

आमुख

भारत कृषि प्रधान देश है। यहां की अधिकतर जनता गाँवों में ही निवास करती है। राष्ट्र कवि सोहनलाल द्विवेदी ने कहा है - "है अपना हिन्दुस्तान कहाँ वह बसा हमारे गाँवों में।" गाँवों में रहने वाले अधिकतर लोग निरक्षर, धनहीन एवं साधनहीन हैं, किन्तु उनमें परम्पराओं और मान्यताओं के प्रति गहरी आस्था है। उनकी अपनी संस्कृति है जिसके तन्तु अतीत से जुड़े हुए हैं। निरक्षर अथवा अर्धसाक्षर होते हुए भी कहावतें, लोकोक्तियाँ और सूक्तियाँ ग्रामीण लोगों की जबान पर होती हैं। कोई समस्या यदि उनके सामने आती है तो उसका समाधान वे लोक प्रचलित कहावतों और सूक्तियों में खोजते हैं जो उनकी मार्गदर्शिका हैं। इस कृषि प्रधान देश में कहावतों को अनुभूत ज्ञान का सागर माना गया है। संसार का शायद ही ऐसा कोई देश या जाति हो जहां कहावतें न प्रचलित हों, बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि अनपढ़ से लेकर पढ़े लिखे तक, मूर्ख से लेकर ज्ञानी तक, अपनी बात की प्रामाणिकता के लिए कहावतों का सहारा लेते हैं। दूसरे शब्दों में कहावतें लोक जीवन का वेदवाक्य हैं। कहावतें नगर जीवन की अपेक्षा ग्राम्य जीवन में अधिक प्रचलित हैं। वे ग्रामीण जनों की छोटी - बड़ी दैनिक समस्याओं का निदान बड़ी सरलता से कर लेती हैं। लोक जीवन में प्रचलित इन कहावतों के स्रोत का पता लगाना कठिन है। विद्वानों ने कहावतों के आरम्भिक रूप की खोज वेदों में की है। इस प्रकार कहावतें हमारी आर्ष संस्कृति से जुड़ी हुई हैं।

कहावत का अर्थ है 'कही हुई बात'। सामान्यतः कहावतों से अभिप्राय लोक प्रचलित कथन या वाक्य से है, जिसमें किसी तथ्य अथवा अनुभूत ज्ञान का प्रतिपादन होता है। कहावतों के लिए एक अन्य शब्द 'लोकोक्ति' भी प्रचलित है। लोकोक्ति के अतिरिक्त संस्कृत में कहावतों के रूप में प्रवाद आभाणक,

प्रायोवाद, लोकप्रवाद, लौकिकी गाथा इत्यादि शब्द भी प्राप्त होते हैं। लैटिन भाषा में इसे PROVERBIO; ग्रीक में PAROEMIA; तुर्की में ATALOR SOZI; रूसी में POSLOVITSA; अरबी में MATHAL; हिब्रू में MASHAL; फारसी में AMSAL; तथा अंग्रेजी में PROVERB कहते हैं। भारतीय भाषाओं में भी इसके अनेक नाम प्रचलित हैं। हिन्दी में लोकोक्ति, कहनावत, उपखान, उर्दू में जर्बुल मिस्ल, लँहदा में आखाण, राजस्थानी में ओखाणो, कहबट, कुवावट, गढ़वाली में पखाणा; गुजराती में कहेवत; उखाणु, बाँग्ला में प्रवाद, लोकोक्ति, प्रवचन, तेलुगु में समीटा, मलयालम में पज़मचोली विशेष रूप से उल्लेख्य हैं।[1]

कहावतें प्रकृति के ज्ञान की भाँति सार्वभौमिक हैं। न उनका कोई कर्ता है और न उनका देशकाल से उतना घनिष्ठ सम्बन्ध है जितना अन्य साहित्य का होता है। वायु और सूर्य की भांति कहावतें या लोकोक्तियाँ मानव मात्र की सम्पत्ति हैं और उनका रस स्रोत सबके लिए खुला रहता है। कहावतों का रस भण्डार अक्षय है। हजारों बार कही-सुनी जाने पर भी कहावतों का जब अवसर पर व्यवहार किया जाता है तब उसमें से सदा एक सा साहित्यिक ओज और आनन्द उत्पन्न होता है।[2] पाश्चात्य विद्वान हावेल ने कहावतों की तीन प्रमुख विशेषताओं का वर्णन किया है। 1. Brevity (संक्षिप्तता) 2. Sense (सारगर्भिता) 3. Piquancy or Salt (सप्रमाणता या चटपटापन)[3]। विद्वानों ने कहावतों की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताओं की चर्चा की है -

1. ज्ञान और अनुभवों से पूर्ण
2. सार्वभौमिक या सार्वकालिक
3. अज्ञात रचयिता
4. रस के अक्षय भण्डार
5. लाघवत्व
6. सरलता

---

1. लोक साहित्य के प्रतिमान - डॉ0 कुन्दन लाल उप्रेती, पृ0 190
2. वही, पृ0 197
3. Lessons in Proverbs- C R.C. Trench, P. 7

7. सप्रमाणता

8. सारगर्भिता

9. विदग्धता या भंगिमा

10. लोकप्रियता

लोक जीवन में प्रचलित कतिपय विधायें कहावतों के निकट प्रतीत होती हैं। उनमें इतना सूक्ष्म अंतर है कि आम आदमी उन्हें एक ही रूप में ग्रहण कर लेता है। इनमें लोकोक्ति, सुभाषित , पहेली और मुहावरे प्रमुख हैं। यहां पर इनमें संक्षिप्त अन्तर स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

कहावतें और लोकोक्तियाँ दोनों एक दूसरे की पर्याय हैं किन्तु कुछ सूक्ष्म अन्तर भी हैं। लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ होता है 'लोक की उक्ति या कथन'। इस दृष्टि से इसका क्षेत्र समस्त लोक हो जाता है, लेकिन आज यह शब्द कहावत के रूप में ही जाना जाता है।.लोकोक्ति से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि यह सम्पूर्ण लोक की उक्ति है जबकि कहावत इस दृष्टि से भिन्न है। वास्तव में कहावत से ही लोकोक्ति का विकास माना जाता है क्योंकि कहावत के सारे गुण लोकोक्ति में समाहित नहीं हो पाते। डॉ. कुन्दन लाल उप्रेती के शब्दों में "किसी व्यक्ति द्वारा कहा हुआ वाक्य अपनी अभिव्यक्ति के अनुरूप सत्य का प्रतिपादन करता है तभी वह 'कहावत' कहाने का अधिकारी बनता है। इसी प्रकार जब ऐसे कथन लोकानुभव की पृष्ठभूमि पर व्यक्तित्वहीन होकर प्रतिष्ठित हो जाते हैं तब लोकोक्ति कहलाते हैं। अतः जो अन्तर वर्ग तथा समानान्तर चतुर्भुज में है वही अन्तर लोकोक्ति एवं कहावत में है।"[1]

सुभाषित अपने व्यापक अर्थ में प्रज्ञासूत्र, नीति वचन या व्यवहार सूत्र और सूक्ति का बोध कराता है जो कहावतों के अत्यंत निकट है। सुभाषित कहावतों के रूप में आम जन में प्रचलित हैं लेकिन कहावतों से सूक्ष्म अन्तर रखता है। कहावतों में रचयिता का नाम निश्चित नहीं होता है जबकि सुभाषित का रचयिता होता है। सुभाषित में प्रायः चिन्तन एवं उपदेश मिलते हैं जबकि कहावतों में लोकमानस की सत्य संवेष्ठित अनुभूति। किसी लेखक

1. लोक साहित्य के प्रतिमान - डॉ0 कुन्दन लाल उप्रेती, पृ0 196

की उक्ति को 'सुभाषित' बनने के लिए उसका लोक समुदाय से स्वीकृत होना अनिवार्य होता है।

कहावत और पहेली दोनों का सम्बन्ध प्राचीन काल से लोक जीवन से रहा है। इस दृष्टि से दोनों में पर्याप्त साम्य भी है किन्तु विषय-वस्तु और रूप-विधान की दृष्टि से दोनों में विभिन्नता लक्षित की जा सकती है। पहेली बुद्धि विलास का एक माध्यम है जबकि कहावत लोक प्रचलित ज्ञान की संवाहिका। पहेली को समझने के लिए कल्पना शक्ति एवं विचार शक्ति आवश्यक है उसमें मस्तिष्क पर जोर भी देना पड़ता है किन्तु कहावतें लोक व्यवहार का सहज अंग हैं।

मुहावरे और कहावतें दोनों ही का संबंध लोक जीवन से हैं। दोनों से ही भाषा में सहजता, प्रवाह और सुन्दरता आती है किन्तु दोनों में पर्याप्त अन्तर भी है। मुहावरे वाक्यांश हैं जबकि कहावतें स्वतन्त्र वाक्य। मुहावरों का प्रयोग स्वतन्त्र रूप से नहीं होता किन्तु कहावतें स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त होती हैं। मुहावरों का सम्बन्ध किसी घटना या प्रसंग से नहीं होता जबकि कहावतें किसी घटना या प्रसंग से जुड़ी होती हैं। मुहावरा लक्षणा प्रधान होता है जबकि कहावत व्यंजनापरक।[1]

कहावतों का आधार मानवीय जीवन है। सामाजिक जन-जीवन में कहावतें शिक्षा या सतर्कता बरतने का कार्य करती हैं। कभी - कभी व्यक्ति कहावतों के माध्यम से ही अपनी बात को सिद्ध करना चाहता है। इनका प्रयोग कहीं हँसी, तो कहीं व्यंग्य के रूप में होता है। कहावतों का प्रयोग विभिन्न वर्गों में होता है। विद्वानों ने कहावतों का वर्गीकरण अनेक रूपों में किया है जिनमें डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय का वर्गीकरण सर्वाधिक उपयुक्त है। उन्होंने कहावतों को निम्नलिखित पाँच भागों में विभाजित किया है :-

1. स्थान सम्बन्धी
2. जाति सम्बन्धी
3. प्रकृति या कृषि सम्बन्धी
4. पशु पक्षी सम्बन्धी
5. प्रकीर्ण[2]

---

1. सामान्य हिन्दी - डॉ. कमला शंकर त्रिपाठी, पृ0 113, 14
2. लोक साहित्य की भूमिका - डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, पृ0 191

घाघ का जीवन वृत्त

हिन्दी के लोक कवियों में घाघ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। घाघ लोक जीवन में अपनी कहावतों के लिए प्रसिद्ध हैं। घाघ की भांति भड्डरी और डाक लोक कवि हैं किन्तु घाघ के समान उनकी प्रसिद्धि नहीं है। जिस प्रकार ग्राम्य समाज में 'इसुरी' अपनी 'फाग' के लिए, विसराम अपने 'बिरहों' के लिए प्रसिद्ध हैं, उसी प्रकार घाघ अपनी कहावतों के लिए विख्यात हैं। इनकी प्रसिद्धि के कारण ही कालान्तर में दूसरे लोगों द्वारा रचित कहावतों के साथ भी घाघ का नाम जुड़ गया। मध्यकालीन अन्य कवियों की भांति घाघ का जीवनवृत्त भी अज्ञात है। विभिन्न विद्वानों ने उन्हें अपने-अपने क्षेत्र का निवासी सिद्ध करने की चेष्टा की है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में घाघ के सम्बन्ध में सर्वप्रथम 'शिवसिंह सरोज' में उल्लेख मिलता है। इसमें "कान्यकुब्ज अंतर्वेद वाले" कवि के रूप में उनकी चर्चा है।[1] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घाघ का केवल नामोल्लेख किया है।[2] 'हिन्दी शब्द सागर' के अनुसार "घाघ गोंडे के रहने वाले एक बड़े चतुर और अनुभवी व्यक्ति का नाम है जिसकी कही हुई बहुत सी कहावतें उत्तरी भारत में प्रसिद्ध हैं। खेती-बारी, ऋतु-काल तथा लग्न-मुहूर्त आदि के सम्बन्ध में इनकी विलक्षण उक्तियाँ किसान तथा साधारण लोग बहुत कहते हैं।"[3] श्रीयुत पीर मुहम्मद यूनिस ने घाघ की कहावतों की भाषा के आधार पर उन्हें चम्पारन (बिहार) और मुजफ्फरपुर जिले की उत्तरी सीमा पर स्थित औरेयागढ़ अथवा बैरगनिया अथवा कुड़वा चैनपुर के समीप के किसी गाँव में उत्पन्न माना है।[4] राय बहादुर मुकुन्द

1. शिव सिंह सरोज - शिवसिंह 'सेंगर', पृ0 411
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 308
3. हिन्दी शब्द सागर - सं0 डॉ0 श्याम सुन्दर दास, पृ0 884
4. उद्धृत - घाघ और भड्डरी - पं0 राम नरेश त्रिपाठी, पृ0 15

लाल गुप्त 'विशारद' ने 'कृषि रत्नावली' में उन्हें कानपुर जिला अन्तर्गत किसी ग्राम का निवासी ठहराया है।[1] श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह ने घाघ का जन्म छपरा जिले में माना है।[2] पं0 राम नरेश त्रिपाठी ने 'कविता कौमुदी' भाग एक और 'घाघ और भड्डरी' नामक पुस्तक में उन्हें कन्नौज का निवासी माना है।[3] घाघ की अधिकांश कहावतों की भाषा भोजपुरी है। डॉ0 ग्रियर्सन ने भी 'पीजेन्ट लाइफ आफ बिहार' में घाघ की कविताओं का भोजपुरी पाठ प्रस्तुत किया है।[4] इस आधार पर इस धारणा को बल मिलता है कि घाघ का जन्म स्थान बिहार का छपरा था। वहां से ये कन्नौज गये। इस सम्बन्ध में जनश्रुति मिलती है कि घाघ की उनकी पतोहू से अनबन रहती थी। घाघ जो उक्तियाँ कहते थे लोग उन्हें उनकी पतोहू के पास पहुँचा देते थे और वह उसके विपरीत कहावत कहती थी जिसे लोग घाघ के पास लाते थे। कहा जाता है कि अपनी पतोहू से खिन्न होकर वे छपरा छोड़कर कन्नौज चले गये। किन्तु यह मत अधिक विश्वसनीय नहीं प्रतीत होता क्योंकि ऐसी सामान्य बात पर कोई अपना जन्म स्थान छोड़कर अन्यत्र क्यों जायेगा ? कहा जाता है कि कन्नौज में घाघ की ससुराल थी। ऐसा अनुमान है कि घाघ जीविकोपार्जन के लिए छपरा छोड़कर अपनी ससुराल कन्नौज गये होंगे और वहीं बस गये होंगे। रीतिकालीन कवि बिहारी से सम्बन्धित भी ऐसी घटना है। वे अपना जन्म स्थान ग्वालियर (बसुका गोविन्दपुर) छोड़कर अपनी ससुराल मथुरा में रहने लगे थे -

जनमु ग्वालियर जानियै खण्ड बुन्देले बाल।
तरुनाई आई सुथर बसि मथुरा ससुराल।।

जन्म काल

घाघ का जन्मकाल भी निर्विवाद नहीं है। शिवसिंह सेंगर ने उनकी स्थिति सं0 1753 वि0 के उपरान्त माना है।[5] इसी आधार पर मिश्रबन्धुओं ने उनका

1. वही, पृ0 15
2. भोजपुरी के कवि और काव्य - श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह, पृ0 60
3. कविता कौमुदी भाग 1 पृ0 127
4. उद्धृत - घाघ और भड्डरी - पं0 राम नरेश त्रिपाठी, पृ0 15
5. शिवसिंह सरोज - शिवसिंह 'सेंगर', पृ0 411

जन्म सं0 1753 वि0 और कविता काल सं0 1780 वि0 माना है।[1] 'भारतीय चरिताम्बुधि' में इनका जन्म सन् 1696 ई0 बताया जाता है।[2] पं0 रामनरेश त्रिपाठी ने घाघ का जन्म सं0 1753 वि0 माना है।[3] यही मत आज सर्वाधिक मान्य है।

घाघ के नाम के विषय में भी निश्चित रूप से कुछ ज्ञात नहीं है। घाघ उनका मूल नाम था या उपनाम था इसका पता नहीं चलता है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र - बिहार, बंगाल एवं असम प्रदेश में डाक नामक कवि की कृषि सम्बन्धी कहावतें मिलती हैं जिनके आधार पर विद्वानों का अनुमान है कि डाक और घाघ एक ही थे। घाघ की जाति के विषय में भी विद्वानों में मतभेद है। कतिपय विद्वानों ने इन्हें 'ग्वाला' माना है।[4] किन्तु श्री रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी खोज के आधार पर इन्हें ब्राह्मण (देवकली दुबे) माना है। उनके अनुसार घाघ कन्नौज के चौधरी सराय के निवासी थे। कहा जाता है कि घाघ हुमायूँ के दरबार में भी गये थे। हुमायूँ के बाद उनका सम्बन्ध अकबर से भी रहा। अकबर गुणज्ञ था और विभिन्न क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठि विद्वानों का सम्मान करता था। घाघ की प्रतिभा से अकबर भी प्रभावित हुआ था और उपहार स्वरूप उसने उन्हें प्रचुर धनराशि और कन्नौज के पास की भूमि दी थी, जिस पर उन्होंने गाँव बसाया था जिसका नाम रखा 'अकबराबाद सराय घाघ'। सरकारी कागजों में आज भी उस गाँव का नाम 'सराय घाघ' है। यह कन्नौज स्टेशन से लगभग एक मील पश्चिम में है। अकबर ने घाघ को 'चौधरी' की भी उपाधि दी थी। इसीलिए घाघ के कुटुम्बी अभी तक अपने को चौधरी कहते हैं। 'सराय घाघ' का दूसरा नाम 'चौधरी सराय' भी है।[5] घाघ की पत्नी का नाम किसी भी स्रोत से ज्ञात नहीं है किन्तु इनके दो पुत्र-मार्कण्डेय दुबे और धीरधर दुबे हुए। इन दोनों पुत्रों के खानदान में दुबे लोगों के बीस पच्चीस घर अब उसी बस्ती में हैं। मार्कण्डेय के खानदान में बच्चूलाल दुबे, विष्णु स्वरूप दुबे तथा धीरधर दुबे के खानदान में रामचरण दुबे

1. मिश्रबन्धु विनोद - मिश्रबन्धु, पृ0 637
2. उद्धृत - घाघ और भड्डरी - पं0 राम नरेश त्रिपाठी, पृ0 15
3. वही, पृ0 15
4. वही, पृ0 16
5. वही, पृ0 16

और कृष्ण दुबे वर्तमान हैं। ये लोग घाघ की सातवीं-आठवीं पीढ़ी में अपने को बताते हैं। ये लोग कभी दान नहीं लेते हैं। इनका कथन है कि घाघ अपने धार्मिक विश्वासों के बड़े कट्टर थे और इसी कारण उनको अंत में मुगल दरबार से हटना पड़ा था तथा उनकी जमीनदारी का अधिकांश भाग जब्त हो गया था।

प्राचीन महापुरुषों की भांति घाघ के सम्बन्ध में भी अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि घाघ बचपन से ही 'कृषि विषयक' समस्याओं के निदान में दक्ष थे। छोटी उम्र में ही उनकी प्रसिद्धि इतनी बढ़ गयी थी कि दूर-दूर से लोग अपनी खेती सम्बन्धी समस्याओं को लेकर उनका समाधान निकालने के लिए घाघ के पास आया करते थे। किंवदन्ती है कि एक व्यक्ति जिसके पास कृषि कार्य के लिए पर्याप्त भूमि थी किन्तु उसमें उपज इतनी कम होती थी कि उसका परिवार भोजन के लिए दूसरों पर निर्भर रहता था, घाघ की गुणज्ञता को सुनकर वह उनके पास आया। उस समय घाघ हमउम्र के बच्चों के साथ खेल रहे थे। जब उस व्यक्ति ने अपनी समस्या सुनाई तो घाघ सहज ही बोल उठे -

आधा खेत बटैया देके, ऊँची दीह किआरी।
जो तोर लइका भूखे मरिहें, घघवे दीह गारी।।

कहा जाता है कि घाघ के कथनानुसार कार्य करने पर वह किसान धन-धान्य से पूर्ण हो गया।

घाघ के सम्बन्ध में जनश्रुति है कि उनकी अपनी पुत्रवधू से नहीं पटती थी। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि इसी कारण घाघ अपना मूल निवास छपरा छोड़कर कन्नौज चले गये थे। घाघ जो कहावतें कहते थे उनकी पुत्रवधू उसके विपरीत दूसरी कहावत बनाकर कहती थी। पं0 राम नरेश त्रिपाठी ने घाघ और उनकी पुत्रवधू की इस प्रकार की नोंकझोंक से सम्बन्धित कतिपय कहावतें प्रस्तुत की हैं[1] जो इस प्रकार हैं -

घाघ -

मुये चाम से चाम कटावै, भुइँ सँकरी माँ सोवै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा उढ़रि जाइँ पै रोवै।।

---

1. घाघ और भड्डरी, पं0 रामनरेश त्रिपाठी, पृ0 19-20।

पुत्रवधू -

दाम देइ के चाम कटावै, नींद लागि जब सोवै।
काम के मारे उढ़रि गई जब समुझि आइ तब रोवै।।

घाघ -

तरुन तिया होइ अँगने सोवै रन में चढ़ि के छत्री रोवै।
साँझे सतुवा करै बियारी घाघ मरै उनकर महतारी।।

पुत्रवधू -

पतिव्रता होइ अँगने सोवै बिना अन्न के छत्री रोवै।
भूख लागि जब करै बियारी मरै घाघ ही कै महतारी।।

घाघ -

बिन गौने ससुरारी जाय बिना माघ घिउ खींचरि खाय।
बिन वर्षा के पहनै पउवा घाघ कहैं ये तीनों कउवा।।

पुत्रवधू -

काम परे ससुरारी जाय मन चाहे घिउ खींचरि खाय।
करै जोग तो पहिरै पउवा कहै पतोहू घाघै कउवा।।

घाघ और लालबुझक्कड़ की परस्पर लागडाँट सम्बन्धी जनश्रुति भी लोक जीवन में प्रचलित है। कहा जाता है कि घाघ का निवास स्थान गंगा नदी के एक किनारे था और उसके ठीक दूसरी ओर लालबुझक्कड़ का गाँव था। घाघ की प्रसिद्धि से लालबुझक्कड़ कों ईर्ष्या होने लगी थी और वे भी लोगों की विभिन्न समस्याओं का अपने ढंग से निदान करने लगे थे। लालबुझक्कड़ का मूल नाम लाल था लेकिन विभिन्न समस्याओं का अनुमान के आधार पर हल निकालने के कारण लोग उन्हें 'बुझक्कड़' कहने लगे। घाघ और लालबुझक्कड़ की परस्पर प्रतिद्वंद्विता की बात तर्कसंगत नहीं प्रतीत होती है क्योंकि घाघ का सम्बन्ध कहावतों से है जबकि लालबुझक्कड़ का संबंध 'बुझौवल' से है। बुझौवल कहावत की ही भांति लोक प्रचलित काव्य विधा है। लालबुझक्कड़ से सम्बन्धित जो भी बुझौवल लोकजीवन में मिलती हैं वे तर्कहीन और हास्यास्पद हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत हैं- एक बार उनके गाँव वालों को वर्षा के कारण गीली जमीन पर हाथी

के पैरों के निशान दिखाई दिये। वे लोग उनके पास इसके बारे में जानने के लिए पहुँचे लालबुझक्कड़ मुस्कुराते हुए बोले -

लालबुझक्कड़ बूझते और न बूझै कोय।
पैर में चक्की बांध के हरिना कूदा होय।।

घाघ का समय हुमायूँ और अकबर का शासन काल था। पं0 रामनरेश त्रिपाठी का अनुमान है कि अकबर के सिंहासनारूढ़ होने के समय घाघ की उम्र पचास से अधिक रही होगी। अकबर की राज्यारोहण तिथि 1556 ई0 है। इस प्रकार घाघ की मृत्यु इसके बाद ही किसी समय हुई होगी। इनकी मृत्यु के बारे में जनश्रुति है कि घाघ ने ज्योतिष विद्या के आधार पर यह जान लिया था कि उनकी मृत्यु तालाब में नहाते समय होगी। इसीलिए घाघ कभी नदी या सरोवर में स्नान करने नहीं जाते थे। दैवयोग से एक दिन मित्रों के कहने पर उनके साथ तालाब में नहाने गये। वहाँ पानी में डुबकी लगाते समय उनकी चोटी जाठ (तालाब के बीच में गड़ा हुआ लकड़ी का लट्ठा) में फँस गई जिससे उनकी मृत्यु हो गई।[1] मरते समय उन्होंने कहा था -

जानत रहा घाघ निर्बुद्धी।
आवै काल विनासै बुद्धी।।

1. घाघ और भड्डरी - पं0 रामनरेश त्रिपाठी, पृ0 23

भड्डरी का जीवन वृत्त

घाघ की तरह भड्डरी का जीवनवृत्त भी निर्विवाद नहीं है। भड्डरी कौन थे, किस प्रान्त के थे और किस भाषा में उन्होंने कहावतों का सृजन किया, यह आज भी विद्वानों में चर्चा का विषय है। भड्डरी के जन्म के सम्बन्ध में ग्रामीण अंचलों में अनेक किंवदन्तियाँ प्राप्त होती हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि काशी में एक ज्योतिषी रहते थे। एक बार उन्होंने ज्योतिष गणना से यह देखा कि ऐसा शुभ मुहूर्त आने वाला है जिसमें गर्भाधान होने पर बड़ा ही विद्वान और यशस्वी पुत्र पैदा होगा। ऐसा विचार कर ज्योतिषी ने काशी से अपने पैतृक निवास के लिए प्रस्थान किया।

काशी से उनका घर काफी दूर था जिसकी वजह से वे निश्चित अवधि तक अपने घर नहीं पहुँच पाये और उन्हें रास्ते में अहीर के घर रात बितानी पड़ी। अहीर की युवती कन्या उनके लिए भोजन बनाने बैठी तो उनका उदास चेहरा देखकर पूछा कि आप इतने उदास क्यों हैं? ज्योतिषी जी ने कुछ इधर-उधर टालने के बाद सच्चाई से उसे अवगत कराया। उस युवती के मन में इस पुत्र को पाने की इच्छा जागृत हुई। उन दोनों की इच्छा का परिणाम भड्डरी के जन्म के रूप में हुआ। श्री वी0 एन0 मेहता ने अपनी पुस्तक 'युक्त प्रान्त की कृषि सम्बन्धित कहावतें' में इस कथा को थोड़े परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार -"भड्डरी के विषय में ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर की एक बड़ी ही मनोहर कहानी कही जाती हैं। एक समय, जब कि वे तीर्थ-यात्रा में थे, उनको मालूम हुआ कि अमुक दिन का उत्पन्न हुआ बच्चा गणित और फलित ज्योतिष का बहुत बड़ा पण्डित होगा। उन्हें स्वयं ही

ऐसे पुत्र के पिता होने की उत्सुकता हुई और उन्होंने अपने घर उज्जैन के लिए प्रस्थान किया परन्तु उज्जैन इतना दूर था कि वे उस शुभ-दिन तक वहां न पहुँच सके। अतएव रास्ते के एक गाँव में एक गड़रिये की कन्या से विवाह कर लिया। उस स्त्री से उनको एक पुत्र हुआ जो ब्राह्मणों की भाँति शिक्षा न पाने पर भी स्वभावतः बहुत बड़ा ज्योतिषी हुआ। आज सभी नक्षत्र-सम्बन्धी कहावतों के वक्ता भड्डरी या भड्डली कहे जाते हैं।"[1] भड्डरी को वराहमिहिर का पुत्र मानना तर्कसंगत नहीं है क्योंकि वराहमिहिर का समय 'पंचसिद्धान्तिका' के अनुसार शक 427 या सन् 505 ई0 के लगभग है। भड्डरी की कहावतों की भाषा उस युग की नहीं हो सकती, यह निश्चित है।

उक्त कथाओं के परिप्रेक्ष्य में इतना स्पष्ट है कि भड्डरी का जन्म कुलीन जाति में नहीं हुआ था। भड्डरी नाम से भी उनके कुलीन जाति का न होने का संकेत मिलता है। कतिपय विद्वानों ने भड्डरी का सम्बन्ध राजस्थान से जोड़ा है क्योंकि राजस्थानी कहावतों में "डंग कहै हे भड्डली" उल्लेख बार-बार आता है। एक कथा के अनुसार मारवाड़ में भड्डली नामक एक स्त्री थी जो ज्योतिषी थी। उसकी जाति अहीर या गड़रिया नहीं, भंगिन बताई गई है। यह भी कहा जाता है कि मारवाड़ में 'डंक' नाम के ब्राह्मण कवि थे जिन्होंने इस भंगिन कन्या भड्डली से विवाह कर लिया था। इन दोनों की संतान 'डाकोत' कहलाई।

इन जनश्रुतियों के अतिरिक्त भड्डरी के सम्बन्ध में कोई ठोस आधार नहीं प्राप्त होता है, लेकिन इतना अनुमान लगाया जा सकता है कि भड्डरी और भड्डली दो अलग-अलग व्यक्ति एवं नाम हैं क्योंकि दोनों की कहावतों की भाषा में पर्याप्त अन्तर देखने को मिलता है। इसी प्रकार 'डंक' और 'डाक' के एक होने पर भी विचार किया जाये तो दोनों में काफी समानता दृष्टिगत होती है। श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह का अनुमान है कि बिहार के 'डाक' कवि ही राजस्थानी 'डंग' हैं।"[2]

---

1. उद्धृत - घाघ और भड्डरी - पं0 रामनरेश त्रिपाठी, पृ0 25-26
2. भोजपुरी के कवि और काव्य - श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह, पृ0 62

भड्डरी से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि ये काशी के थे या मारवाड़ के? भड्डरी की कहावतें उत्तर प्रदेश और बिहार में अत्यधिक प्रचलित हैं और उनकी कहावतों में भोजपुरी और अवधी के शब्दों की प्रचुरता भी है। यदि इस दृष्टि से देखा जाय तो भड्डरी का काशी के आसपास का होना समीचीन प्रतीत होता है। मारवाड़ के भड्डली निश्चित ही इससे भिन्न प्रतीत होते हैं। वहाँ भड्डली और भड्डलि नामक दो अलग-अलग कवि हुए हैं, जिसमें भड्डलि पुरुष हैं और भड्डली स्त्री। इस प्रकार अवधी क्षेत्र के भड्डरी से उन्हें किसी प्रकार भी सम्बन्धित नहीं माना जा सकता। यह भी सम्भावना है कि भड्डरी की प्रसिद्धि के कारण उनकी अवधी और भोजपुरी कहावतें राजस्थानी भाषा में गढ़ ली गई हों। मारवाड़ में भड्डली की पुस्तक 'भड्डली पुराण' भी प्रसिद्ध है। पं0 रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक 'घाघ और भड्डरी' में इसका उल्लेख किया है। ''घाघ, भड्डरी और डाक को अलग-अलग मानने वालों में प्रसिद्ध विद्वान डॉ0 ग्रियर्सन भी प्रमुख हैं। उन्होंने इन तीनों कवियों को अपनी पुस्तक 'बिहार पीजेंट लाइफ' में अलग-अलग स्थान दिया है।''[1]

घाघ और भड्डरी की कहावतें लोक जीवन में प्रसिद्ध हैं। ग्राम्य अंचल में रोजमर्रा की खेती एवं सामाजिक समस्याओं का निदान व्यक्ति इन्हीं कहावतों के आधार पर कर लेता है। इनकी कहावतें किसानों के लिए गुरुमंत्र हैं। अवधी और भोजपुरी क्षेत्रों में इनका प्रचार-प्रसार कुछ अधिक ही दिखाई पड़ता है। इनकी कहावतों से इस बात का भी अनुमान लगाया जा सकता है कि घाघ और भड्डरी दोनों समकालीन रहे होंगे क्योंकि 'घाघ कहै सुनु भड्डरी' का प्रयोग अनेक कहावतों में देखने को मिलता है। जहाँ घाघ की कहावतों का क्षेत्र खेती विषयक है, वहीं भड्डरी की कहावतों का क्षेत्र वर्षा, नीति और ज्योतिष विषयक। घाघ और भड्डरी की कहावतें आज भी प्रासंगिक हैं। उनमें ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी प्रचुर सामग्री है। आज शस्य विज्ञान,

1. वही, पृ0 61

पादप प्रजनन, पर्यावरण विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान आदि की दृष्टि से इन कहावतों के अध्ययन की आवश्यकता है।

- रमेश प्रताप सिंह

सम्पादकीय

लोक जीवन में गोस्वामी तुलसीदास के बाद सबसे अधिक प्रतिष्ठित कवि घाघ हैं। तुलसी के काव्य की लिखित परंपरा है और घाघ की कहावतों की वाचिक। गाँव की भोलीभाली निरक्षर जनता को जहाँ तुलसीदास की अर्धालियाँ संशयग्रस्त क्षणों में कर्तव्य-पथ पर चलने की प्रेरणा देती हैं वही घाघ की कहावतें उनके कृषक जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान उपस्थित करती हैं। घाघ की तरह भड्डरी भी लोकरुचि के कवि हैं जिनकी कहावतें लोक विश्वासों और लोकाचारों की आधार-शिला हैं।

घाघ की कहावतों का प्रथम संग्रहात्मक रूप डॉ. ग्रियर्सन के 'पीजेंट लाइफ आफ बिहार' में प्राप्त होता है। तदनंतर बी.एन. मेहता आई.सी.एस. ने ''युक्त प्रांत की कृषि संबंधी कहावतें'' और मुकुंदलाल गुप्त 'विशारद' ने 'कृषि रत्नावली' में घाघ की कुछ कहावतें प्रस्तुत की हैं। घाघ-भड्डरी की कहावतों का प्रथम विस्तृत और प्रामाणिक संकलन पं. राम नरेश त्रिपाठी ने किया था जो 'घाघ और भड्डरी' नाम से सन् 1931 में प्रयाग से प्रकाशित हुआ था। इसका अन्तिम संस्करण सन् 1949 में 'हिन्दुस्तानी एकेडमी' प्रयाग से प्रकाशित हुआ था जो सम्प्रति दुष्प्राप्य है। इसके बाद घाघ और भड्डरी की कहावतों के अनेक संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें श्रीदेव नारायण द्विवेदी की 'घाघ भड्डरी (प्रयाग), घाघ-भड्डरी की कहावतें (सावित्री ठाकुर प्रकाशन, वाराणसी), डॉ. अशोक त्रिपाठी की 'घाघ भड्डरी की कहावतें (लखनऊ) आदि विशेष उल्लेखनीय है। इन संग्रहों में घाघ और भड्डरी के नाम पर बहुत सी लोक प्रचलित कहावतें भी समाविष्ट हो गई हैं जिनके मूल में विक्रय भावना अधिक है।

घाघ और भड्डरी की कहावतों के एक प्रामाणिक संग्रह की आवश्यकता को ध्यान में रखकर मैंने घाघ-भड्डरी की कहावतों का संकलन आरम्भ किया था जिसमें लगभग दो सौ कहावतें विभिन्न स्रोतों से एकत्र कर ली थी। इस बीच उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा संचालित 'प्राचीन एवं दुर्लभ ग्रंथों का प्रकाशन' योजना के विषय में मुझे पता चला और मैंने उक्त पाण्डुलिपि को संस्थान में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत किया जिसकी मुझे स्वीकृत मिल गई। उक्त पाण्डुलिपि के अवलोकन के उपरान्त संस्थान के प्रकाशन अधिकारी श्री अनिल मिश्र ने घाघ-भड्डरी की लोक जीवन में प्रचलित सम्पूर्ण कहावतों के एक प्रामाणिक संस्करण पर बल दिया जो इन लोक कवियों की भाषा के मूल रूप के निकट हो। उनकी चिन्ता इस बात को लेकर भी थी कि घाघ-भड्डरी की कहावतों में खड़ी बोली की शब्दावली भी आ गई है। इस दृष्टि से मैंने घाघ-भड्डरी पर प्रामाणित अब तक की समस्त पुस्तकों के अवलोकन के साथ ही 'वृहद हिन्दी लोकोक्ति कोश' (डॉ. भोलानाथ तिवारी), 'भोजपुरी लोकोक्तियाँ, (डॉ. शशिशेखर तिवारी), 'अवधी कहावतें, (डॉ. इन्दु प्रकाश पाण्डेय), 'अवधी वृहद लोकोक्तियाँ, (श्रीमती कमला शुक्ला), 'भोजपुरी के कवि और काव्य, (श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह) आदि ग्रंथों के अतिरिक्त डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ. कुन्दन लाल उप्रेती, डॉ. द्विजराम यादव, आदि के लोक साहित्य से सम्बन्धित विभिन्न ग्रंथों में घाघ और भड्डरी विषयक सामग्री एकत्र की।

घाघ आशुकवि थे। अतः उनकी कहावतों की कोई प्राचीन हस्तलिखित प्रति उपलब्ध नहीं है। स्थान भेद से उनकी कहावतों के विभिन्न प्रचलित रूप देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत संग्रह में घाघ और भड्डरी की कहावतों के विभिन्न प्रचलित रूपों में उन रूपों की प्रस्तुती का प्रयास है जो दोनों कवियों की भाषा के मूल रूप के निकट हों। प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहीत सभी कहावतें घाघ और भड्डरी की ही हैं इसको निश्चयात्मक रूप से कहना कठिन है किन्तु यह अवश्य है कि जिन कहावतों के घाघ-भड्डरी द्वारा रचित होने की सम्भावना अधिक दिखी है उन्हें इस संग्रह में सम्मिलित कर लिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में मुझे हिन्दी साहित्य के अधिकारी विद्वान ओजस्वी वक्ता और उ.प्र. हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. शम्भुनाथ

एवं निदेशक श्री अरुण सिंह का विशेष योगदान रहा है जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। संस्थान के प्रकाशन अधिकारी श्री अनिल मिश्र के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने पुस्तक को उपादेय बनाने के लिए समय-समय पर मुझे मूल्यवान सुझाव दिये। घाघ-भड्डरी की कहावतों के विभिन्न प्रचलित रूपों में मानक रूप के चयन और कहावतों के अर्थ निर्धारण में मुझे गुरुवर प्रो. प्रभाकर शुक्ल एवं अपने विभागाध्यक्ष गुरुवर डॉ. कमलाशंकर त्रिपाठी से जो सहायता मिली है उसके लिए मैं उनका विशेष ऋणी हूँ। श्री जय नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष पूर्व पुलिस महानिदेशक श्रद्धेय श्री वी. एन. मिश्र और कालेज के प्राचार्य डॉ. एस.डी. शर्मा से जो प्रोत्साहन समय-समय पर मिलता रहा है उसके लिए मैं उनके प्रति श्रद्धानत हूँ। प्रस्तुत पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने में मुझे श्रीमती जिज्ञासा सिंह प्राचार्या न्यू पब्लिक एकेडमी लखनऊ, डॉ. सुषमा रस्तोगी प्राचार्या आदर्श बालिका महाविद्यालय, लखनऊ, डॉ. देविका शुक्ला प्रवक्ता हिन्दी विभाग श्री जय नारायण महाविद्यालय लखनऊ एवं श्री दुर्गेश सिंह से विशेष सहायता मिली है जिसके लिए इन सभी को साधुवाद देता हूँ। इसके अतिरिक्त अपने महाविद्यालय के समस्त गुरुजनों एवं मित्रों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्ग दर्शन किया है।

मेरे अथक प्रयास के बाद भी प्रस्तुत पुस्तक में कुछ त्रुटियां शेष होगी जिनके प्रति सुधीजनों से मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

- रमेश प्रताप सिंह

घाघ भड्डरी की कहावतों में
गहरी रुचि रखने वाले
परम पूज्य पिता
स्व. श्री हीरा सिंह
की
पुण्य स्मृति को
सादर

विषय-सूची

		पृष्ठ
	आमुख	i - xii
1.	वर्षा सम्बन्धी कहावतें	1-34
2.	अकाल (सूखा) सम्बन्धी कहावतें	35-50
3.	खेती सम्बन्धी कहावतें	51-60
4.	किसान सम्बन्धी कहावतें	61-64
5.	वायु ज्ञान सम्बन्धी कहावतें	65-66
6.	जुताई सम्बन्धी कहावतें	67-74
7.	बोवाई सम्बन्धी कहावतें	75-88
8.	सिंचाई सम्बन्धी कहावतें	89-90
9.	खाद सम्बन्धी कहावतें	91-92
10.	निराई गुड़ाई सम्बन्धी	93-94
11.	फसल रोग सम्बन्धी कहावतें	95-97
12.	खेत रक्षा सम्बन्धी कहावतें	98
13.	कटाई सम्बन्धी कहावतें	99
14.	मड़ाई सम्बन्धी कहावतें	100
15.	पैदावार सम्बन्धी कहावतें	101-102
16.	पशु सम्बन्धी कहावतें	103-115
17.	नीति सम्बन्धी कहावतें	116-137
18.	ज्योतिष सम्बन्धी कहावतें	138-152
19.	शुभाशुभ सम्बन्धी कहावतें	153-159
20.	स्वास्थ्य सम्बन्धी कहावतें	160-163
	अनुक्रमणिका	164-189
	संदर्भ ग्रंथ	190

वर्षा सम्बन्धी कहावतें

[1]

असनी गलिया अन्त विनासै। गली रेवती जल को नासै।।
भरनी नासै तृनौ सहूतो। कृतिका बरसै अन्त बहूतो।।

शब्दार्थ - असनी- अश्विनी।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि यदि चैत में अश्विनी नक्षत्र में वर्षा हो गई तो चौमासे में सूखा पड़ेगा। यदि रेवती नक्षत्र में वर्षा हुई तो आगे वृष्टि नहीं होगी। भरणी नक्षत्र में यदि पानी बरसा तो तृण का भी नाश हो जायेगा लेकिन यदि कृत्तिका नक्षत्र में पानी बरसा तो अन्त तक वर्षा अच्छी होगी।

[2]

असुनी गर्ल भरनी गली, गलियो जेष्ठा मूर।
पुरबाषाढ़ा धूल कित, उपजै सातो तूर।।

शब्दार्थ - मूर - मूल। तूर - अन्न।

भावार्थ - यदि वर्षा अश्विनी, भरणी एवं मूल नक्षत्र में हो गई और यदि पूर्वाषाढ़ में न भी हुई तो भी फसल अच्छी होगी और सातों प्रकार के अन्न पैदा होंगे, अर्थात् तीनों नक्षत्रों की वर्षा से इतनी आर्द्रता होगी कि पूर्वाषाढ़ में वर्षा न होने पर भी धूल नहीं दिखेगी।

[3]

अगहन में सरवा भर, फिर करवा भर।

शब्दार्थ - सरवा - कुल्हड़, करवा - घड़ा।

भावार्थ - अगहन में यदि फसल को सरवा या सकोरा भर भी पानी मिल जाये तो वह अन्य समय के एक घड़े पानी के बराबर लाभदायक होता है, अर्थात् अगहन का थोड़ा भी पानी फसल के लिए पर्याप्त होता है।

[4]

अद्रा बरसै पुनर्बस जाय।
दीन अन्न कोऊ नहिं खाय।।

भावार्थ - यदि आर्द्रा नक्षत्र में बरसता पानी पुनर्वस तक बरसता रहे तो ऐसे अनाज को यदि कोई मुफ्त में भी दे तो नहीं खाना चाहिए क्योंकि वह अनाज विषैला हो जाता है।

[5]

अगहन दूना पूस सवाई।
फागुन बरसे घर से जाई।।

भावार्थ - यदि अगहन में बारिश होती है तो रबी की फसल को दूना लाभ होता है, पौष मास में पानी बरसता है तो सवाया लाभ होता है और यदि फाल्गुन मास में पानी बरसे तो किसान की फसल नष्ट हो जाती है। उसकी फसल की लागत भी चली जाती है।

[6]

आसाढ़ी पूनो दिना, निर्मल उगै चन्द।
पीव जाव तुम मालवै, अट्ठै है दुख द्वंद।।

भावार्थ - यदि आषाढ़ की पूर्णिमा के दिन आसमान में स्वच्छ (बादल रहित) चंद्रमा निकले, तो हे स्वामी ! तुम मालवा चले जाना क्योंकि यहाँ कठिन दुःख देखना पड़ेगा अर्थात् वर्षा अच्छी नहीं होगी।

[7]

असाढ़ मास आठें अंधियारी।
जो निकले चन्दा जलधारी।।

चन्दा निकले बादल फोर।
साढ़े तीन मास बरखा का जोर।।

भावार्थ - यदि आषाढ़ कृष्ण पक्ष की अष्टमी को चन्द्रमा बादलों के बीच से निकले तो साढ़े-तीन महीने वर्षा अच्छी होगी।

[8]

अगहन द्वादस मेघ अकास,
असाढ़ बरसै अखनाधार।

शब्दार्थ - अखनाधार - मूसलाधार

भावार्थ - यदि अगहन की द्वादशी को आकाश में बादलों के समूह घुमड़ रहे हों तो आषाढ़ में मूसलाधार वर्षा होगी।

[9]

अम्बाझोर बहै पुरवाई।
तौ जानौ बरखा ऋतु आई।।

भावार्थ - यदि ग्रीष्म के अंत में आमों को झकझोर कर गिरा देने वाली पुरवा हवा तेजी से बहे तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु आने वाली है।

[10]

अद्रा गैलै तीनि गैल, सन, साठी औ कपास।
हथिया गैलै सबै गैल, आगिल पाछिल नास।।

भावार्थ - यदि आर्द्रा नक्षत्र चला गया और वर्षा न हुई तो सनई, साठी और कपास इन तीनों में से कोई फसल नहीं होगी। इसी प्रकार यदि हस्त नक्षत्र में वर्षा न हुई तो अगली-पिछली दोनों बोयी फसलें नष्ट हो जायेंगी।

[11]

आदि न बरसे अद्रा, हस्त न बरसे निदान।
कहै घाघ सुनु घाघिनी, भये किसान-पिसान।।

भावार्थ - आर्द्रा नक्षत्र के आरम्भ और हस्त नक्षत्र के अन्त में वर्षा न हुई तो घाघ कवि अपनी स्त्री को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि ऐसी दशा में किसान पिस जाता है अर्थात् बर्बाद हो जाता है।

[12]

आर्द्रा चौथ मघा पंचम।

भावार्थ - आर्द्रा नक्षत्र वर्षा का मुख्य नक्षत्र है। उसमें यदि पानी बरस गया तो आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और श्लेषा ये चारों नक्षत्र बरसेंगे। इसी प्रकार यदि मघा बरस गया तो पाँचो नक्षत्रों-पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा और स्वाती में पानी बरसेगा।

[13]

आसाढ़ मास पूनो दिवस, बादल घेरे चंद।
तो भड्डर जोसी कहै, होवै परमानंद।।

शब्दार्थ - पूनो - पूर्णिमा, जोसी - ज्योतिषी।

भावार्थ - यदि आषाढ़ मास की पूर्णिमा को बादल चन्द्रमा को घेर लें तो भड्डर ज्योतिषी कहते हैं कि वर्षा ऋतु में आनन्द ही आनन्द होगा।

[14]

आसाढ़ी पूनो दिना, बादर भीनो चन्द।
सो भड्डर जोसी कहै सकल नराँ आनन्द।।

शब्दार्थ - भीनो - छिपा हुआ। नरा - आदमी।

भावार्थ - यदि आषाढ़ पूर्णिमा के दिन चंद्रमा बादलों में छिपा हो तो भड्डर ज्योतिषी कहते हैं कि पानी खूब बरसेगा जिससे फसलों को लाभ मिलेगा और लोग आनन्द का अनुभव करेंगे।

[15]

आसाढ़ी पूनो दिना, गाज, बीज बरसंत।
नासै लक्षण काल का, आनन्द माने संत।।

शब्दार्थ - गाज - गर्जन। बीज - बिजली।

भावार्थ - आषाढ़ मास की पूर्णमासी को यदि आकाश में बादल गरजें और बिजली चमके तो वर्षा अधिक होगी और अकाल समाप्त हो जायेगा तथा सज्जन आनन्दित होंगे।

[16]

आगे रवि पाछे चलै, मंगल जो आसाढ़।
तौ बरसै अनमोल ही, पृथी अनंदै बाढ़।।

भावार्थ - भड्डरी का मानना है कि यदि आषाढ़ मास में सूर्य आगे-आगे और मंगल उसके पीछे-पीछे चले तो वर्षा अधिक होगी और पृथ्वी पर आनन्द की वृद्धि होगी।

[17]

आगे मंगल पीछे भान।
बरसा होवै ओस समान।।

भावार्थ - यदि मंगल ग्रह के पीछे सूर्य लगा है तो वर्षा ओस जैसी अर्थात् नगण्य होगी।

[18]

आगे मघा पीछे भान।
बरषा होवै ओस समान।।

भावार्थ - यदि मघा नक्षत्र हो और पीछे सूर्य हो तो वर्षा ओस के बराबर अर्थात् नगण्य होगी।

[19]

उलटा बादर जो चढ़ै, विधवा खड़ी नहाय।
घाघ कहै सुन भड्डरी, वह बरसै वह जाय।।

भावार्थ - यदि बादल हवा की दिशा के विपरीत चढ़ते हुए दिखाई पड़ें और विधवा स्त्री खड़ी होकर स्नान करे तो घाघ कवि कहते हैं कि भड्डरी ! सुनो, वह बादल अवश्य बरसेगा और वह विधवा भी किसी न किसी पुरुष के साथ भाग जायेगी।

[20]

उत्तर चमकै बीजली, पूरब बहै जु बाव।
घाघ कहै सुनु घाघिनी, बरधा भीतर लाव।।

भावार्थ - यदि उत्तर दिशा में बिजली चमकती हो और पुरवा हवा बह रही हो तो घाघ अपनी स्त्री से कहते हैं कि बैलों को घर के अन्दर बाँध लो, वर्षा शीघ्र होने वाली है।

[21]

उतरे जेठ जो बोलै दादुर।
कहै भड्डरी बरसै बादर।।

भावार्थ - यदि जेठ महीने के अन्त में मेढक बोलने लगें तो अनुमान लगा लेना चाहिए कि वर्षा होने वाली है। ऐसा भड्डरी का मानना है।

[22]

उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै।
बरखा होई भूइँ जल बुड़ै।।

भावार्थ - यदि गिरगिट उलटा पेड़ पर चढ़े तो वर्षा इतनी अधिक होगी कि धरती पर जल ही जल दिखेगा।

[23]

एक बूँद जो चैत में परै।
सहस बूँद सावन में हरै।।

भावार्थ - चैत मास में यदि एक बूँद भी जल बरस गया तो वह सावन की हजार बूँदों का हरण कर लेता है।

[24]

एक पानी जो बरसै स्वाती।
कुनबिन पहिरै सोने के पाती।।

भावार्थ - यदि स्वाती नक्षत्र में एक बार वर्षा हो जाये तो निःसन्देह किसान की स्त्री सोने का पत्तर अर्थात् हाथ में पहनने का जहाँगीरी नामक गहने पहनेगी क्योंकि फसल अच्छी होगी।

[25]

एक मास ऋतु आगे धावै।
आधा जेठ असाढ़ कहावै।।

भावार्थ - ऋतु या मौसम एक महीने पहले ही अपना प्रभाव व्यक्त करने लगता है। आधे जेठ को ही आषाढ़ कहा जाता है क्योंकि उस समय तक आसमान में बादल दिखाई पड़ने लगते हैं। अर्थात् वर्षा ऋतु आरम्भ हो जाएगी, इसका पता चल जाता है।

[26]

औआ बौआ चलै बतास।
तब होवे वर्षा के आस।।

भावार्थ - यदि वर्षा ऋतु में हवा कभी इधर, कभी उधर, कभी तेज कभी मन्द अर्थात् अनिश्चित हवा बहे तो वर्षा होने की आशा करनी चाहिए।

[27]

करिया बादर जीउ डरवावै।
भूरा बादर पानी लावै।।

भावार्थ - आसमान में यदि घनघोर काले बादल छाये हैं तो तेज वर्षा का भय उत्पन्न होगा लेकिन पानी बरसने के आसार नहीं होंगे, परन्तु यदि बादल भूरे हैं तो समझो पानी निश्चित रूप से बरसेगा।

[28]

कातिक सुदी एकादसी, बादल बिजुली होय।
तो असाढ़ में भड्डरी, बरखा चोखी होय।।

शब्दार्थ - चोखी-तेज, अधिक।

भावार्थ - यदि कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी को बादलों में बिजली चमके तो भड्डरी के कथनानुसार आषाढ़ में वर्षा अधिक होगी।

[29]

कातिक सुदि पूनो दिवस, जो कृतिका रिख होइ।
तामें बादर बीजुरी, जो संजोग सो होइ।।

चार मास तब बरखा होखी,
भली-भाँति यह भाखे जोसी।।

शब्दार्थ - रिख-नक्षत्र।

भावार्थ - कार्तिक की पूर्णिमा को यदि कृत्तिका नक्षत्र हो और संयोगवश आकाश में बादल हों और उनमें बिजली भी चमक रही हो तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु के चारों महीनों में वर्षा अच्छी होगी। ऐसा ज्योतिषी मानते हैं।

[30]

चैत के पछिवाँ भादौ जला।
भादौ पछिवाँ माघ के पला।।

भावार्थ - यदि चैत के महीने में पछुवा हवा चले तो समझ लो कि भादों महीने में अच्छी वर्षा होगी और यदि भादों के महीने में पश्चिमी वायु बहे तो समझो कि माघ में पाला पड़ने वाला है।

[31]

चढ़त जो बरसै चित्रा, उतरत बरसै हस्त।
कितनौ राजा डाँड़ ले, हारे नाहिं गृहस्त।।

शब्दार्थ - डाँड़-दण्ड, कर।

भावार्थ - यदि चित्रा नक्षत्र के लगने पर और हस्त नक्षत्र के उतरने पर वर्षा होती है तो फसल इतनी अच्छी होती है कि राजा चाहे जितना कर (मालगुजारी) लें, किसान को देने में कष्ट नहीं होता है।

[32]

चित्रा बरसे तीन जायँ,
मोथी मास उखार।

भावार्थ - चित्रा नक्षत्र की वर्षा मोथी (मूँग की तरह का एक अन्न) उड़द और ऊख के लिए नुकसानदायक होती है।

[33]

चमके पच्छिम उत्तर कोर।
तब जान्यो पानी है जोर।।

भावार्थ - जब पश्चिम और उत्तर के कोने पर बिजली चमके तब समझ लेना चाहिए कि वर्षा तेज होने वाली है।

[34]

चैत मास दसमी खड़ा, बादर बिजुरी होय।
तौ जाने चित मांहि यह, गर्भ गलल सब जोय।।

शब्दार्थ - गरभ - गर्भ, गलल - गल गया।

भावार्थ - चैत शुक्ल की दशमी को यदि बादल हों और बिजली चमक रही हो तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा का गर्भ गल गया है अर्थात् चौमासे में वृष्टि बहुत कम होगी।

[35]

चैत मास जो बीजु बिजोवै।
भरि बैसाखहिं टेसू धौवे।।

भावार्थ - चैत महीने में यदि बादलों में बिजली चमके तो समझ लेना चाहिए कि बैसाख महीने में पानी इतना बरसेगा कि टेसू (पलाश के फूल) धुल जायेंगे।

[36]

चैत अमावस मूल को, सरसै चारो बाय।
निश्चय बांधो झोपड़ी, बरखा होय सिवाय।।

शब्दार्थ - सरसै - बहना।

भावार्थ - यदि चैत्र मास की अमावस्या को मूल नक्षत्र पड़े और हवा चौतरफा बहने लगे तो रहने के लिए झोपड़ी छा लेनी चाहिए क्योंकि वर्षा तेज होने की सम्भावना है।

[37]

चन्दा बैठो मातनो, सूरज बैठो कच्छ।
ऐसा बोले भड्डरी, बाँगर लोटे मच्छ।।

शब्दार्थ - मातनो-वर्षा ऋतु में चन्द्रमा के चारों ओर बनने वाला घेरा। कच्छ-सूर्य के चतुर्दिक् बनने वाला घेरा। मच्छ-मछली।

भावार्थ - यदि वर्षा ऋतु में चन्द्रमा और सूर्य के चारों ओर प्रकाश का घेरा हो तो भड्डरी कहते हैं कि इतनी अधिक वर्षा होगी कि बाँगर भूमि में पानी भर जायेगा और इसमें मछलियाँ लोटेंगी।

[38]

चौथ अन्हरिया सावन माहीं, जौ महि पर मेघा बरसाहीं।
लै पैंतालिस दिन घन बरसै, साख सवाई हो मन हरसै।।

शब्दार्थ - महि-पृथ्वी। साख-बढ़न्त।

भावार्थ - यदि श्रावण मास की कृष्ण पक्ष चतुर्थी को पृथ्वी पर बादल बरसते हैं तो पैंतालिस दिनों तक बरसात होगी और प्रफुल्लित करने वाली सवाई फसल पैदा होगी।

[39]

चैत मास दसमी खड़ा, जो कहुँ कोरा जाइ।
चौमासे भर बादला, भली भाँति बरसाइ।।

भावार्थ - चैत मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को यदि आसमान में बादल नहीं हैं तो यह मान लेना चाहिए कि इस वर्ष चौमासे में बरसात अच्छी होगी।

[40]

छिन पुरवैया छिन पछियाँव। छिन छिन बहै बबूला बाव।।
बादर ऊपर बादर धावै। तबै घाघ पानी बरसावै।।

शब्दार्थ - छिन-छिन - क्षण-क्षण। बबूला बाव - बंवडर, भँवर की तरह घूमती हवा

भावार्थ - यदि क्षण में पुरवा एवं क्षण में पछुवा हवा चले, बार-बार बंवडर उठे तथा बादल के ऊपर बादल दौड़ने लगें तो घाघ कहते हैं कि पानी अवश्य बरसेगा।

इसका एक अन्य रूप भी मिलता है -

खन पुरवैया खन पछियाँव। खन खन बहै बबूरा बाव।।
जौ बादर बादर माँ जाय। घाघ कहै जल कहा समाय।।

[41]

जब पुरवा पुरवाई पावै।
झूरी नदिया नाव चलावै।।

भावार्थ - पूर्वा नक्षत्र में यदि पुरवैया हवा चले तो सूखी नदी भी नाव चलाने की स्थिति में पहुँच जाती है अर्थात् वर्षा खूब होती है और नदी में इतना अर्धिक पानी भर जाता है कि उस में नाव चलाई जा सकती है।

[42]

जब बरखा चित्रा में होय।
सगरी खेती जावै खोय।

भावार्थ - यदि चित्रा नक्षत्र में वर्षा होती है तो सम्पूर्ण खेती नष्ट हो जाती है, इसलिए कहा जाता है कि चित्रा नक्षत्र की वर्षा ठीक नहीं होती।

[43]

जब बहै हड़हवा कोन।
तब बनजारा लादै नोन।

शब्दार्थ - हड़हवा-नैऋत्य कोण (पश्चिम दक्षिण कोण)।

भावार्थ - यदि पश्चिम दक्षिण के कोने की हवा बहे तो बनजारों को नमक लादने से नहीं डरना चाहिए क्योंकि पानी बरसने के आसार नहीं हैं और नमक गलने का भय नहीं रहेगा।

[44]

जेठ मास जो तपै निरासा।
तो जानौ बरखा की आसा।।

भावार्थ - यदि ज्येष्ठ मास में गर्मी खूब पड़े तो वर्षा निश्चित होगी।

[45]

जेठ उँजारे पच्छ में, आद्रादिक दस रिच्छ।
सजल होय निरजल कह्यो, निरजल सजल प्रतच्छ।।

भावार्थ - ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में यदि आर्द्रा आदि नक्षत्र में वर्षा हो जाये तो चौमासे में सूखा पड़ेगा किन्तु यदि वर्षा न हुई तो चौमासे में पानी बरसेगा।

[46]

जै दिन भादौं बहैं पछार।
तै दिन पूस में पड़ै तुसार।

भावार्थ - भाद्र मास में जितने दिन पछिवाँ बहेगी पौष मास में उतने दिन पाला पड़ेगा।

[47]

जब बरसेगा उत्तरा।
नाज न खावै कुत्तरा।।

भावार्थ - यदि उत्तरा नक्षत्र में वर्षा हो गई तो पैदावार इतनी अधिक होगी कि कुत्ते भी अनाज से ऊब जायेंगे।

[48]

जो कहुँ मग्घा बरसै जल।
सब नाजों में होगा फल।

भावार्थ - यदि मघा नक्षत्र में वर्षा हुई तो समझो सभी अनाजों में दाने लग जायेंगे।

[49]

जो बदरी बादर मां खमसै
कहै भड्डरी पानी बरसै।

भावार्थ - भड्डरी का मानना है कि जब बादल दूसरे बादल में मिल जायें तो अधिक वर्षा होने के आसार होते हैं।

[50]

जो न बरसे पुनर्वसु स्वाती।
चरखा चले न बोले ताँती।

भावार्थ - यदि पुनर्वसु और स्वाति नक्षत्र में वर्षा नहीं हुई तो न चरखा चल पायेगा और न ही ताँत बजेगी अर्थात् रुई धुनी नहीं जाएगी क्योंकि कपास की फसल नष्ट हो जायेगी।

[51]

जो कहुं हवा अकासे जाय, परै न बूंद काल परि जाय।
दक्खिने पच्छिम आधे समयो, भड्डर जोसी ऐसो मनयो।।

भावार्थ - यदि आषाढ़-सावन में हवा ऊपर (आकाश) की ओर उठे तो यह समझना चाहिए की पानी नहीं बरसेगा और अकाल पड़ जाएगा। भड्डर ज्योतिषी कहते हैं कि ऐसी स्थिति में दक्षिण-पश्चिम की दिशा में थोड़ी फसल पैदा होने की आशा है।

[52]

जो रोहिनि बरसा करै, बचै जेठ नित मूर।
एक बूँद कृतिका पड़ै, नासै तीनों तूर।।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि रोहिणी नक्षत्र में वर्षा हो तो जेठ मास में न होने से कोई लाभ-हानि नहीं है, लेकिन यदि कृत्तिका नक्षत्र में एक बूँद भी पानी बरस गया तो तीनों फसलें नष्ट हो जायेंगी।

[53]

ढेला ऊपर चील जो बोलै,
गली-गली में पानी डोलै।

शब्दार्थ - ढेला-मिटट्री का टुकड़ा। चील-एक पक्षी।

भावार्थ - यदि ढेले के ऊपर बैठकर चील बोले तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा इतनी अधिक होगी कि गली-गली में पानी भर जायेगा।

[54]

तीतिर बरनीं बादरी, रहै गगन पर छाय।
कहै घाघ सुनु भड्डरी, बिन बरसे ना जाय।।

भावार्थ - यदि तीतर पक्षी के रंग के अर्थात् भूरे बादल आकाश में छायें तो घाघ कहते हैं कि हे भड्डरी ! बिना बरसे वे नहीं जायेंगे।

[55]

तीतर बरनी बादरी, बिधवा काजर रेख।
वह बरसै वह घर करे, कहै भडड्री देख।

भावार्थ - भड्डरी कहते हैं कि यदि आकाश में तीतर के रंग की अर्थात् भूरी बदरी उठे और विधवा आँखो में काजल लगाये तो समझो कि बादल बिना बरसे नहीं जायेगा और स्त्री दूसरे पुरुष के साथ घर कर लेगी।

[56]

तपै मृगसिरा जोय, तो बरखा पूरन होय।

भावार्थ - यदि मृगशिरा नक्षत्र में गर्मी खूब पड़े तो समझो उस वर्ष वर्षा अच्छी होगी।

[57]

तपा जेठ में जो चुइ जाय,
सभी नखत हलके परि जायँ।

शब्दार्थ - चुइ-टपक जाय। हलके - मंद/धीमा।

भावार्थ - ज्येष्ठ की मृगशिरा के अन्तिम दस दिनों को दसतपा कहते हैं। इस दसतपे में यदि वर्षा की एक भी बूँद गिर गई तो समझो कि वर्षा के सभी नक्षत्रों में पानी हलका बरसेगा।

[58]

दिन में गरमी रात में ओस
कहैं घाघ बरखा सौ कोस।

भावार्थ - यदि दिन में गर्मी और रात्रि में ओस गिरे तो समझना चाहिए कि वर्षा होने में समय बहुत लगेगा।

[59]

दूर गुड्डुसा दूर पानी।
नीयर गुड्डुसा नीयर पानी।

भावार्थ - जब गंदे कीचड़ में रहने वाला गुड्डुसा (रेंवा) नामक कीड़ा कीचड़ से निकल कर दूर बोले तो वर्षा होने में देरी है। यदि वह कीड़ा कीचड़ के अंदर या ऊपर से बोले तो समझो वर्षा होने वाली है।

[60]

दिन को बद्दर रात निबद्दर, बह पुरवैया झब्बर झब्बर।
घाघ कहैं कछु होनी होई, कुआँ के पानी धोबी धोई।

भावार्थ - यदि दिन में बादल हों और रात में आकाश साफ हो और धीरे-धीरे पुरवा हवा बह रही हो तो वर्षा इतनी कम होगी कि धोबी को कपड़े धोने के लिए भी कुएं से पानी निकालना पड़ेगा।

[61]

धनि वह राजा धनि वह देस, जहवाँ बरसै अगहन सेस।
पूस में दूना माघ सवाई, फागुन बरसै घरौ से जाई।।

भावार्थ - वह राजा और वह देश धन्य है जहाँ अगहन रहते पानी बरसे और यदि पौष महीने में वर्षा हो तो कहना ही क्या। इस बरसात से अनाज दूना पैदा होगा और माघ में वर्षा हो तो सवाया होगा लेकिन यदि यही वर्षा फागुन में हुई तो घर का अनाज भी चला जायेगा।

[62]

धनुष पड़ै बंगाली। मेह साँझ या संकाली।

शब्दार्थ - बंगाली-पूर्व दिशा, संकाली-सुबह।

भावार्थ - यदि प्रातःकाल पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई पड़े तो प्रातःकाल या सायंकाल वर्षा निश्चित होगी।

[63]

धुर आसाढ़ी बिज्जु की, चमक निरन्तर होय।
सोमाँ सुकराँ सुरगुराँ, तो भारी जल होय।।

शब्दार्थ - सुकराँ-शुक्र।

भावार्थ - यदि आषाढ़ कृष्ण पक्ष में सोमवार, शुक्रवार और वृहस्पतिवार को थोड़ी-थोड़ी देर में लगातार बिजली चमके तो वर्षा अधिक होगी।

[64]

नौमी माह अँधेरिया, मूल रिच्छ को भेद।
तौ भादौं नौमी दिवस, जल बरसै बिन खेद।।

शब्दार्थ - रिच्छ - नक्षत्र।

भावार्थ - यदि माघ कृष्ण नवमी को मूल नक्षत्र हो तो भाद्र कृष्ण नवमी को वर्षा अवश्य होगी।

[65]

पूरब के बादर पश्चिम जायँ, पतली पकावै मोटी खाय।
पछुवाँ बादर पुरुब को जाय, मोटी पकावै पतरी खाय।।

शब्दार्थ - पतरी-पतली।

भावार्थ - यदि पूरब से उठे बादल पश्चिम की ओर जाएँ तो समझो वर्षा होने वाली है तब पतली रोटी के स्थान पर मोटी रोटी पका कर खाओ। यदि बादल पश्चिम से पूरब की ओर जाएँ तो वर्षा की सम्भावना नहीं है और मोटी रोटी पकाने के स्थान पर आराम से पतली रोटी पका कर खाओ।

[66]

पुरबा में पछुँवा बहै। हँसि के नारि पुरुष से कहै।
ऊ बरसे ई करै भतार। घाघ कहै यह सगुन बिचार।।

भावार्थ - यदि पुरवा नक्षत्र में पछुवा बहे और कोई स्त्री परपुरुष से हँस-हँसकर बात करे तो सगुन विचार कर घाघ कवि कहते हैं कि पानी अवश्य बरसेगा और वह स्त्री उस पुरुष से अनुचित सम्बन्ध बनायेगी।

[67]

पौष अमावस मूल को, सरसै चारों बाय।
निश्चय बांधो झोपड़ी, बरखा होय सिवाय।

शब्दार्थ - सरसै-हवा का चारों ओर बहना। सिवाय - अधिक।

भावार्थ - यदि पौष मास की अमावस्या को मूल नक्षत्र पड़े और हवा चौतरफा डोलने लगे तो रहने के लिए झोपड़ी छा लेनी चाहिए क्योंकि वर्षा तेज होने की आशा है।

[68]

पछिवाँ के बादर, लबार के आदर।

भावार्थ - पश्चिम दिशा से उठा बादल उसी प्रकार कभी बरसता नहीं है जिस प्रकार लबार (झूठा) व्यक्ति का चाहे जितना आदर किया जाए वह कभी सच नहीं बोलता।

[69]

पूनो परिवा गाजे। तो दिना बहत्तर नाजे।

भावार्थ - जब आषाढ़ की पूर्णिमा और प्रतिपदा (परिवा) के दिन बादल में गड़गड़ाहट के साथ बिजली चमके तो समझो बहत्तर दिन वर्षा होगी।

[70]

पानी बरसे आधे पूस।
आधा गेहूँ आधा भूस।।

भावार्थ - पौष महीने के मध्य में यदि वर्षा होती है तो गेहूँ की फसल में आधा अन्न और आधा भूसा होगा अर्थात् इस समय की वर्षा गेहूँ की फसल के लिए अच्छी होगी।

[71]

पूरब धनुही पच्छिम भान।
घाघ कहै बरखा नियरान।।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि यदि सूर्यास्त के समय पूर्व दिशा में आकाश में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो जल्दी ही वर्षा होने वाली है।

[72]

पूस मास दसमी अँधियारी, बदली घोर होय कजरारी।
सावन बदि दसमी के दिवसे, भरे मेघ चारों दिसि बरसे।।

शब्दार्थ - बदि - बदी। कृष्ण पक्ष।

भावार्थ - यदि पौष मास के कृष्णपक्ष की दशमी को आकाश में काली घटायें छाई हों तो निश्चय ही श्रावण कृष्ण दशमी को चारों ओर वर्षा होगी।

[73]

पूस उजेली सत्तमी, अष्टमी नौमी गाज।
मेघ होय तो जान लो, अब सुभ होवै काज।।

भावार्थ - पौष मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी, अष्टमी और नवमी को यदि बादल गरजे और बिजली चमके तो सभी कार्य सिद्ध होंगे अर्थात् सुकाल होगा।

[74]

पहिला पवन पुरुब से आवे।
बरसे मेघ अन्न झरि लावे।

भावार्थ - आषाढ़ माह में यदि पहली हवा पूरब से बहे तो वर्षा अधिक होगी और फसल की पैदावार भी अच्छी होगी।

[75]

पौष अँध्यारी सत्तमी, बिन जल बादर जोय।
सावन सुदि पूनो दिवस, बरखा अवसिहैं होय।।

शब्दार्थ - सुदि - शुक्ल पक्ष।

भावार्थ - पौष कृष्ण सप्तमी को यदि जलविहीन बादल हों और वर्षा न हो तो सावन की पूर्णिमा को पानी निश्चित रूप से बरसेगा।

[76]

पवन थम्यो तीतिर लवै, गुरुहिं सु देवे नेह।
कहे भड्डरी ज्योतिषी,ता दिन बरसे मेह।।

भावार्थ - जब वायु चलते-चलते रुक जाय, तीतर जोड़े से सहयोग करे तथा वृहस्पति को पुष्य नक्षत्र हो तो समझ लो वर्षा का योग है।

[77]

पूरब के बादर पश्छिम जायँ, वासे वृष्टि अधिक बरसाय।
जो पश्चिम से पूरब जाय, वर्षा बहुत न्यून हो जाय।।

भावार्थ - यदि पूरब के बादल पश्चिम जा रहे हों तो वर्षा अधिक होगी और यदि पश्चिम के बादल पूरब की ओर जा रहे हों तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा बहुत कम होगी।

[78]

पौष अँध्यारी तेरसै, चहुँदिसि बादर होय।
सावन पूनों मावसै, जलधर अतिहीं जोय।।

शब्दार्थ - मावसै - अमावस्या

भावार्थ - पौष कृष्ण पक्ष की तेरस को यदि आसमान में चारों तरफ बादल छाये हों तो सावन की पूर्णिमा और अमावस्या को वर्षा अधिक होगी।

[79]

पूरब के घन पश्चिम चलै। राँड़ बतकही हँसि हँसि करै।।
ऊ बरसै ऊ करै भतार। भड्डर के मन यही विचार।।

भावार्थ - यदि पूर्व दिशा के बादलं पश्चिम की ओर जा रहे हों और विधवा स्त्री पर-पुरुष से हँस-हँस कर बात कर रही हो तो भड्डरी का मानना है कि बादल बिना बरसे नहीं जायेगा और विधवा स्त्री दूसरा पति कर लेगी।

[80]

फागुन बदी सुदूज दिन, बादर होय न बीज।
बरसै सावन भादवा, साधौ खेलो तीज।।

शब्दार्थ - साधौ-सुहागिन स्त्री। बीज-बिजली।

भावार्थ - फागुन कृष्ण पक्ष की द्वितीया को यदि आकाश में बादल और बिजली न हो तो समझो सावन और भादों दोनों ही महीने में वर्षा होगी। इसलिए हे सुहागिनो! उल्लास के साथ तीज का त्योहार मनाओ।

[81]

बायू में जब वायु समाय।
कहैं घाघ जल कहाँ समाय।।

भावार्थ - यदि एक ही साथ आमने-सामने की दो दिशाओं की हवा चले तो घाघ कहते है कि वर्षा इतनी अधिक होगी कि पृथ्वी पर जल-ही जल दिखेगा।

[82]

बादर ऊपर बादर धावै,
कह भड्डर जल आतुर आवै।।

शब्दार्थ - आतुर-जल्दी।

भावार्थ - यदि बादल के ऊपर बादल दौड़ने लगें तो भड्डरी का मानना है कि वर्षा जल्द ही होगी।

[83]

बोले मोर महातुरी, खाटी होय जु छाछ।
मेंह मही पर परन को, जानौ काछे काछ।।

शब्दार्थ - महातुरी-बहुत आतुर होकर (जल्दी-जल्दी)। खाटी-खट्टा। काछ-कछनी।

भावार्थ - यदि मोर जल्दी-जल्दी बोले और मट्ठा खट्टा हो जाये, तो समझो कि बादल कछनी काछकर पृथ्वी पर आने के लिए लालायित हैं। अतः अनुमान लगा लेना चाहिए कि वर्षा जल्दी ही होने वाली है।

[84]

बाउ चलेगी उत्तरा, माँड़ पियेंगे कुत्तरा।
वायु चलेगी पुरवा, पियो माँड़ का कुरवा।।

शब्दार्थ - कुरवा - घड़ा।

भावार्थ - यदि उत्तर दिशा की हवा चले तो समझ लेना चाहिए कि इस बार कुत्ते भी माड़ (चावल का पानी) पियेंगे अर्थात् वर्षा अच्छी होगी और धान की फसल भी अच्छी होगी। जब पुरवा हवा बहे तो समझ लेना चाहिए कि इस बार धान की फसल अच्छी होगी और व्यक्ति कुरवा से माड़ पियेगा।

[85]

मार्ग बदी आठें घन दरसै।
सो मग्घा भरि सावन बरसै।।

शब्दार्थ - मार्ग - मार्गशीर्ष, अगहन।

भावार्थ - अगहन कृष्ण पक्ष की अष्टमी को यदि आकाश में बादल हों तो सावन भर वर्षा अच्छी होगी।

[86]

माघ में बादर लाल घिरै।
तब जान्यो साँचो पथरा परै।।

भावार्थ - यदि माघ के महीने में लाल रंग के बादल दिखाई पड़ें तो ओले अवश्य गिरेंगे। तात्पर्य यह है कि यदि माघ के महीने में आसमान लाल रंग का दिखाई दे तो ओले गिरने के लक्षण हैं।

[87]

माघ पूस जो दखिना चलै।
तौ सावन के लच्छन भले।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि यदि माघ और पूस के महीने में दक्खिनी हवा चले तो सावन में बरसात अच्छी होगी।

[88]

मघा के बरसे माता के परसे।
भूखा न माँगे फिर कुछ हर से।।

भावार्थ - वर्षा के सारे नक्षत्रों में मघा नक्षत्र की वर्षा फसलों के लिए सबसे अधिक लाभदायक होती है जैसे माता द्वारा परोसे गये भोजन से पुत्र को तृप्ति हो जाती है, उसी प्रकार मघा के बरसने से फसलों को तृप्ति मिलती है। इसके बाद भूखे व्यक्ति को ईश्वर से कुछ माँगने की आवश्यकता नहीं होती है।

[89]

माघ अंधेरी सत्तमी, मेघ बिज्जु दमकंत।
मास चार बरसै सही, मत सोचै तू कंत।।

भावार्थ - यदि माघ कृष्ण सप्तमी को बादलों में बिजली चमक रही हो तो हे स्वामी ! तुम चिन्ता मत करो, चौमासा अर्थात् वर्षा के चारों महीने पानी बरसेगा।

[90]

माघ अमावस गर्भमय, जो केहु भाँति विचार।
भादौ की पून्यो दिवस, बरखा पहर जु चारि।।

भावार्थ - माघ की अमावस्या को बादलों के रहते हुए भी वर्षा न हो तो भादों की पूर्णिमा को चार पहर पानी बरसेगा।

[91]

माघ उज्यारी दूज दिन, बादर बिज्जु समोय।
तो भाखैं यों भड्डरी, अन्न जु महँगों होय।

शब्दार्थ - समोय - मिलना।

भावार्थ - भडड्री का कहना है कि यदि माघ शुक्ल द्वितीया को आकाश में बादल हों और बिजली चमकती हो तो निश्चय ही अनाज महँगा होगा अर्थात् अच्छी फसल नहीं होगी जिससे अनाज महँगा होगा।

[92]

माघ सत्तमी ऊजली, बादर मेघ करंत।
तो असाढ़ में भड्डरी, घनो मेघ बरसंत।।

भावार्थ - यदि माघ शुक्ल सप्तमी को बादल हों तो आषाढ़ में घनघोर वर्षा होगी, ऐसा भडड्री का मानना है।

[93]

माघ सुदी जो सत्तमी, बिज्जु मेह हिम होय।
चार महीना बरसती, सोक करौ मति कोय।।

शब्दार्थ - हिम - जाड़ा।

भावार्थ - यदि माघ महीने के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को बिजली चमके और वर्षा हो तथा सर्दी भी लगे तो समझ लेना चाहिए कि इस बार चौमासे (वर्षा के चार महीने) में पानी खूब बरसेगा और चिन्ता की कोई बात नहीं है, फसल भी अच्छी होगी।

[94]

माघ जो सातैं कज्जली, आठैं बादर होय।
तो असाढ़ में पूरवा, बरसे जोसी जोइ।

शब्दार्थ - कज्जली-कृष्ण पक्ष।

भावार्थ - यदि माघ कृष्ण सप्तमी एवं अष्टमी को बादल हों तो आषाढ़ में वर्षा अवश्य होगी, ऐसा ज्योतिषी कहते हैं।

[95]

माघ सुदी आठैं दिवस, जो कृतिका रिस होय।
की फागुन पाथर पड़ै, की सावन महँगो होय।

शब्दार्थ - रिस - नक्षत्र।

भावार्थ - यदि माघ शुक्ल अष्टमी को कृत्तिका नक्षत्र पड़े तो या तो फागुन में ओले पड़ेंगे अथवा सावन में अनाज महँगा होगा।

[96]

मग्घा लगावे घग्घा, सिवाती लावसु टाटी।
कहत बाड़ी हाथी रानी, हमहूँ आवत बाटी।।

भावार्थ - यदि मघा नक्षत्र में मेघ घहरे और स्वाती में बरसे, तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा हस्त नक्षत्र में भी अच्छी होगी।

[97]

रात दिना घमछाहीं।
घाघ कहैं बरखा अब नाहीं।।

भावार्थ - यदि रात में आकाश साफ रहे और दिन में धूप छाँह होती रहे तो घाघ का कहना है कि अब वर्षा नहीं होगी।

[98]

रोहिनि जो बरसै नहीं, बरसै जेठ नित मूर।
एक बूँद स्वाती पड़ै, लागै तीनों तूर।।

शब्दार्थ - तूर-अन्न। जेठ-ज्येष्ठा। मूर-मूल।

भावार्थ - यदि रोहिणी नक्षत्र में वर्षा न हो, पर ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र में पानी बरस जाय तथा यदि स्वाति नक्षत्र में एक बूँद भी पानी पड़ जाये तो तीनों फसलें अच्छी हो जाती हैं।

[99]

रात निबद्दर दिन को घटा,
घाघ कहैं ये बरखा हटा।

भावार्थ - यदि रात में आकाश स्वच्छं हो और दिन में बादल छाये हों तो घाघ का कहना है कि वर्षा नहीं होगी।

[100]

रोहिनि बरसे मृग तपे, कुछ दिन आद्रा जाय।
कहे घाघ सुनु घाघिनी, स्वान भात नहिं खाय।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि हे घाघिन! यदि रोहिणी नक्षत्र में पानी बरसे और मृगशिरा तपे और आर्द्रा के भी कुछ दिन बीत जाने पर वर्षा हो तो पैदावार इतनी अच्छी होगी कि कुत्ते भी भात खाते-खाते ऊब जाएँगे और भात नहीं खाएंगे।

[101]

लाल पियर जब होय अकास।
तौ नाहीं बरखा कै आस।।

भावार्थ - यदि आकाश लाल-पीला होने लगे तो वर्षा की आशा छोड़ देनी चाहिए।

[102]

वायु चलेगी दखिना।
माँड़ कहाँ से चखिना।

भावार्थ - जब दक्खिनी हवा चलेगी तो मांड़ चखने को नहीं मिलेगा अर्थात् धान की फसल अच्छी नहीं होगी।

[103]

सावन केरे प्रथम दिन, उवत न दीखै भान।
चार महीना बरसै पानी, याको है परमान।।

भावार्थ - यदि सावन के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को आसमान में बादल छाये रहें और प्रातःकाल सूर्य के दर्शन न हों तो निश्चय ही चार महीने तक जोरदार वर्षा होगी।.

[104]

सावन पहली पंचमी, गरभे ऊदे भान।
बरखा होगी अति घनी, ऊँचो जानो धान।।

भावार्थ - सावन कृष्ण पंचमी को यदि सूर्य बादलों के बीच से उदित हो तो वर्षा बहुत होगी और धान की फसल भी अच्छी होगी।

[105]

साँझे धनुष सकारे मोरा।
ये दोनों पानी के बौरा।।

भावार्थ - यदि सायंकाल आकाश में इन्द्र धनुष दिखायी पड़े और प्रातःकाल मोर की केका सुनाई दे तो वर्षा अच्छी होगी।

[106]

सब दिन बरसै दखिना बाय।
कभी न बरसै बरखा पाय।

भावार्थ - दक्खिनी हवा चलने पर सदैव पानी बरसता है किन्तु वर्षा के मौसम में दक्षिणी हवा चलने पर कभी भी पानी नहीं बरसेगा।

[107]

सिंह गरजै, हथिया लरजै।

शब्दार्थ - लरजै-काँपना।

भावार्थ - यदि सिंह राशि के सूर्य में (मघा नक्षत्र में) आकाश में बादल गरजें तो हस्त नक्षत्र में बरसने वाले बादलों को भी कँपकपी आती है, अर्थात् इस नक्षत्र में वर्षा कम होती है।

[108]

सावन पछुवाँ दिन दुइ चार।
चूल्ही के पाछा उपजै सार।।

भावार्थ - सावन में दो चार दिन भी पछुवा हवा बहेगी तो समझो पानी अच्छा बरसेगा और चूल्हे के पीछे की धरती भी अन्न उपजायेगी।

[109]

सावन पछुवा भादों भरे।
भादों पूरबा पत्थर पड़े।।

भावार्थ - यदि सावन माह में पछुवा चले तो भादों में वर्षा खूब होगी लेकिन यदि भादों में पुरवा चले तो पत्थर (ओले) पड़ेंगे।

[110]

सांझै धनुष बिहानै पानी।
कहै घाघ सुन पण्डित ज्ञानी।।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि हे पंडित ज्ञानियो ! सुनो, यदि संध्या समय में आकाश में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो दूसरे दिन वर्षा अवश्य होगी।

[111]

सुदी असाढ़ की पंचमी, गरज धमधमो होय।
तो यो जानो भड्डरी, मधुरी मेघा जोय।।

भावार्थ - आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पचंमी को यदि आसमान में बादल छाये हों और घोर गर्जना कर रहे हों, तो भड्डरी कहते हैं कि वर्षा अच्छी होने वाली है।

[112]

सावन पहिले पाख में, दसमी रोहिणि होइ।
महँग नाज अरु अल्प जल, बिरला विलसे कोइ।।

भावार्थ - सावन के प्रथम पक्ष यानी कृष्ण पक्ष की दशमी को यदि रोहिणी नक्षत्र हो तो समझ लेना चाहिए कि अन्न महँगा होगा और वर्षा कम होगी जिसके कारण शायद ही कोई सुखी होगा।

[113]

सुदि असाढ़ नौमी दिना, बाहर झीनो चंद।
जानै भड्डर भूमि पर, मानो होय अनन्द।।

भावार्थ - यदि आषाढ़ शुक्ल पक्ष की नवमी को बादलों के बीच में झीना, धुंधला चन्द्रमा दिखायी दे तो समझ लेना चाहिए कि पृथ्वी पर प्रसन्नता ही प्रसन्नता होगी अर्थात् अच्छी वर्षा होगी और अनाज खूब पैदा होगा।

[114]

सावन सुक्ला सत्तमी, छिपके ऊगहि भान।
तौं लौं मेघा बरसिहें, जौं लौं देव उठान।

भावार्थ - यदि सावन महीने के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को सूर्योदय बादलों के बीच में हो तो बादल कार्तिक माह की देवोत्थानी एकादशी तक पानी बरसाएँगे।

[115]

सावन सुक्ला सत्तमी, बादर बिजुरी होय।
करि खेती पिय भवन में, निश्चित रहिए सोय।।

भावार्थ - यदि सावन शुक्ल सप्तमी को बादल में बिजली चमक रही हो तो पत्नी अपने पति से कहती है कि हे प्रियतम! खेती करके (बीज डाल करके) आराम से घर में सो जाओ क्योंकि इस वर्ष खेती बहुत अच्छी होगी।

[116]

सुक्रवार की बादरी, रही सनीचर छाय।
ऐसा बोलैं भड्डरी, बिन बरसे नहिं जाय।।

भावार्थ - शुक्रवार के दिन आसमान में छाये बादल शनिवार तक रहें तो वर्षा निश्चित रूप से होगी, ऐसा भड्डरी का कहना है।

[117]

सावन ऊखमा भादों जाड़।
बरसा मारे ठाड़ कछाड़।।

शब्दार्थ - ऊखम-उष्मा या गर्मी, कछाड़-कछनी (साड़ी या धोती को घुटने तक मोड़ना)

भावार्थ - श्रावण मास में यदि गर्मी पड़े और भादों में ठंड तो निश्चित ही वर्षा इतनी अधिक होगी कि धोती का कछाड़ (कछनी) मार कर चलना पड़ेगा।

[118]

सावन पहली चौथ में, जो मेघा बरसाय।
तो भाखैं यों भड्डरी, साख सवाई जाय।।

भावार्थ - यदि श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चौथ को वर्षा हो तो फसल की पैदावार सवाई होगी, ऐसा भड्डरी का कहना है।

[119]

हथिया बरसे चित्रा मँडराय।
घर बैठे किसान रिरियाय।।

शब्दार्थ - रिरियाय-दीन वाणी बोलना।

भावार्थ - यदि हस्त नक्षत्र में वर्षा हो और चित्रा में केवल बादल मंडराते रहें और वर्षा न हो तो किसान दीन-हीन होकर घर में असहाय बैठा रहेगा क्योंकि वर्षा कम होगी जिससे अन्न की उपज बहुत कम होगी।

[120]

हथिया पूँछ डोलावै,
घर बैठे गोहूँ आवै।।

भावार्थ - यदि हस्त नक्षत्र में थोड़ी भी वर्षा हो जाये तो बिना अधिक परिश्रम किये ही किसान के घर में गेहूँ भर जायेगा।

[121]

हस्त बरसे तीन होय, साठी सक्कर मास।
हस्त बरसे तीन जाय, तिल कोदो औ कपास।।

भावार्थ - हस्त नक्षत्र की वर्षा से धान, ईख और उड़द इन तीनों की पैदावार बढ़ जाती है, लेकिन इसी नक्षत्र की वर्षा से कोदो, कपास और तिल तीनों की फसल नष्ट हो जाती है।

अकाल (सूखा) सम्बम्धी कहावतें

[122]

आद्रा तौ बरसै नहीं, मृगसिर पौन न जोय।
तौ जानौ यो भड्डरी, बरखा बूँद न होय।।

भावार्थ - भड्डरी का मानना है कि यदि आर्द्रा नक्षत्र में पानी न बरसा और मृगशिरा नक्षत्र में हवा न चली तो वर्षा नहीं होगी, जिससे फसल पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

[123]

आद्रा भरणी रोहिणी, मघा उत्तरा तीन।
इन मंगल आँधी चलै, तबलौं बरखा छीन।

भावार्थ - मंगल के दिन आर्द्रा, भरणी, रोहिणी, मघा और तीनो उत्तरा नक्षत्रों में आंधी चले तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा बहुत कम होगी जिससे फसल को नुकसान होगा।

[124]

आगे मंगल पीठ रवि, जो असाढ़ के मास।
चौपट नासै चहुँ दिसा, बिरलै जीवन आस।

भावार्थ - यदि आषाढ़ मास में मंगल आगे और सूर्य पीछे रहे तो वर्षा नहीं होगी, चारों ओर विनाश-लीला होगी और धरती पर त्राहि-त्राहि मच जायेगी।

[125]

आगे मघा पीछे भान।
पानी पानी रटै किसान।।

भावार्थ - यदि मघा के पीछे सूर्य हो तो वर्षा नहीं होगी और किसान पानी की एक-एक बूँद के लिए तरस जाएगा। वर्षा न होने से कोई फसल पैदा नहीं होगी।

[126]

उगे अगस्त फूले बन कास।
अब छोड़ो बरखा की आस।।

भावार्थ - अगस्त तारे के निकलते ही जंगल में कास फूलने लगे हैं, अतः अब वर्षा की आशा छोड़ देनी चाहिए।

[127]

कातिक मावस देखो जोसी। रवि सनि भौमवार जो होखी।
स्वाति नखत अरु आयुष जोगा। काल पड़ै अरु नासैं लोगा।।

भावार्थ - भड्डरी का कहना है कि ज्योतिषी को कार्तिक की अमावस्या को यह देख लेना चाहिए कि उस दिन रविवार, शनिवार और मंगलवार, स्वाती नक्षत्र तथा आयुष्य योग तो नहीं है। यदि ऐसा है तो अकाल पड़ेगा और मनुष्यों का नाश होगा।

[128]

काहे पंडित पढ़ि पढ़ि मरो, पूस अमावस की सुधि करो।
मूल विसाखा पूरबाषाढ़, झूरा जान लो बहिरें ठाढ़।।

भावार्थ - हे पंडितो!, बहुत पढ़-पढ़कर क्यों जान देते हो? पौष की अमावस्या को देखो, यदि उस दिन मूल, विशाखा या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हों तो समझ लो सूखा पड़ेगा और अकाल घर के बाहर ही खड़ा है।

[129]

कृतिका तो कोरी गई, अद्रा मेह न बूंद।
तो यों जानो भडड्री, काल मचावे दुंद।।

शब्दार्थ - कोरी-खाली, दुंद - लड़ाई-झगड़ा, संघर्ष। काल-अकाल।

भावार्थ - भड्डरी का मानना है कि यदि आर्द्रा नक्षत्र में पानी न बरसा, कृत्तिका नक्षत्र भी वर्षा से खाली गयी तो अकाल पड़ना तय है।

[130]

कर्क संक्रमी मंगलवार। मकर संक्रमी सनिहि बिचार।
पंद्रह महुरतवारी होय। देस उजाड़ करै यों जोय।।

शब्दार्थ - मुहुरतवारी - मुहूर्त (दिन रात का 30वां भाग)

भावार्थ - यदि कर्क नक्षत्र की संक्रान्ति मंगल को पड़े और मकर की संक्रान्ति शनि को और वह पन्द्रह मुहूर्त की हो तो ऐसा भीषण अकाल पड़ेगा की देश उजड़ जायेगा।

[131]

कर्क रासि में मंगलवारी।
ग्रहण परै दुर्भिक्ष बिचारी।।

भावार्थ - यदि चन्द्रमा कर्क राशि में हो तथा मंगल के दिन चंद्रग्रहण पड़े तो अकाल पड़ना निश्चित है।

[132]

कृष्ण अषाढ़ी प्रतिपदा, जो अम्बर गरजन्त।
छत्री छत्री जूझिया, निहचै काल पड़न्त।।

शब्दार्थ - जूझिया-लड़ना।

भावार्थ - आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को यदि आसमान में बादल गरजें तो क्षत्रिय आपस में लड़ेंगे और अकाल पड़ेगा।

[133]

चित्रा स्वाति विसाखड़ी, जो बरसै आसाढ़।
भागो लोग विदेस को, पड़े अकाल प्रगाढ़।।

भावार्थ - यदि आषाढ़ के महीने के चित्रा, स्वाती और विशाखा नक्षत्रों में वर्षा न हुई तो अकाल पड़ना निश्चित है। ऐसे में लोगों को घर छोड़ कर विदेश में शरण लेनी पड़ेगी।

[134]

चटका मघा पटकिगा ऊसर।
दूध भात में परिगा मूसर।।

भावार्थ - यदि मघा नक्षत्र सूखा चला जाय तो समझो कि सारी जमीन ऊसर बन जायेगी और किसान को दूध-भात भी नहीं मिलेगा।

[135]

चैत मास उजियाले पाख, आठें दिवस बरसत राख।
नव बरसे जित बिजली जोय, ता दिसि काल हलाहल होय।।

भावार्थ - यदि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को धूल उड़े और नवमी को पानी बरसे तो जिस दिशा में बिजली चमकी, समझो उस दिशा में अकाल पड़ने वाला है।

[136]

जै दिन जेठ बहे पुरवाई
तै दिन सावन धूरि उड़ाई।।

भावार्थ - जेठ में जितने दिन पुरवा हवा चलेगी सावन में उतने दिन धूल उड़ेगी यानी पानी नहीं बरसेगा।

[137]

जेठ उज्यारी तीज दिन, आद्रा रिख बरसंत।
जोसी भाखै भड्डरी, दुर्भिछ अवसि करंत।।

भावार्थ - यदि ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तीज के दिन आर्द्रा नक्षत्र बरस जाय तो भड्डरी ज्योतिषी कहते हैं कि अकाल अवश्य पड़ेगा।

[138]

ढेकी बोले जाय अकास।
अब नाहीं बरखा कै आस।।

शब्दार्थ - ढेकी-वनमुर्गी।

भावार्थ - वनमुर्गी पक्षी यदि आकाश में (जमीन से थोड़ा ऊपर) उड़-उड़कर बोले तो वर्षा नहीं होगी अर्थात् सूखा पड़ने वाला है, वर्षा की कोई उम्मीद नहीं है।

[139]

दिन को बादर रात को तारे।
चलो कंत जहाँ जीवें बारे।।

शब्दार्थ - बारे-बच्चे।

भावार्थ - यदि दिन में बादल हों और रात में तारे तो समझ लेना चाहिए कि अकाल पड़ने वाला है। किसान की पत्नी कहती है कि हे स्वामी ! यहाँ से कहीं और चलो जहाँ बच्चे जी सकें।

[140]

दिन सात जो चले बाँड़ा।
सूखे जल सातो खाँड़ा।

शब्दार्थ - बांड़ा - दक्षिण-पश्चिम हवा

भावार्थ - यदि दक्षिणी पश्चिमी हवा निरन्तर सात दिनों तक चले तो पृथ्वी के सातो खंडों का पानी सूख जायेगा अर्थात् वर्षा नहीं होगी।

[141]

धुर अषाढ़ की अष्टमी, ससि निर्मल जो दीख।
पीव जाइके मालवा, माँगत फिरिहैं भीख।।

भावार्थ - यदि आषाढ़ शुक्ल अष्टमी को आसमान में बादल न हों और चन्द्रमा स्वच्छ दीख रहा हो तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा और हे प्रियतम ! लोग मालवा जाकर भीख मांगेंगे।

[142]

नवैं असाढ़े बादले, जो गरजे घनघोर।
कहै भड्डरी जोतिसी, काल पड़े चहुँओर।।

भावार्थ - आषाढ़ कृष्ण पक्ष की नवमी को आकाश में घनघोर बादल गरजे तो ज्योतिषी भड्डरी कहते हैं कि चारों तरफ भीषण अकाल पड़ने वाला है।

[143]

पहिलै पानि नदी उफनायँ।
तो जानियौ कि बरखा नायँ।।

भावार्थ - यदि पहली वर्षा के पानी से नदियाँ उफना जायँ तो समझ लें कि अब आगे वर्षा होने की सम्भावना नहीं है।

[144]

पुष्य पुनर्बस भरे न ताल।
तो फिर भरिहैं अगली साल।।

भावार्थ - यदि पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्रों की वर्षा से ताल-तलैया न भरें तो फिर अगले वर्ष ही भरेंगे अर्थात् सूखा पड़ने के आसार हैं।

[145]

पाँच मंगरी फागुनी, पूस पाँच सनि होय।
काल पड़े तब भड्डरी, बीज बोअइ मति कोय।।

भावार्थ - फागुन मास में पांच मंगलवार और पौष मास में यदि पाँच शनिवार पड़ें तो भड्डरी के अनुसार निश्चय ही अकाल पड़ने वाला है और कोई बीज न बोये क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं होगा।

[146]

पहिला पानी भरिगा ताल,
घाघ कहै अब परिगा अकाल।

भावार्थ - वर्षा के पहले पानी से ही यदि ताल भर जायँ तो घाघ कहते हैं कि अकाल पड़ना तय है।

[147]

बोली लोखरि फूली काँस।
अब नाहिंन बरखा कै आस।।

भावार्थ - यदि लोमड़ी बोलने लगे और कांस फूलने लगे तो समझ लेना चाहिए कि अब वर्षा की कोई आशा नहीं है।

[148]

भादों बदी एकादसी, जो ना छिटकै मेघ।
चार मास बरसै नहीं, कहै भड्डरी पेख।।

शब्दार्थ - बदी-कृष्ण पक्ष। पेख-देखना।

भावार्थ - भड्डरी का कहना है कि यदि भादों कृष्ण एकादशी को आसमान में बादल न दिखाई दें तो समझ लेना चाहिए कि चार महीने पानी नहीं बरसेगा।

[149]

भोर समै डरडम्बरा, रात उजेरी होय।
दुपहरिया सूरज तपै, दुरभिछ तेऊ जोय।।

शब्दार्थ - डरडम्बरा - आकाश में बादल

भावार्थ - यदि सुबह आसमान में बादल हों और रात्रि में आसमान स्वच्छ हो और दोपहर में सूर्य तपे अर्थात् कड़ी धूप हो तो निश्चय ही अकाल पड़ने वाला है।

[150]

माघ उजेरी पंचमी सरसै उत्तम बाय
तो जानो ये भादवौं बिन जल कोरौ जाय।।

भावार्थ - यदि माघ शुक्ल पंचमी को अच्छी हवा चले तो भादों में वर्षा के आसार नहीं हैं अर्थात् भादों सूखा जायेगा।

[151]

माघ सुदी तो सत्तमी सोमवार दीसन्त।
काल पड़ै राजा लड़ै, सगरे नरा भ्रमन्त।।

भावार्थ - यदि माघ महीने की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को सोमवार पड़े तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा, राजा युद्धरत होगा और सारे मनुष्य भटकते फिरेंगे।

[152]

मंगलवारी मावसी, फागुन चैती जोय।
पशु बेंचो कन संग्रहो, अवसि दुकाली होय।।

शब्दार्थ - मावसी-अमावस्या। कन-अनाज। अवसि-अवश्य। दुकाली-अकाल।

भावार्थ - यदि फागुन और चैत्र की अमावस्या को मंगल पड़े तो समझ लेना चाहिए कि अकाल पड़ने वाला है इसलिए पशुओं को बेचकर अन्न एकत्र करना शुरु कर दो।

[153]

मृगसिर वायु न बाजिया, रोहिनि तपै न जेठ।
गोरी बीनै काँकरा, खड़ी खेजड़ी हेठ।।

शब्दार्थ - खेजड़ी-एक प्रकार का वृक्ष। हेठ-नीचे।

भावार्थ - मृगशिरा नक्षत्र में यदि हवा न चले और ज्येष्ठ महीने में रोहिणी नक्षत्र न तपे तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा और किसान की स्त्री खेजड़ी वृक्ष के नीचे कंकड़ चुनेगी।

[154]

मृगसिर वायु न बादला, रोहिनि तपै न जेठ।
अद्रा जो बरसै नहीं, कौन सहै अलसेठ।।

शब्दार्थ - अलसेठ - झंझट।

भावार्थ - यदि मृगशिरा नक्षत्र में हवा न चले और न ही बादल हों, ज्येष्ठ में गर्मी न पड़े और न ही आर्द्रा में वर्षा हो तो खेती के झंझट में न पड़ो क्योंकि मौसम ठीक नहीं है अर्थात् सूखा पड़ने वाला है।

[155]

माघ में गरमी जेठ में जाड़।
कहै घाघ हम होब उजाड़।।

भावार्थ - यदि माघ महीने में गर्मी पड़े और ज्येष्ठ में ठंड लगे तो घाघ कहते हैं कि निश्चित ही किसान उजड़ जायेंगे अर्थात सूखा पड़ने वाला है।

[156]

मंगल पड़े तो भू चलै, बुध को पड़े अकाल।
जो तिथि होय सनीचरी, निहचै पड़े अकाल।।

भावार्थ - यदि फाल्गुन मास का अन्तिम दिन मंगलवार को पड़े तो भूकंप आयेगा और यदि बुधवार और शनिवार को पड़े तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

[157]

माघ सुदी पून्यो दिवस, चन्द्र निर्मलो जोय।
पसु बेंचो कन संग्रहो, काल हलाहल होय।।

भावार्थ - यदि माघ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को चन्द्रमा स्वच्छ हो अर्थात् बादल न हों तो हे किसान! अपने जानवरों को बेंचकर अन्न को इकट्ठा कर लो, क्योंकि भीषण अकाल पड़ने वाला है।

[158]

मंगल रथ आगे चलै, पीछे चले जो सूर।
मन्द वृष्टि तब जानिये, पड़सी सगलै झूर।।

शब्दार्थ - झूर - सूखा।

भावार्थ - मंगल ग्रह आगे और सूर्य उसके पीछे हो तो वर्षा कम होगी और समझो चारो तरफ सूखा पड़ने वाला है।

[159]

माघे नौमी निरमली, बादर रेख न जोय।
तौ सरवर भी सूखहीं, महि में जल नहिं होय।।

शब्दार्थ - निरमली-स्वच्छ। महि-धरती।

भावार्थ - यदि माघ माह के शुक्ल पक्ष की नवमी को आकाश बिल्कुल स्वच्छ हो और आकाश में बादल की एक रेख तक न हो तो सारे तालाब सूख जायेंगे, पूरी धरती पर कहीं भी पानी नहीं मिलेगा अर्थात् बिना पानी के पैदावार नहीं होगी।

[160]

रात्यो बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल।
कहै भड्डरी समुझि मन, निहचै परै अकाल।।

शब्दार्थ - कागला-कौआ। स्याल-गीदड़।

भावार्थ - यदि रात में कौआ बोले और दिन में गीदड़ तो भड्डरी के अनुसार निश्चित रूप से सूखा पड़ने वाला है।

[161]

रोहिनि माहीं रोहिनी, एक घड़ी जो दीख।
हाथ में खपरा मेदिनी, घर-घर माँगै भीख।।

शब्दार्थ - खपरा - खप्पर-कटोरा।

भावार्थ - यदि रोहिणी नक्षत्र में एक घड़ी के लिए भी रोहणी रहे तो समझ लेना चाहिए कि भीषण अकाल पड़ने वाला है और लोग हाथ में खप्पर लेकर भीख माँगते फिरेगे।

[162]

रात निर्मली दिन को छाँहीं।
कहैं भड्डरी पानी नाहीं।।

भावार्थ - यदि रात्रि में आसमान स्वच्छ हो और दिन में बादल छाये रहें तो वर्षा नहीं होगी अर्थात् सूखा पड़ने वाला है।

[163]

सावन पुरवाई चलै, भादों में पछियाँव।
कन्त डँगरवा बेचि के, लरिका जाइ जियाव।।

शब्दार्थ - कन्त-स्वामी। डँगरवा-पशु। लरिका-बच्चा।

भावार्थ - यदि सावन महीने में पुरवा हवा बहे और भाद्र में पछुवा, तो हे स्वामी! पशुओं को बेच दो और बच्चों को पालने की चिन्ता करो क्योंकि वर्षा नहीं होगी और अकाल पड़ेगा।

[164]

सावन सुक्ला सत्तमी, चन्दा छिटिक करै।
की जल देखौ कूप में, की कामिनि सीस धरै।।

शब्दार्थ - कूप-कुआँ। कामिनि-स्त्री

भावार्थ - यदि सावन शुक्ल सप्तमी को चाँदनी फैली हो तो वर्षा नहीं होगी, सूखा पड़ेगा। ऐसे में पानी या तो कुँए में दिखेगा या फिर स्त्रियों के सिर पर रखे घड़े में।

[165]

सावन सुक्ला सत्तमी, उवत जो दीखै भान।
या जल मिलि है कूप में, या गंगा असनान।।

भावार्थ - यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को स्वच्छ आकाश में सूर्य उदय होता हुआ दिखाई पड़े तो वर्षा नहीं होगी, निश्चय ही सूखा पड़ेगा। ऐसी स्थिति आ जायेगी कि पानी या तो कुएँ में दिखेगा या गंगास्नान करने में गंगा में मिलेगा।

[166]

सावन सुक्ला सत्तमी, उभरे निकले भान।
हम जायें पिय माइके, तुम कर लो गुजरान।।

भावार्थ - यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को सूर्य के उदय होने के समय आसमान स्वच्छ हो तो हे प्रियतम! मैं मायके जा रही हूँ और तुम किसी प्रकार अपना गुजारा कर लेना क्योंकि भीषण अकाल पड़ने वाला है।

[167]

सावन सुक्ला सत्तमी, जो गरजे अधिरात।
तू पिय जाओ मालवा, हम जायें गुजरात।।

भावार्थ - यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी को अर्धरात्रि में बादल गरजें, तो हे प्रिय तुम मालवा चले जाना और मैं गुजरात चली जाऊँगी अर्थात् अकाल पड़ने वाला है।

[168]

सावन पहली पंचमी, जोर की चलै बयार।
तुम जाना प्रिय मालवा, हम जावैं पितुसार।।

भावार्थ - यदि श्रावण कृष्ण पंचमी को हवा तेज चले, तो हे प्रिय! तुम मालवा जाना और मैं अपने पिता के घर चली जाऊँगी क्योंकि अकाल पड़ना तय है।

[169]

सावन कृष्ण पक्ष में देखौ। तुल को मंगल होय बिसेखौ।।
कर्क रासि पर गुरु जो जावै। सिंह रासि में सुक्र सुहावै।।
ताल सो सोखै बरसै धूर। कहूँ न उपजै सातो तूर।।

भावार्थ - यदि श्रावण कृष्ण पक्ष में तुला का मंगल हो, कर्क राशि पर वृहस्पति हो अथवा सिंह राशि पर शुक्र हो, तो तालाब सूख जायेंगे और धूल की वृष्टि होगी और कहीं भी सातों अन्न नहीं पैदा होंगे अर्थात् अकाल पड़ेगा।

[170]

सुदि असाढ़ में बुध को, उदै भयो जो देख।
सुक्र अस्त सावन लखो, महाकाल अवरेख।।

भावार्थ - यदि आसाढ़ शुक्ल में बुध उदय हो और श्रावण मास में शुक्र अस्त हो तो निश्चय ही भीषण अकाल पड़ेगा।

[171]

सावन मास बहै पुरवाई।
बरधा बेंचि बेसाहो गाई।।

भावार्थ - जब श्रावण मास में पुरवाई चले तो कृषक को चाहिए कि वह अपने बैलों को बेचकर गाय खरीद ले क्योंकि सूखा पड़ने के आसार हैं जिसमें खेती नहीं हो सकेगी।

[172]

सावन सुक्ला सत्तमी, जो गरजै अधिरात।
बरसे तो सूखा पड़े, नाहीं समो सुकाल।।

भावार्थ - सावन शुक्ल सप्तमी को यदि आधी रात में बादल गरज कर बरसें तो सूखा पड़ेगा, नहीं तो समय अच्छा बीतेगा।

[173]

सावन सूखा स्यारी।
भादौं सूखा उन्हारी।

शब्दार्थ - स्यार-खरीफ। उन्हारी-रबी की फसल।

भावार्थ - यदि सावन मास में वर्षा न हुई तो खरीफ की फसल को अत्यधिक नुकसान होता है इसी प्रकार यदि भादों में वर्षा न हुई तो रबी की फसल नष्ट हो जाती है।

[174]

सावन सुक्ला सत्तमी, गगन स्वच्छ जो होय।
कहै घाघ सुन भड्डरी, पुहुमी खेती खोय।।

भावार्थ - सावन महीने के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को यदि आसमान साफ हो तो घाघ कहते हैं कि हे भड्डरी ! यह जान लो कि अकाल पड़ने वाला है और खेती नष्ट हो जायेगी।

[175]

सावन सुक्र न दीसै,
निहचै पड़ै अकाल।

भावार्थ - सावन के महीने में यदि शुक्र न दिखे अर्थात् अस्त हो तो निश्चित ही अकाल पड़ेगा।

[176]

सावन कृष्ण एकादसी, गर्जि मेघ घहरात।
तुम जाओ प्रिय मालवै, हम जाबै गुजरात।।

भावार्थ - यदि सावन के कृष्ण पक्ष की एकादशी को मेघ गरज कर घहरायें (गंभीर ध्वनि करें) तो निश्चय ही अकाल पड़ने वाला है। अतः हे प्रिय! तुम, मालवा जाओ और मैं गुजरात जाऊँगी।

खेती सम्बन्धी कहावतें

[177]

आकर कोदो, नीम जवा।
गाडर गेहूँ, बेर चना।।

शब्दार्थ - आकर-मदार। गाडर- एक घास जिसकी जड़ 'खस' कहलाती है।

भावार्थ - जिस वर्ष मदार खूब फूलें और फलें तो समझो उस वर्ष कोदों की पैदावार अच्छी होगी। जब नीम फूले-फले तो जौ की पैदावार अच्छी होगी। जब गाडर घास की अधिकता हो तो गेहूँ की फसल अच्छी होती है। जब बेर की फसल अच्छी हो तो चना की पैदावार अच्छी होती है।

[178]

आसपास रबी बीच में खरीफ।
नोन मिर्च डालके खा गया हरीफ।।

शब्दार्थ - हरीफ - शत्रु, प्रतिद्वंदी।

भावार्थ - यदि किसान ने खरीफ की फसल के चारों तरफ रबी की फसल की बोवाई की है तो उसका शत्रु नमक मिर्च लगा कर उसे खा जायेगा अर्थात् पैदावार अच्छी नहीं होगी।

[179]

आधा खेत बटैया देके, ऊँची दीह किआरी।
जो तोर लइका भूखे मरिहें, घघवे दीह गारी।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि यदि किसान के पास खेत अधिक है तो आधा बटाई पर दे देना चाहिए और आधे खेत में ऊँचे मेंढ़ बाँधकर खेती करनी चाहिए। यदि इतना करने पर भी पैदावार अच्छी न हो तो मुझे गाली देना।

[180]

इतवार करै धनवन्तरि होय, सोम करै सेवा फल होय।
बुध बिहफै सुक्रै भरै बखार, सनि मंगल बीज न आवै द्वार।।

भावार्थ - किसान को खेती का कार्य करते समय ध्यान रखना चाहिए कि वह उसे रविवार को प्रारम्भ करे, इससे वह धनवान हो जाता है। यदि सोमवार को करेगा तो परिश्रम का फल मिलेगा। यदि उसने बुध, वृहस्पति, शुक्रवार को कार्य प्रारम्भ किया तो बखार (अन्न कोष) भर जायगा और यदि शनिवार या मंगलवार को प्रारम्भ करेगा तो उसे भीषण हानि होगी और बीज भी घर वापस नहीं आयेगा।

[181]

उत्तम खेती मध्यम बान।
निषिद चाकरी भीख निदान।।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि खेती सबसे अच्छा कार्य है। व्यापार मध्यम है, नौकरी निषिद्ध है और भीख माँगना सबसे बुरा कार्य है।

[182]

ऊख करै सब कोई।
जो बीच में जेठ न होई।।

भावार्थ - यदि ज्येष्ठ जैसा गर्मी का महीना न हो तो हर किसान ईख की खेती करना चाहेगा।

[183]

उर्द मोथी की खेती करिहौ।
कुँड़िया तोर उसर में धरिहौ।।

शब्दार्थ - कुड़िया-कूँड़ा (मिट्टी का घड़ा जिसमें अनाज रखा जाता है)।

भावार्थ - यदि उरद और मोथी की खेती करोगे तो कूँड़ा को तोड़ कर ऊसर में रखना पड़ेगा क्योंकि उर्द और मोथी की फसल ऊसरीली जमीन में अधिक होती है।

[184]

एक हर हत्या दो हर काज।
तीन हर खेती चार हर राज।।

भावार्थ - यदि किसान के पास एक हल की खेती है, तो हत्या के बराबर है, दो हल की खेती है, तो काम चलाऊ है, लेकिन यदि किसान के पास तीन हल या चार हल की खेती है तो वह राजा के बराबर है।

[185]

कपास चुनाई। खेत खनाई।।

भावार्थ - कपास चुनने से और खेत को खोदने से लाभ की सम्भावना बढ़ जाती है।

[186]

कामिनि गरभ औ खेती पकी।
ये दोनों हैं दुर्बल बदी।।

भावार्थ - ऐसा माना जाता है कि गर्भवती स्त्री और पकी खेती दोनों दुर्बल होती हैं।

[187]

कर्म हीन नर खेती करै।
बरधा मरै कि सूखा परै।।

भावार्थ - जिस किसान का भाग्य खराब होगा वह यदि खेती करेगा तो या तो उसका बैल मर जायेगा या सूखा पड़ जायेगा।

[188]

खेती करै बनिज को धावै।
ऐसा डूबै थाह न पावै।।

शब्दार्थ - बनिज - व्यापार।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति खेती के साथ-साथ व्यापार भी करता है तो वह इस प्रकार डूबता है कि उसकी थाह भी नहीं मिलती अर्थात् दो कार्य एक साथ करने वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं होता।

[189]

खेती तो थोड़ी करे, मिहनत करे सिवाय।
राम चहें वही मनुष को, टोटा-कभी न आय।।

शब्दार्थ - टोटा-कमी।

भावार्थ - यदि खेती कम है और किसान मेहनत अधिक करे तो ईश्वर की कृपा से उसे कभी किसी चीज की कमी नहीं आयेगी।

[190]

खेती। खसम सेती।।
आधी केकी ? जो देखै तेकी।।
बिगड़ै केकी ? घर बैठे पूछै तेकी।।

भावार्थ - जिस प्रकार पत्नी पति की सेवा कर सुखी होती हैं उसी प्रकार लाभ प्राप्त करने के लिए खेती की सेवा करनी चाहिए। जो सिर्फ निगरानी करता है, उसे खेती से आधा लाभ मिलता है, लेकिन जो घर बैठे-बैठे पूछ लेता है कि खेती का क्या हाल है ? उसकी खेती बिल्कुल बेकार होती है।

[191]

खेती करै अधिया।
न बैल न बधिया।।

भावार्थ - बटाई पर खेती करने में किसान को बैल-बधिया (हल) किसी की चिंता नहीं रहती है।

[192]

खेत बेपानी बूढ़ा बैल।
सो गृहस्थ साँझै गहे गैल।।

भावार्थ - जिस किसान का खेत बिना पानी का हो अर्थात् ऐसी जगह हो जहाँ पानी न पहुँचता हो और बैल बुड्ढा हो तो वह खेती न करे तो ही अच्छा रहेगा।

[193]

खेती करै साँझ घर सोवै।
काटै चोर हाथ धरि रोवै।।

भावार्थ - जो किसान खेती करता है और सांयकाल ही घर में सो जाता है तो उसकी फसल को रखवारी के अभाव में चोर काट ले जाते हैं, फिर उसे हाथ पर हाथ रख कर रोना ही पड़ता है।

[194]

खनि के काटै घन के मोराये।
तब बरदा के दाम सुलाये।।

शब्दार्थ - मोराये-ईख का रस निकालना, सुलाये-सफल होना। वसूल होना।

भावार्थ - यदि किसान ईख को जड़ से खोद कर निकाले और खूब दबा-दबा कर कोल्हू में पेरे तो उसे अधिक फायदा होता है और बैलों का परिश्रम भी सफल होता है। उनका दाम वसूल हो जाता है।

[195]

खेती करै ऊख कपास।
घर करै व्यवहरिया पास।।

भावार्थ - ऊख और कपास की खेती करना साहूकार को अपने घर के पास बुलाना है अर्थात् कर्जदार बनना है।

[196]

जेठ में जरै माघ में ठरै।
तब जीभी पर रोड़ा परै।।

भावार्थ - जेठ की धूप में जलने से और माघ की सर्दी में ठिठुरने से ईख की खेती होती है और तब किसान की जीभ पर गुड़ का रोड़ा पड़ता है अर्थात् गुड़ खाने को मिलता है।

[197]

जौ तेरे कुनबा घना।
तो क्यों न बोये चना।।

शब्दार्थ - कुनबा - संयुक्त परिवार।

भावार्थ - हे किसान ! यदि तेरे परिवार में अधिक प्राणी हैं तो तुमने चना क्यों नहीं बोया ?

[198]

तिल कोरें। उर्द बिलोरें।।

भावार्थ - तिल कोरने (गोड़ने) से और उर्द बिलोरने (इधर उधर करने) से पैदावार अच्छी होती है।

[199]

दुइ हर खेती यक हर बारी।
एक बैल से भली कुदारी।।

शब्दार्थ - हर - हल।

भावार्थ - यदि किसान के पास दो हल हैं तो खेती और एक हल है तो साग तरकारी की बाड़ी अच्छी होती है और जिस किसान के पास एक ही बैल हो तो उससे अच्छा है वह कुदाल ही रखे।

[200]

धान गिरै सुभागे का।
गेहूँ गिरै अभागे का।।

भावार्थ - जिस किसान का धान गिरता है वह भाग्यशाली होता है लेकिन यदि गेहूँ गिरता है तो वह अभागा होता है।

[201]

पाही जोतै तब घर जाय।
तेहि गिरहस्त भवानी खायँ।।

शब्दार्थ - पाही-किसान का वह खेत जो निवास स्थान से कुछ अधिक दूर हो।

भावार्थ - जो किसान दूसरे गाँव में खेती करता है और उसे जोत-बोकर घर चला जाता है, उसे भवानी खा जाये तो अच्छा है अर्थात् पाही काश्तकार को पाही पर रहना आवश्यक होता है।

[202]

बहुत करे सो और को।
थोड़ी करे सो आप को।।

भावार्थ - खेती ज्यादा करने से दूसरों को लाभ पहुँचता है और थोड़ी करने से अपना काम चलता है।

[203]

बेस्या बिटिया नील है, बन साँवा पुत जान।
वो आई सब घर भरै, दरब लुटावन आन।।

शब्दार्थ - दरब - द्रव्य, धन।

भावार्थ - नील वेश्या की कन्या है और कपास तथा साँवा उसके पुत्र हैं। पुत्री हुई तो उसके घर में धन भर जाता है और पुत्र आया तो वह सारे द्रव्यों को लुटा देता है। तात्पर्य है कि नील की फसल बोने से खेत कि उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है, जब कि कपास और साँवा बोने से उसमें कमी आ जाती है।

[204]

यकसर खेती यकसर मार।
घाघ कहैं ये सदहूँ हार।।

भावार्थ - जो किसान अकेले खेती करता है और अकेले ही मारपीट करता है, घाघ कहते हैं वह सदैव हारता है।

[205]

रड़है गेहूँ कुसहै थान। गड़रा की जड़ जड़हन जान।।
फुली घास रो देयँ किसान। वहिमें होय आन का तान।।

शब्दार्थ - रड़हैं - राँढ़ी नामक घास।

भावार्थ - यदि राढ़ी घास काट कर गेहूँ का खेत बनाया जाये, कुश काट कर धान की और गडरा नामक घास काट कर जड़हन का खेत बनाया जाये तो पैदावार अच्छी होती है। लेकिन जिस खेत में फुलही घास पैदा होती हो उसमें किसी प्रकार के अन्न की पैदावार नहीं होगी और किसान रो देगा।

[206]

रूँध बाँध के फाग दिखाये।
सो किसान मोरे मन भाये।।

भावार्थ - ईख कहती है कि जो किसान होली तक मुझे अच्छी तरह रूँध देता है वह मुझे बहुत पसंद है।

[207]

बिधि का लिखा न होवै आन। बिना तुला ना फूटै धान।।
सुख सुखराती देवउठान। तेकरे बरहे करौ नेमान।।
तेकरे बरहे खेत खरिहान। तेकरे बरहे कोठिलै धान।।

भावार्थ - जब तुला राशि पर सूर्य आता है तभी धान में बालें लगती हैं, यह विधाता का लेख अमिट है। सुख की रात दीवाली और देवोत्थानी एकादशी बीत जाने पर उसके बारहवें दिन नया अन्न ग्रहण करना चाहिए, ठीक उसके बारहवें दिन धान को काट कर खलिहान में रख देना चाहिए एवं उसके बारहवें दिन धान को कोठिला में भरकर रख देना चाहिए।

[208]

सर्व तपै जो रोहिणी, सर्व तपै जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ की, उपजै सातो तूर।।

भावार्थ - यदि रोहिणी पूरी तरह से तपे और मूल में भी उसी तरह गर्मी रहे और जेठ की परिवा भी उसी प्रकार तपे तो सातों प्रकार के अन्न पैदा होंगे, ऐसा घाघ का मानना है।

[209]

सब कार हर तर।
जो खसम सीर पर।।

शब्दार्थ - सीर-जमीन। कार-काम।

भावार्थ - यदि जमीन का मालिक स्वयं खेती के सारे काम करें तो खेती कुल पेशों से उत्तम है।

[210]

हथिया में हाथ गोड़ चित्रा में फूल।
चढ़त सेवाती झम्पा झूल।

भावार्थ - हस्त नक्षत्र में जड़हन (धान) की फसल में डण्ठल निकलना शुरू होता है। चित्रा में फूल निकलने लगता है और स्वाति नक्षत्र के प्रारम्भ में बालें लटक आती हैं।

किसान सम्बन्धी कहावतें

[211]

असाढ़ मास जो गँवही कीन।
ताकी खेती होवै हीन।।

शब्दार्थ - गँवही-गमन, मेहमानी।

भावार्थ - यदि किसान आषाढ़ मास में मेहमानी करता फिरता है तो उसकी खेती कमजोर या नष्ट हो जाती है क्योंकि यह समय खेती के काम के लिए उपयुक्त होता है।

[212]

अहिर बरदिया ब्राह्मन हारी।
गई सावनी और असाढ़ी।।

शब्दार्थ - हारी - हलवाहा।

भावार्थ - यदि अहीर बैलों का व्यापारी और ब्राह्मण हलवाहा हो तो आषाढ़ और सावन के महीने यों ही बीत जाते हैं जिससे फसलें मारी जाती हैं।

[213]

उत्तम खेती जो हर गहा। मध्यम खेती जो सँग रहा।
जो पूछेसि हरवाहा कहाँ। बीज बूड़िगे तिनके तहाँ।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि जो किसान स्वयं हल जोतता है उसकी खेती श्रेष्ठ होती है, जो हलवाहे के साथ रहता है उसकी मध्यम, लेकिन जो यह पूछता है कि हलवाहा कहाँ है ? उसका बीज भी व्यर्थ चला जाता है।

[214]

उत्तम खेती आप सेती। मध्यम खेती भाई सेती।
निकृष्ट खेती नौकर सेती। बिगड़ गई तो बलाये सेती।।

भावार्थ - जो किसान खेती का कार्य स्वयं करता है वह उत्तम होता है, जो भाई के भरोसे रहता है वह मध्यम होता है और जो नौकर के भरोसे खेती कराता है वह निकृष्ट होता है। उसकी खेती यदि बिगड़ गयी तो नौकर की बला से।

[215]

जब बरसै तब बाँधो क्यारी।
बड़ा किसान जो हाथ कुदारी।।

भावार्थ - वर्षा होते ही तुरन्त खेत में क्यारी बाँधनी चाहिए। वही किसान बड़ा है जिसके हाथ में सदैव कुदाल रहती है।

[216]

जो हल जोतै खेती वाकी ।
और नहीं तो जाकी ताकी।।

भावार्थ - जो किसान स्वयं हल जोतता है, खेती उसी की होती है। नहीं तो खेती जिसकी-तिसकी (तितर-बितर) हो जाती है।

[217]

दस हल राव आठ हल राना।
चार हलों का बड़ा किसाना।।

भावार्थ - जिस किसान के पास दस हल की खेती है वह राव के बराबर है, जिसके पास आठ हल की खेती है वह राना है और जिसके पास चार हल की खेती है वह बड़ा किसान होता है।

[218]

नित्तै खेती दुसरे गाय। नाहीं देखै तेकर जाय।।
घर बैठल जो बनवै बात। देह में बस्त्र न पेट में भात।।

भावार्थ - जो किसान रोज खेती का कार्य नहीं करता और हर दूसरे दिन गाय को नहीं देखता, उसकी दोनों चीजें बर्बाद हो जाती हैं। यदि घर में बैठे-बैठे सिर्फ बातें करता रहता है तो उसके देह पर न तो वस्त्र रहता है और न ही पेट में भात अर्थात् वह गरीब हो जाता है।

[219]

बीघा बायर होय बाँध जो होय बँधाये।
भरा भुसौला होय बबुर जो होय बुवाये।

बढ़ई बसे समीप बसूला बाढ़ धराये।
पुरखिन होय सुजान बिया बोउनिहा बनाये।

बरद बगौधा होय बरदिया चतुर सुहाये।
बेटवा होय सपूत कहे बिन करे कराये।

शब्दार्थ - बायर - चक। बाढ़ - धार। बगौधा-खाकी रंग का, भूरा।

भावार्थ - यदि किसान का खेत एक चक में हो, खेत के चारों ओर सिंचाई के लिए बाँध बँधे हों, भुसौला (भूसा का घर) भरा हुआ हो, बबूल

के पेड़ हों और बढ़ई पास में बसा हो, उसका बसूला तेज हो, घर की मालकिन गृहस्थी में होशियार हो और बीजों को बोने योग्य बना ले, उसके बैल बगौधे नस्ल के हों, हलवाहा नेक और समझदार हो, बेटा सपूत हो और बाप के बिना कहे सारे काम-काज करा सके, तो उसे अच्छा किसान कहा जा सकता है।

[220]

बाँध कुदारी खुरपी हाथ। लाठी हँसुवा राखै साथ।।
काटै घास औ खेत निरावै। सो पूरा किसान कहलावै।।

भावार्थ - यदि हाथ में कुदाल और खुरपी हो और साथ में लाठी और हँसुवा रखे हो तथा घास काटता रहे और खेत निराता रहे तो घाघ कहते हैं वही श्रेष्ठ किसान होता है।

[221]

सावन सोये ससुर घर भादों खाये पूवा।
खेत-खेत में पूछत डोलैं तोहरे केतिक हूवा।।

भावार्थ - आलसी और सुस्त किसान सावन मास में ससुराल में रहे, भादों में पूवा खाता रहे और फसल पकने पर दूसरों से पूछता फिरता रहे कि तुम्हारे खेत में कितनी पैदावार हुई ? ऐसा किसान किसी लायक नहीं होता है और सदैव परेशान रहता है।

वायु ज्ञान सम्बन्धी कहावतें

[222]

आसाढ़ी पूनो की साँझ।
वायु देखिये नभ के माँझ।।

नैऋत भूइँ बूँद ना पड़े।
राजा परजा भूखों मरें।।

अगिन कोन जो बहे समीरा।
पड़े काल दुख सहे सरीरा।।

उत्तर से जल फूहो परें।
मूस साँप दोनों अवतरें।।

पच्छिम समै नीक करि जान्यो।
आगे बहै तुसार प्रमान्यो।।

जो कहुँ बहैं इसाना कोना।
नाप्यो बिस्वा दो दो दोना।।

जो कहुँ हवा अकासे जाय।
परै न बूँद काल परि जाय।।

दक्खिन पच्छिम आधो समयो।
भड्डर जोसी ऐसे भनयो।।

शब्दार्थ - काल - अकाल। फूहो-झींसी।

भावार्थ - आषाढ़ पूर्णिमा की शाम को आकाश में हवा की परीक्षा कर लेनी चाहिए। यदि नैऋत्य कोण की हवा हो तो पृथ्वी पर एक बूँद पानी नहीं बरसेगा और राजा-प्रजा दोनों भूखे मरेंगे। यदि हवा अग्निकोण की हो तो अकाल पड़ेगा और शरीर को कष्ट मिलेगा, यदि हवा उत्तर की हो तो वर्षा साधारण होगी, चूहे और साँप अधिक पैदा होंगे। हवा यदि पश्चिम की हो तो समय अच्छा बीतेगा, लेकिन पाला पड़ेगा। यदि हवा ईशान कोण की हो तो पैदावार अत्यल्प होगी अर्थात् दो बिस्वे में दो दोना अनाज पैदा होगा। हवा आकाश की ओर जा रही हो तो वर्षा एक बूँद नहीं होगी और अकाल पड़ेगा। यदि हवा दक्षिण पश्चिम की हो तो पैदावार आधी होगी, ऐसा भड्डरी ज्योतिषी का कहना है।

[223]

बयार चले ईसाना।
ऊँची खेती करो किसाना।।

भावार्थ - यदि आषाढ़ में ईशान कोण की हवा चले तो फसल अच्छी होगी।

जुताई सम्बन्धी कहावतें

[224]

अगहन में ना दी थी कोर।
तेरे बैल क्या ले गये चोर।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि हे किसान ! तूने अगहन में अपने ईख के खेतों की जुताई क्यों नहीं की? क्या तेरे बैल चोर चुरा ले गये थे ?

[225]

असाढ़ जोतै लड़के बारे। सावन भादौं में हरवाहे।
कुआर जोतै घर का बेटा। तब ऊँचे हो होनहारे।।

भावार्थ - आषाढ़ मास में यदि लड़के से भी जुताई करा लें तो भी कोई हर्ज नहीं, लेकिन सावन में बिना हलवाहे के जोते काम नहीं बनेगा और क्वार में यदि कृषक का बेटा भी खेत को जोते तो ठीक होगा अर्थात् ऐसा करने से किसान के खेत में पैदावार अच्छी होगी और उसका भाग्य अच्छा होगा।

[226]

कहा होय बहु बाहें,
जोता न जाय थाहें।।

शब्दार्थ - थाहे-गहरा।

भावार्थ - बहुत बार जोतने से कुछ नहीं होता यदि गहराई से न जोता जाय।

[227]

कातिक मास रात हर जोतौ।
टाँग पसारे घर मत सूतौ।।

शब्दार्थ - टाँग - पैर। सूतौ - सोना।

भावार्थ - किसान को कार्तिक मास में रात को भी हल चलाना चाहिए, पैर फैलाकर सोना नहीं चाहिए।

[228]

कच्चा खेत न जोतै कोई।
नाहीं बीज न अँकुरै कोई।।

भावार्थ - खेत की जुताई से पहले यह देख लेना चाहिए कि खेत की मिट्टी पक गई है या नहीं, क्योंकि कच्ची मिट्टी में बीज अंकुरित नहीं होगा।

[229]

खेत बेपनिया जोतो तब।
ऊपर कुँआ खोदाओ जब।।

भावार्थ - किसान को चाहिए कि जिस खेत में पानी न पहुँचता हो उस खेत की जुताई तब तक न करावे जब तक उसमें कुँआ न खोदवा ले।

[230]

गेहूँ भवा काहें, आसाढ़ के दो बाहें।
गेहूँ भवा काहें, सोलह बाहें - नौ गाहें।।

भावार्थ - कवि प्रश्नों के माध्यम से कहता है- गेहूँ अच्छा क्यों हुआ क्योंकि आषाढ़ में उस खेत की दो बार जुताई हुई थी। गेहूँ की अच्छी पैदावार का दूसरा कारण है उस खेत की सोलह बार जुताई और नौ बार हेंगाई जिससे मिट्टी के कण छोटे-छोटे हो गये।

[231]

गहिर न जोतै बोवै धान।
सो घर कोठिला भरै किसान।।

शब्दार्थ - गहिर - गहरा।

भावार्थ - धान के खेत को अधिक गहरा नहीं जोतना चाहिए। कम जोत कर धान लगाने पर पैदावार इतनी अधिक होगी कि उसके घर के कोठिले धान से भर जायेंगे।

[232]

चिरैया में चीर फार। असरेखा में टार-टार।।
मघा में काँदो सार।।

भावार्थ - पुष्य नक्षत्र में यदि खेत को थोड़ा भी गोड़कर धान लगा दे तो फसल अच्छी होती है। अश्लेषा में अच्छी जुताई के बाद धान लगाना चाहिए और यदि मघा नक्षत्र में धान लगाना है तो अच्छी जुताई के साथ खाद भी डालनी पड़ेगी तभी फसल अच्छी होगी।

[233]

छोटी नसी धरती हँसी।
हर लगा पताल, तो टूट गया काल।।

शब्दार्थ - नसी-हल का फाल (हल के नीचे लगा नुकीला लोहा)।

भावार्थ - हल के छोटे फाल को देखकर धरती हँसती है कि इसकी जुताई से कैसे पैदावार होगी ? यदि हल के लम्बे फाल से गहरी जुताई होती है तो अकाल भी समाप्त हो जाता है अर्थात् अल्प वृष्टि की स्थिति में भी पैदावार हो जाती है।

[234]

जो जौ चहै तो उत्तर गहै।
काँच पकै के जोतत रहै।।

भावार्थ - यदि किसान को जौ की अच्छी पैदावार चाहिए तो उत्तरा नक्षत्र में कच्चे खेतों को जोतकर उसे पकाकर फिर ढेलों की रोरी एवं उसके बारीक कण बनाकर उसमें जौ बोयें तो फसल अच्छी होगी।

[235]

जोतै खेत घास न टूटै।
तेकर भाग साँझ ही फूटै।।

शब्दार्थ - तेकर - उसका। भाग - भाग्य।

भावार्थ - खेत की जुताई के बाद भी यदि उस खेत की घास समाप्त न हुई तो समझो उस किसान का भाग्य ही फूट गया।

[236]

जेतना गहिरा जोतै खेत।
बीज परे फल अच्छा देत।।

भावार्थ - खेत की जुताई जितनी गहरी होती है, बीज पड़ने पर वह उतना ही अच्छा फल देता हैं।

[237]

जोत न मानै अरसी चना।
कहा न मानै हरामी जना।।

भावार्थ - अलसी और चना अधिक जुताई को अच्छा नहीं मानते, ठीक उसी प्रकार जैसे दुष्ट जन कथन या सीख को अच्छा नहीं मानते।

[238]

जब सैल खटाखट बाजै।
तब चना खूब ही गाजै।।

शब्दार्थ - सैल - हल के किनारे पर लगाई जाने वाली खूँटी।

भावार्थ - जिस खेत में ढेले अधिक हों और जुताई के समय बैलों के जुए की सैल खट-खट बजती रहे, उस खेत में चने की अच्छी पैदावार होगी।

[239]

जोंधरी जोतै तोड़ मड़ोर।
तब वह डारै कोठिला फोर।।

भावार्थ - जोंधरी के खेत की जुताई अधिक करनी चाहिए। यदि किसान ने ऐसा किया तो पैदावार इतनी अधिक होगी कि कोठिले में नहीं समायेगी।

[240]

तेरह कातिक तीन अषाढ़।
जो चूका सो गया बजार।।

शब्दार्थ - चूका - भूलना।

भावार्थ - जो किसान तेरह बार कार्तिक और तीन बार आषाढ़ में खेत जोतने से चूका, वह बाजार से ही अन्न खरीद कर खायेगा अर्थात् जो ऐसा नहीं करेगा उसे अन्न नहीं मिलेगा।

[241]

थोर जोताई बहुत हेंगाई, ऊँचे बाँधै आरी।
खेत जो तोरे उपजै नाहीं, घाघै दीह गारी।।

शब्दार्थ - थोर - कम। हेंगाई - पाटे से सिरावन देना। आरी - मेंड़।

भावार्थ - कम जुताई से और बहुत बार हेंगाई करने से एवं मेंड़ बाँधने से अन्न की उपज अच्छी होती हैं। घाघ कहते हैं कि यदि ऐसा न हो तो मुझे गाली देना।

[242]

थोड़ा जोतै बहुत हेंगावै, ऊँच न बाँधै आड़।
ऊँचे पर खेती करै, पैदा होवै भाड़।।

शब्दार्थ - आड़ - मेंड़। भाड़ - भड़भाड़ (घमोय या सत्यानाशी, एक काँटेदार चितकबरा पत्ती वाला पौधा)।

भावार्थ - कम जोते और अधिक सिरावन दे, ऊँची जगह पर खेती करे और मेड़ न वाँधे तो वहाँ भड़भाड़ ही पैदा होंगे।

[243]

दाना अरसी, बोया सरसी।

शब्दार्थ - दाना - पोस्ता।

भावार्थ - पोस्ता और अलसी के खेत की मिट्टी सरस अर्थात् नमी वाली होनी चाहिए, तब उसके बीज जमते हैं और अच्छी फसल होती है।

[244]

दस बाहों का माड़ा।
बीस बाहों का गाँड़ा।।

शब्दार्थ - बाहों- जुताई। गाँड़ा - ईख।

भावार्थ - किसान को अच्छी पैदावार के लिए गेहूँ के खेत को दस बार और ईख के खेत को बीस बार जोतना चाहिए।

[245]

नौ नसी - एक कसी।।

भावार्थ - नौ बार हल से जोतने से अच्छा एक बार फावड़े से मिट्टी को उलट दे।

[246]

बाहे क्यों न असाढ़ यक बार।
अब क्यों बाहे बारम्बार।।

भावार्थ - यदि गेहूँ बोने वाले खेत को आषाढ़ मास में एक बार नहीं जोता तो बोते समय कई बार जोतने से कोई फायदा नहीं होता है।

[247]

बाली छोटी भई काहें।
बिना असाढ़ के दो बाहें।।

भावार्थ - गेहूँ की फसल में छोटी बाली होने का प्रमुख कारण है कि उसे आषाढ़ में दो बार नहीं जोता गया था।

[248]

बिड़रै जोत पुराने बिया।
ताकी खेती छिया - बिया।।

भावार्थ - जिस खेत की जुताई घनी न हुई हो और बीज पुराना डाला गया हो, वह खेती नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगी अर्थात् उसमें कुछ भी पैदा नहीं होगा।

[249]

माघ महीना बोइये झार।
फिर राखौ रब्बी की डार।।

शब्दार्थ - झार-झाड़ - बुहारकर।

भावार्थ - माघ मास तक उड़द के बीज चुनकर रखो। फिर खेत को रबी की फसल के लिए जोत कर तैयार करो।

[250]

मेड़ बाँध दस जोतन दे।
दस मन बिगहा मोसे ले।।

भावार्थ - यदि खेत की मेड़ बाँधकर अच्छी तरह से जुताई कर दी जाये तो घाघ का कहना है कि दस मन बीघा पैदावार मुझसे ले लो।

[251]

माघ में झारै जेठ में जारै,
भादौं सारै-तेकर मेहरी डेहरी पारै।।

शब्दार्थ - जारै-जलना। सारै-सड़ना। मेहरी-पत्नी। डेहरी-कोठिला (मिट्टी का बड़ा पात्र)

भावार्थ - माघ में खेत साफ करना चाहिए, फिर जेठ में उसी हाल में छोड़ देना चाहिए जिससे घास और खेत की मिट्टी जल जाय। फिर भादों में खेत जोतकर सड़ने के लिए छोड़ दे, जिस किसान ने ऐसा किया उसकी पत्नी को अन्न रखने के लिए कोठिला बनाना पड़ेगा।

[252]

मैदे गेहूँ ढेले चना।।

भावार्थ - गेहूँ के खेत की मिट्टी मैदे की तरह बारीक होनी चाहिए एवं चने के खेत में ढेले हों, तभी पैदावार अच्छी होती है।

[253]

हर लगा पताल।
तो टूट गया काल।।

भावार्थ - यदि हल खूब गहराई तक चला गया अर्थात् जुताई अच्छी हुई तो अकाल का भय समाप्त हो जाता है।

बोवाई सम्बन्धी कहावतें

[254]

अगहर खेती अगहर मार।
घाघ कहैं तौ कबहुँ न हार।।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि खेती और मारपीट के मामले में पहल करने वाला व्यक्ति कभी हारता नहीं है। लड़ाई-झगड़े में पहले मारने की नीति को सर्वत्र श्रेय दिया जाता है लेकिन खेती के मामले में हमेशा अगहर होना लाभदायक नहीं होता, फिर भी लाभ की सम्भावना अधिक होती है।

[255]

आगिल खेती आगे आगे।
पाछिल खेती भागे जोगे।।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि आगे बोई जाने वाली फसल पहले ही तैयार हो जाती है और समय निकल जाने पर पीछे बोई जाने वाली फसल भाग्य के ही भरोसे होती है।

[256]

अद्रा रेड़ पुनर्बसु पाती।
लाग चिरैया दिया न बाती।।

शब्दार्थ - रेड़-धान का उस स्थिति में पहुँचना जब बालें निकलती हैं। पाती-पत्ती।

भावार्थ - आर्द्रा नक्षत्र में बोये हुए धान के रेड़े मोटे होते हैं और यदि पुनर्वसु में बोवाई हुई तो सिर्फ पत्तियाँ ही अच्छी होती हैं। चिरैया (पुष्य) नक्षत्र में यदि धान की बोवाई हुई तो पैदावार इतनी कम होती है कि दिया-बत्ती तक का ठिकाना नहीं रह जाता।

[257]

अद्रा धान पुनर्बसु पैया।
गया किसान जो रोप चिरैया।।

भावार्थ - धान को आर्द्रा नक्षत्र में रोपने से फसल अच्छी होती है। पुनर्वसु नक्षत्र में रोपने पर केवल पैया (बिना चावल का धान) ही हाथ आयेगा और जो किसान धान की रोपाई पुष्य नक्षत्र में करते हैं तो कुछ भी हाथ नहीं लगता है।

[258]

आधे हथिया मूरि-मुराई।
आधे हथिया सरसों राई।।

भावार्थ - हस्त नक्षत्र के पूर्वार्द्ध में मूली और उत्तरार्द्ध में सरसों, राई आदि के बीज की बोवाई करनी चाहिए।

[259]

अद्रा में जो बोवै साठी।
दुःखै मार निकारै लाठी।।

भावार्थ - जो किसान आर्द्रा नक्षत्र में साठी धान बो दे तो वह दरिद्रता को घर से डण्डे मार कर निकाल सकता है।

[260]

अगहन बवा।
कहूँ मन कहूँ सवा।।

भावार्थ - यदि अगहन मास में गेहूँ, जौ की बोवाई होती है तो कहीं बीघा पीछे मन भर और कहीं सवा मन की उपज होती है अर्थात् अगहन में बोवाई से पैदावार कम हो जाती है।

[261]

अगहन जो कोउ बोवै जौवा।
होई तो होइ नहिं खावै कौवा।।

भावार्थ - अगहन मास में जौ की बोवाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि इस मास में बोने से फसल ठीक नहीं होती है और उसे कौवे ही खा जाते हैं।

[262]

ऊख सरवती दिवला धान।
इन्हें छाड़ि जनि बोओ आन।।

शब्दार्थ - सरवती-सरौती नामक ईख।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि ईख में सरौती ईख और धान में देहुला नामक धान बोना चाहिए क्योंकि इनमें पैदावार अधिक होती है। अतः इन्हीं की बुआई करनी चाहिए अन्य की नहीं।

[263]

ऊगी हरनी फूले कास।
अब का बोये निगोड़े मास।।

शब्दार्थ - निगोड़े-आलसी, निठल्ला। मास-उड़द। हरनी-अगस्त नामक तारा।

भावार्थ - अब आसमान में अगस्त तारे का उदय हो गया है और 'कास' भी फूल गये है तो ऐ निठल्ला किसान! अब उड़द बोने से क्या लाभ ?

[264]

कातिक बोवै अगहन भरै।
ताको हाकिम फिर का करै।।

भावार्थ - जो किसान कार्तिक में रबी की फसल ठीक समय पर बोता है और अगहन में उसकी सिंचाई करता है तो अफसर उसका क्या कर सकता है ? उसकी मालगुजारी का भुगतान हो जाएगा क्योंकि पैदावार अच्छी होगी।

[265]

कोठिला बैठी बोली जई, आधे अगहन काहे न बई।
जो कहुँ बोते बिगहा चार, तो मैं डरतिउँ कोठिला फार।।

शब्दार्थ - जई - जौ की जाति का एक अनाज जो प्रायः घोड़ों को दिया जाता है।

भावार्थ - कोठिला में भरी जई कहती है कि मुझे आधे अगहन में क्यों नहीं बोया ? यदि चार बीघे में बो देते तो मैं कोठिला फोड़ डालती। यदि आधे अगहन में जई की बोवाई चार बीघे भी की गई होती तो घर में अन्न रखने की जगह नहीं मिलती।

[266]

कदम-कदम पर बाजरा, मेढक कुदौनी ज्वार।
ऐसे बोवै जो कोई, घर भर भरै बखार।।

शब्दार्थ - बखार-अनाज भंडारण का स्थान।

भावार्थ - एक-एक कदम पर बाजरा और मेढक की कुदान भर की दूरी पर ज्वार बोने वाले किसान के घर में अन्न से बखार भर जायेंगी।

[267]

कुड़हल भदईं बोओ यार।
तब चिउरा की होय बहार।।

शब्दार्थ - कुड़हल-वह खेत जो जेठ में धान बोने के लिए तैयार किया जाता है अथवा धरती खोद कर।

भावार्थ - यदि कुड़हल जमीन में भदई धान की बोवाई की जाये तो पैदावार अधिक होती है अर्थात् चिउरा खाने को खूब मिलता है।

[268]

गाजर गंजी मूरी,
तीनों बोवै दूरी।

भावार्थ - गाजर, गंजी (शकरकंद) और मूली इन तीनो को दूर-दूर बोना चाहिए।

[269]

घनी-घनी जब सनई बोवै।
तब सुतरी की आसा होवै।।

भावार्थ - सनई को पास-पास बोने से पैदावार अधिक होती है जिससे सुतली की आशा हो जाती है।

[270]

चित्रा गोहूँ अद्रा धान,
न उनके गेरुई न इनके घाम।

भावार्थ - चित्रा नक्षत्र में गेहूँ और आर्द्रा नक्षत्र में धान बोना चाहिए। इन नक्षत्रों में बोने से गेहूँ में न तो गेरुई रोग लगता है और न ही धान को धूप लगती है अर्थात् धान धूप लगने से भी सूखता नहीं है।

[271]

चना चित्तरा चौगुना।
स्वाती गेहूँ होय।।

भावार्थ - यदि चना की बोवाई चित्रा नक्षत्र में एवं गेहूँ की बोवाई स्वाती नक्षत्र में की जाये तो पैदावार चौगुनी बढ़ जाती है।

[272]

छीछी भली जौ चना, छीछी भली कपास।
जिनकी छीछी ऊखड़ी, उनकी छोड़ो आस।।

शब्दार्थ - छी-छी-बीड़र, कुछ दूर-दूर।

भावार्थ - यदि जौ, चना और कपास को दूर-दूर बोयें तो अच्छा होता है परन्तु यदि ईख बीड़र हो गई अर्थात् दूर-दूर हो गई तो उसके पैदावार की आशा छोड़ देनी चाहिए।

[273]

जो कोई अगहन बोवै जौआ।
होइ त होइ नहिं खावै कौआ।।

भावार्थ - जो किसान अगहन मास में जौ बोता है तो जौ हुआ तो हुआ, बर्ना उसे कौवे ही खाते हैं अर्थात् वह फसल भाग्य के भरोसे ही होती है।

[274]

जो तू भूखा माल का।
तो ईख करे नाल का।।

भावार्थ - यदि किसान धन का भूखा है तो उसे नाले या नहर की ओर ईख बोनी चाहिए। सिंचाई की सुविधा के कारण फसल अच्छी होगी।

[275]

जब बर्र बरौठे आई।
तब रबी की होय बोवाई।।

शब्दार्थ - बर्रे-ततैया। हाड़ी। बरौठे-दालान में।

भावार्थ - जब बर्रे उड़ती हुई दालान में बैठने लगें, तब समझ लेना चाहिए कि रबी की बोवाई का समय आ गया है।

[276]

जौ गेहूँ बोवै पाँच पसेर, मटर के बीघा तीसै सेर।
बोवै चना पसेरी तीन, तिन सेर बीघा जोन्हरी कीन।।

दो सेर मोथी अरहर मास, डेढ़ सेर बिगहा बीज कपास।।
पाँच पसेरी बिगहा धान, तीन पसेरी जड़हन मान।।

सवा सेर बीघा साँवाँ मान, तिल्ली सरसों अँजुरी जान।।
बर्रै कोदो सेर बोआओ, डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ।।

डेढ़ सेर बजरा बजरी साँवाँ, कोदौ काकुन सवैया बोवा।।
यहि विधि से जब बोवै किसान, दूना लाभ की खेती जान।।

शब्दार्थ - मोथी-मूँग की तरह का एक अन्न। मास-उड़द।

भावार्थ - घाघ के अनुसार प्रति बीघा जौ-गेहूँ पचीस सेर, मटर तीस सेर, चना पन्द्रह सेर, ज्वार तीन सेर, मोथी, अरहर और उरद दो सेर, कपास डेढ़ सेर, धान पचीस सेर, जड़हन पन्द्रह सेर, साँवाँ सवा सेर, तिल और सरसों अँजुलि भर, बर्रे और कोदौ एक सेर, अलसी डेढ़ सेर, बाजरा, बजरी (जोंधरी) और साँवाँ डेढ़ सेर और कोदौ, काकुन सवा सेर के हिसाब से बोना चाहिए। ऐसा करने वाला किसान दूना लाभ कमाता है।

[277]

नरसी गेहूँ सरसी जवा।
अति के बरसे चना बवा।।

शब्दार्थ - नरसी - नीरस या शुष्क।

भावार्थ - गेहूँ की बोवाई खुश्क खेत में और जौ की तर खेत में करनी चाहिए, लेकिन यदि पानी अधिक बरसे तो उसमें चना बोना चाहिए।

[278]

पूरबा में जिन रोपो भइया।
एक धान में सोरह पइया।।

भावार्थ - हे किसान भाई ! पूर्वा नक्षत्र में धान की रोपाई कभी न करो क्योंकि एक धान में सोलह पइया (तत्त्वहीन बीज) होता है अर्थात् पूर्वा नक्षत्र में रोपने से फसल में दाना नहीं पड़ता है।

[279]

पहिले काँकरि पीछे धान।
उसको कहिये पूर किसान।।

शब्दार्थ - काँकरि - ककड़ी।

भावार्थ - जो किसान पहले ककड़ी बोकर फिर धान बोता है उसे पूर्ण किसान समझा जाता है क्योंकि जो चतुर किसान होता है वही ऐसा करता है।

[280]

पुक्ख पुनर्वस बोवै धान।
असलेखा जोन्हरी परमान।।

भावार्थ - पुष्य एवं पुनर्वसु नक्षत्र में धान एवं अश्लेषा नक्षत्र में जोन्हरी (ज्वार) बोने से फसल अच्छी होती है।

[281]

पूस न बोये।
पीस खाये।।

भावार्थ - पूस में बोने से पीसकर खा लेना अच्छा है।

[282]

बोवै बजरा आये पुक्ख।
फिर मन कैसे पावै सुक्ख।।

शब्दार्थ - सुक्ख-सुख।

भावार्थ - यदि कोई कृषक पुष्य नक्षत्र लगने पर बाजरा बोता है तो उसकी पैदावार न के बराबर होगी और उसे सुख की प्राप्ति नहीं होगी।

[283]

बाड़ी में बाड़ी करै, करै ईख में ईख।
ये घर ओइसे जायँगे, सुनै पराई सीख।।

शब्दार्थ - बाड़ी-कपास। ओइसे-उसी प्रकार।

भावार्थ - जो कपास के खेत में पुनः कपास और ईख के खेत में दूसरे वर्ष भी ईख बोता हैं उसका घर वैसे ही नष्ट हो जाता है जैसे पराई सीख सुनने वाले का घर नष्ट हो जाता है।

[284]

बुध बउनी।
सुक लउनी।।

भावार्थ - किसान को फसल की बोवाई बुध एवं कटाई शुक्र के दिन करनी चाहिए, ऐसा घाघ का मानना है।

[285]

बोओ गेहूँ काट कपास।
होवे न ढेला न होवे घास।।

भावार्थ - गेहूँ की बोवाई कपास को काटकर की जा सकती है किन्तु किसान को यह ध्यान रखना चाहिए कि खेत में ढेले और घास न हों।

[286]

बुध वृहस्पति दो भलो, सुक्र न भले बखान।
रवि मंगल बौनी करै, द्वार न आवै धान।।

भावार्थ - बोवाई के लिए बुधवार और वृहस्पतिवार सबसे शुभ दिन होते हैं जबकि शुक्रवार अच्छा नहीं होता है और यदि किसान ने रविवार या मंगलवार को खेत की बोवाई की तो बीज भी लौट कर नहीं आता, ऐसा घाघ का मानना है।

[287]

बोबत बनै तो बोइयो।
नहीं बरी बना कर खइयो।।

भावार्थ - उड़द को यदि बोते बने तभी बोना चाहिए अन्यथा बड़ी-बड़ा बना कर खा लेना चाहिए। व्यर्थ खेत में नहीं फेंकना चाहिए।

[288]

मारूँ हरनी तोडूँ कास।
बोऊँ उर्द हथिया की आस।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि अगस्त नामक तारे के उदय की और कास में फूल लगने की चिन्ता छोड़कर हस्त नक्षत्र लगते ही उर्द बो देनी चाहिए।

[289]

मक्का जोन्हरी औ बजरी।
इनको बोवे कुछ बिड़री।।

भावार्थ - मक्का, जोन्हरी (ज्वार) और बाजरा को कुछ बीड़र अर्थात् कुछ दूर-दूर पर ही बोना चाहिए।

[290]

मकड़ी घासा पूरा जाला।
बीज चने का भरि-भरि डाला।।

भावार्थ - जब मकड़ी घास पर जाला लगाने लगे तब चना बोना चाहिए।

[291]

मघा मारै पुरवा सँवारै।
उत्तरा भर खेत निहारे।।

भावार्थ - यदि किसान मघा में जड़हन की बोवाई कर दे और पूर्वा भर देखभाल करे तो उत्तरा में उसका खेत हरा-भरा रहता है।

[292]

या तो बोओ कपास औ ईख।
ना तो माँग के खाओ भीख।।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि किसान को कपास और ईख की खेती अवश्य करनी चाहिए, जो ऐसा नहीं करते वे भीख मांगकर ही काम चलायेंगे।

[293]

रोहिनि मृगसिरा बोये मका। उरद मडुवा दे नहिं टका।।

मृगसिरा में जो बोये चना। जमींदार को कुछ नहीं देना।।

बोये बाजरा आये पुख। फिर मन में मत भोगो सुख।।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र में मक्का, उड़द और मडुवा बोने से पैदावार अच्छी नहीं होती है। यदि मृगशिरा में चना बो दिया तो जमींदार को देने भर का कुछ नहीं होगा। बाजरे को कभी भी पुष्य नक्षत्र में नहीं बोना चाहिए। ऐसा करने से किसान को टके भर का फायदा नहीं होता है।

[294]

रोहिनी खाट मृगसिरा छउनी।
अद्रा आये धान की बोउनी।।

शब्दार्थ - खाट-खटिया, चारपाई। छउनी-छप्पर।

भावार्थ - रोहिणी नक्षत्र में चारपाई बिनना और मृगशिरा नक्षत्र में छप्पर छाना उत्तम माना गया है क्योंकि आर्द्रा नक्षत्र आते ही धान की बोउनी (बुवाई) शुरू करनी पड़ती है।

[295]

सावन सावाँ अगहन जवा।
जितना बौवें उतना लवा।।

शब्दार्थ - उतना लवा-उतना ही लेना।

भावार्थ - सावन में सावाँ और अगहन में जौ, तौल में जितना बोया जायेगा, उतना ही काटा जायेगा अर्थात् इस समय बोवाई करने से फसल अच्छी नहीं होती है।

[296]

सन घना बन बेगरा, मेढक फन्दे ज्वार।
पैर पैर से बाजरा, करै दरिद्रै पार।।

शब्दार्थ - बन-कपास।

भावार्थ - सनई को घनी, कपास को बीड़र अर्थात् दूर-दूर, ज्वार को मेढक की कुदान के फासले पर और बाजरा एक-एक कदम की दूरी पर बोना चाहिए। अगर ऐसी बोवाई हुई तो वह दरिद्रता को दूर कर देती है।

[297]

साठी में साठी करै, बाड़ी में बाड़ी।
ईख में जो धान बौवै; फूँको वाकी दाढ़ी।।

भावार्थ - जो साठी धान के खेत में फिर धान बोता है और कपास के खेत में कपास और ईख के खेत में धान बोता है तो अच्छा नहीं करता। इससे पैदावार कम हो जाती है।

[298]

हरिन फलांगुन काकरी, पैगे पैग कपास।
जाय कहो किसान से, बोवै घनी उखार।।

शब्दार्थ - उखार-ईख, गन्ना।

भावार्थ - हिरण के एक छलांग की दूरी पर ककड़ी और मनुष्य के कदम-कदम की दूरी पर कपास का बीज बोना चाहिए। घाघ का कहना है कि किसान से जाकर कहो कि ईख को घनी बोवे।

[299]

हस्त न बज री, चित्रा न चना।
स्वाति न गोहूँ, बिसाखा न धना।।

भावार्थ - हस्त नक्षत्र में बाजरा, चित्रा में चना, स्वाति में गेहूँ और विशाखा नक्षत्र में धान बोने से फसल चौपट हो जाती है।

सिंचाई सम्बन्धी कहावतें

[300]

काले फूल न पाया पानी।
धान मरा अध बीच जवानी।।

भावार्थ - यदि धान का फूल काला हो गया हो और उसे पानी नहीं मिला तो समझो वह आधी जवानी में ही मर जायेगा अर्थात् फसल नष्ट हो जायेगी।

[301]

तरकारी है तरकारी।
या में पानी की अधिकारी।।

भावार्थ - तरकारी को सदैव तर रखना चाहिए। इसमें सिंचाई की अधिकता होनी चाहिए।

[302]

धान, पान, उखेरा।
तीनों पानी के चेरा।।

भावार्थ - धान, पान और ईख तीनों पानी के गुलाम हैं अर्थात् इनकी फसल में अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है।

[303]

धान, पान औ खीरा।
तीनों पानी के कीरा।।

भावार्थ - धान, पान और खीरा ये तीनों पानी के कीड़े हैं। ये पानी के ऊपर ही निर्भर होते है।

[304]

सभी किसानी हेठी।
अगहनिया पानी जेठी।।

भावार्थ - जो किसान अगहन मास में खेत की सिंचाई करता है, वह अन्य किसान से श्रेष्ठ होता है क्योंकि उसकी फसल अच्छी होती है।

खाद सम्बन्धी कहावतें

[305]

खेते पाँसा जो न किसाना।
उसके घरे दरिद्र समाना।।

शब्दार्थ - पाँसा - खाद, पास।

भावार्थ - जो कृषक अपने खेत में खाद नहीं डालता, उसके घर में दरिद्रता का वास होता है। एक अन्य आशय यह भी है कि जो किसान कभी खेत के समीप नहीं जाता है सदा दूसरों से ही खेती कराता है उसके घर में दरिद्रता निवास करती है।

[306]

खाद परै तो खेत।
नहीं तो कूड़ा रेत।।

भावार्थ - यदि खेत में देशी खाद पड़े तभी खेत खेती के योग्य बनता है अन्यथा कूड़ा-करकट और रेत के समान हो जाता है।

[307]

खेती करै खाद से भरै।
सौ मन कोठिला में लै धरै।।

भावार्थ - अच्छी खेती के लिए अधिक खाद की आवश्यकता होती है। यदि खेत में खाद अधिक है तो पैदावार इतनी अधिक होगी कि कोठिला अन्न से भर जायेंगे।

[308]

गोबर, चोकर चकवर रूसा।
इनको छोड़े होय न भूसा।।

भावार्थ - यदि खेत में गोबर, चोकर, चकवँड़ और अडुसा की पत्तियाँ छोड़ दी जाएँ तो भूसा कम होता है अर्थात् अन्न की उपज अच्छी होती है।

[309]

गोबर मैला पाती सड़ै।
तब खेती में दाना पड़ै।।

भावार्थ - खेत में गोबर, पाखाना और पत्तियों के सड़ने से पैदावार बढ़ जाती है।

[310]

गोबर मैला नीम की खली।
यासे खेती दूनी फली।।

भावार्थ - किसान को अपने खेत में गोबर, पाखाना और नीम की खली डालनी चाहिए। इससे पैदावार दूनी हो जाती है।

[311]

जेकरे खेत पड़ा नहि गोबर।
वहि किसान को जानो दूबर।।

भावार्थ - यदि किसान ने अपने खेत में गोबर नहीं डाला तो उसे कमजोर समझना चाहिए।

निराई-गुड़ाई सम्बन्धी

[312]

ऊख गोड़िके तुरत दबावै।
तो फिर ऊख बहुत सुख पावै।।

भावार्थ - किसान को ईख गोड़ कर तुरन्त दबा देना चाहिए। इससे ईख को बहुत सुख मिलता है अर्थात् पैदावार अच्छी होती है।

[313]

गेहूँ बाहा धान बिदाहा।
ऊख गोड़ाई से है आहा।।

शब्दार्थ - गाहा - जुताई। आहा - अधिक।

भावार्थ - गेहूँ की कई जुताई करने से, धान को बिदाहने (पानी भरे खेत में हल चलाने) से और ईख के गोड़ने से इनकी पैदावार बढ़ जाती है।

[314]

चना सींच पर जब हो आवै।
ताको पहिले तुरत खुँटावै।।

भावार्थ - चने की फसल जब सिंचाई के लायक हो जाये तो उसे तुरन्त खुटाना चाहिए। इससे उसकी पैदावार बढ़ जाती है।

[315]

जो कपास को नाहीं गोड़ी।
ताके हाथ न आवै कौड़ी।।

भावार्थ - जिस किसान ने कपास की थोड़ी सी भी गोड़ाई नहीं की उसके हाथ एक कौड़ी भी नहीं लगेगी।

[316]

तीन पानी तेरह गोड़।
तब देख ऊखी कै पोर।।

भावार्थ - यदि ईख को तीन बार सींचा जाये और तेरह बार गोड़ा जाये तो ईख के पोर लम्बे होते हैं अर्थात् फसल बहुत अच्छी होती है।

[317]

दो पत्ती क्यों न निराये।
अब बीनत क्यों पछिताये।।

भावार्थ - जब कपास में दो पत्तियाँ निकली थीं तभी उसकी निराई क्यों नहीं की? अब कपास चुनते हुए क्यों पछताते हो अर्थात् कपास के पौधे में जब दो पत्तियाँ निकलें तभी उसकी निराई करवा देनी चाहिए। इससे फसल अच्छी होती है।

[318]

सावन भादों खेत निरावै।
तब गृहस्थ बहुतै सुख पावै।।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि यदि किसान सावन और भादों मास में खेत की निराई करवा दे तो आगे उसे बहुत सुख मिलेगा।

फसल रोग सम्बन्धी कहावतें

[319]

ऊख कनाई काहे से।
स्वाती क पानी पाये से।।

शब्दार्थ - कनाई-ईख का एक रोग जिसमें उसके अन्दर के रेशे लाल हो जाते हैं और मिठास भी कम हो जाती है।

भावार्थ - स्वाती नक्षत्र का पानी पाने से ईख कन्नी हो जाती है अर्थात् उसमें रोग लग जाता है।

[320]

कुम्भे आवै मीने जाय।
पेड़ी लागै पातौ खाय।।

भावार्थ - कुम्भ राशि में गेहूँ की फसल में गेरुई रोग लगने लगता है और मीन राशि में समाप्त हो जाता है। यह रोग तने से शुरू होकर पत्तियों को खा जाता है।

[321]

कर्क बुवावै काकरी, सिंह अबोनो जाय।
ऐसा बोले भड्डरी, कीड़ा फिर फिर खाय।।

भावार्थ - ककड़ी की बोवाई कर्क राशि में करनी चाहिए क्योंकि सिंह राशि में बोने से उसमें कीड़ा बार-बार लग जाता है, ऐसा भड्डरी का कथन है।

[322]

गोहूँ गेरुई गाँधी धान।
बिना अन्न के मरा किसान।।

भावार्थ - जब गेरुई नामक रोग गेहूँ में और गन्धी नामक कीड़ा धान में लग गया तब समझो कि किसान को अन्न मिलने वाला नहीं है। वह अन्न के बिना ही मरेगा।

[323]

चना में सरदी बहुत समाई।
ताको जान गथैला खाई।।

भावार्थ - चना अधिक पानी नहीं चाहता क्योंकि उसमें सर्दी अधिक लगती है और जब ऐसा हो तो समझो उसको गंधेला नामक कीड़ा खा जायेगा और पैदावार कम हो जायेगी।

[324]

जेकरे ऊखर लगै लोहाई।
तेहि पर आवै बड़ी तबाही।।

शब्दार्थ - लोहाई - लाही या सूखारोग।

भावार्थ - जिस किसान के ईख में सूखा रोग लग गया, उसकी फसल पूरी तरह नष्ट हो जाती है और किसान तबाह हो जाता है।

[325]

नीचे ओद ऊपर बदराई,
घाघ कहै गेरुई अब धाई।।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि जब खेत नीचे से गीला हो और ऊपर बादल कई दिनों तक छाये रहें तो समझो कि अनाज (गेहूँ) में गेरुई नामक रोग लग जायेगा।

[326]

माघ पूस बहै पुरवाई।
तब सरसों का माहो खाई।।

शब्दार्थ - माहो - एक प्रकार का कीड़ा।

भावार्थ - पूस और माघ महीने में यदि पुरवा हवा चली तो सरसों में माहो लग जाता है और फसल नष्ट हो जाती है।

[327]

मघा में मक्कर पुरवा डाँस।
उत्तरा में भई सबकी नास।।

भावार्थ - मघा नक्षत्र में मकड़ा-मकड़ी और पूर्वा में डँस नामक कीड़े पैदा होते हैं और उत्तरा में ये सब स्वतः नष्ट हो जाते हैं।

खेत रक्षा सम्बन्धी कहावतें

[328]

खेती वह जो खड़ा रखावै।
सूनी खेती हरिना खावै।।

भावार्थ - खेती वही है जिसकी किसान खड़े होकर रखवाली करे। यदि सूना छोड़ देगा तो हिरन चर जाएँगे।

[329]

खेती तो उनकी, जे करे अन्हान-अन्हान।
और उनकी क्या खेती, जो देखे साँझ-बिहान।।

शब्दार्थ - अन्हान-दिन।

भावार्थ - सच्चे अर्थों में खेती उस किसान की है जो दिन-दिन भर खेत में रहता है और जो उसकी ठीक से देखभाल करता है। जो साँझ सबेरे ही देखने जाता है उसकी खेती नष्ट हो जाती है।

कटाई सम्बन्धी कहावतें

[330]

साठी होवै साठवें दिना।
जब दैव बरीसे रात दिना।।

भावार्थ - जब पानी रात दिन बरसता रहे तब साठी धान केवल साठ दिनों में ही तैयार हो जाता है।

[331]

सात सेवाती धान उपाठ।।

भावार्थ - स्वाती नक्षत्र के सात दिन बाद धान पककर तैयार हो जाता है।

मड़ाई सम्बन्धी कहावतें

[332]

गेहूँ जौ जब पछुवाँ पावै।
तब जल्दी से दायाँ जावै।।

भावार्थ - यदि पछुवा हवा चल रही है तो गेहूँ और जौ की मड़ाई जल्दी हो जाती है क्योंकि उसका ठंडल जल्दी टूट जाता है।

[333]

दो दिन पछुवाँ छः पुरवाई। गेहूँ जव को लेव दँवाई।।
ताको बाद ओसावै सोई। भूसा दाना अलगै होई।।

भावार्थ - पछुवा हवा में दो दिन और पुरवा में छः दिन गेहूँ एवं जौ की मड़ाई कर लेनी चाहिए। इसके बाद मड़ाई करने के बाद ओसाने से उसका भूसा और दाना अलग होता है।

[334]

पछिवाँ हवा ओसावै जोई।
घाघ कहै घुन कबहुँ न होई।।

भावार्थ - यदि पछुवा हवा में अनाज को ओसाया जाय तो घाघ के अनुसार उसमें कभी भी घुन नहीं लगेगा।

पैदावार सम्बन्धी कहावतें

[335]

अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवै संजूत।
तो भाखै यों भड्डरी, निपजै नाज बहूत।।

भावार्थ - भड्डरी कहते हैं कि वैशाख में अक्षय तृतीया के दिन यदि गुरुवार हो तो अन्न अधिक पैदा होगा।

[336]

आधे चित्रा फूटा धान।
विधि का लिखा न होवै आन।।

शब्दार्थ - फूटा-बालें निकलना।

भावार्थ - यदि चित्रा नक्षत्र के आधा निकल जाने पर धान फूटा हो, अर्थात् उसमें बालें निकलती हैं तो उसकी पैदावार विधाता के ही हाथ में है।

[337]

ईख तिस्सा।
गोहूँ बिस्सा।।

भावार्थ - ईख की पैदावार तीस गुनी और गेहूँ की बीस गुनी होती है।

[338]

कुही अमावस मूल बिन, बिन रोहिनि अखतीज।
स्रवन बिना हो स्रावनी, आधा उपजै बीज।।

शब्दार्थ - स्रावनी-सावन की पूर्णिमा।

भावार्थ - यदि अमावस मूल नक्षत्र में न पड़े, अक्षय तृतीया को रोहिणी न हो और श्रावण पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र न पड़े तो बीज आधा उगेगा अर्थात् पैदावार कम होगी।

[339]

गेहूँ बाहे चना दलाये।
धान बिगाहे मक्की निराये।।
ऊख कसाये।

भावार्थ - गेहूँ के खेत को कई बार जोतने से, चने को खोंटने से, धान के खेत को बिदाहने से (धान के उग जाने पर फिर जुतवा देने से), मक्के को निराने से और ईख को बोने से पहले पानी में छोड़ देने से पैदावार अच्छी होती है।

[340]

बैसाख सुदी प्रथमै दिवस, बादर बिज्जु करेइ।
दामा बिना बिसाहिजै, पूरा साख भरेइ।।

भावार्थ - यदि वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को आसमान में बादल हों और बिजली चमक रही हो तो उस वर्ष ऐसी पैदावार होगी कि अन्न खरीदने वाला कोई नहीं मिलेगा।

[341]

सावन सूखे धान,
फागुन सूखे गोहूँ।

भावार्थ - यदि सावन में सूखा पड़ जाये तो धान हो सकता है और फागुन में सूखा पड़ जाये तो गेहूँ की पैदावार हो सकती है।

पशु सम्बन्धी कहावतें

[342]

अमहा जबहा जोतहु जाए।
भीख माँगि के जाहु बिलाए।।

भावार्थ - यदि किसान ने अमहा और जबहा नस्ल वाले बैलों से खेत की जुताई की तो उसे भीख ही माँगनी पड़ेगी और अन्त में बर्बाद हो जायेगा।

[343]

उजर बरौंनी मुँह का महुआ।
ताहि देखि हरवाहा रोवा।।

भावार्थ - जिस बैल की बरौंनी सफेद और मुँह का रंग पीला हो, उसे देख कर हलवाहा भी रो देता है क्योंकि ऐसे बैल बड़े ही सुस्त एवं आलसी होते हैं।

[344]

एक बात तुम सुनहु हमारी।
बूढ़ बैल से भली कुदारी।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि किसान को कभी भी बूढ़ा बैल नहीं रखना चाहिए उससे अच्छा तो वह कुदाल से ही खेती कर ले।

[345]

एक समय बिधिना का खेल। रहा उसर में चरत अकेल।।
एक बटोही हर हर कहा। ठाढ़े गिरा होस ना रहा।।

भावार्थ - एक गादर बैल कहता है कि ईश्वर की लीला तो देखो; एक बार मैं ऊसर में अकेला चर रहा था। एक आदमी ने 'हर-हर' कहा मैं उसे हल समझ कर बेहोश हो गया।

[346]

करिया काछी धौंरा बान।
इन्हैं छाँड़ि जनि बेसह्यो आन।।

भावार्थ - किसान को बैल खरीदते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि या तो वह सफेद रंग का हो या फिर काली कच्छ (पूँछ के नीचे का भाग) वाला हो।

[347]

कार कछौटी सुनरे बान।
इन्हैं छाँड़ि जनि बेसह्यो आन।।

भावार्थ - काली कच्छ और सुन्दर रंग रूप वाले बैल को ही सदैव खरीदना चाहिए।

[348]

कार कछौटी झबरें कान।
इन्हैं छाँड़ि जनि लीजौ आनि।।

भावार्थ - कृषक को काले कच्छ और झबरे कान वाले बैल को छोड़ कर दूसरा नहीं खरीदना चाहिए।

[349]

घोंची देखै ओहि पार।
थैली खोलै यहि पार।।

भावार्थ - आगे मुड़े सींग वाला बैल यदि नदी के उस पार दिखायी पड़े तो उसे खरीदने के लिए इसी पार से पैसे की थैली खोल लेनी चाहिए अर्थात् यदि महँगा मिले तो भी खरीद लेना चाहिए।

इस कहावत का एक अन्य रूप भी मिलता है -

ओही पार जब देखिह मैना।
एही पार से फेंकिह बैना।।

भावार्थ - यदि मैन (आगे मुड़े सींग) बैल नदी के दूसरे किनारे पर दिखे तो उसका बयाना इस पार से ही कर देना चाहिए।

[350]

छोटा मुँह औ ऐंठा कान।
यहि बैल की है पहचान।।

भावार्थ - किसान को सदैव छोटे मुँह और ऐंठे कान वाले बैलों को खरीदना चाहिए।

[351]

छद्दर कहै मैं आऊँ जाऊँ। सद्दर कहै गुसैयें खाऊँ।।
नौदर कहै में नौ दिस धाऊँ। हित कुटुम्ब उपरोहित खाऊँ।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि जिस बैल के छः दाँत होते हैं वह कहीं ठहरता नहीं, सात दाँत वाला मालिक को ही खा जाता है और नौ दाँत वाला नौ दिशाओं में दौड़ता है एवं किसान के मित्र, कुटुम्बी और पुरोहित को खा जाता हैं।

[352]

छोट सींग औ छोटी पूँछ।
ऐसे को ले लो बेपूछ।।

भावार्थ - यदि बैल के सींग और पूँछ दोनों छोटी हों तो उसे बिना पूछे ही खरीद लेना चाहिए।

[353]

जहँवा देखिहाँ लोह बैलिया।
तहँवा दीह खोलि थैलिया।।

भावार्थ - यदि लाल रंग का बैल दिख जाए तो उसे तत्काल खरीद लेना चाहिए।

[354]

जोतै क पुरबी लादै क दमोय।
हेंगा क काम दे जो देवहा होय।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि जुताई के लिए पूर्वी नस्ल का, लादने के लिए दमोय नस्ल का और हेंगा के लिए देवहा नस्ल का बैल उत्कृष्ट होता है।

[355]

जहाँ परै फुलवा की लार।
झाड़ू लैके बुहारो सार।।

भावार्थ - जिस स्थान पर फुलवा नस्ल के बैल की लार गिरे उसे तत्काल झाड़ू से बुहार देना चाहिए।

[356]

जहाँ देखिहों रूपा धवर।
सुका चार बरु दीह अवर।।

शब्दार्थ - धवर - धवरा या सफेद। सुका - चार आना, चवन्नी।

भावार्थ - सफेद रंग के बैल के लिए चार सुका अर्थात् कुछ अधिक दाम भी देना पड़े तो खरीद लेना चाहिए।

[357]

जहँ देखो पटवा की डोर।
तहवाँ दीजै थैली छोर।।

शब्दार्थ - पटवा - पीला।

भावार्थ - जहाँ पीले रंग का बैल दिखाई पड़े, उसे कुछ अधिक कीमत देकर भी खरीद लेना चाहिए।

[358]

डग डग डोलन फरका पेलन, कहाँ चले तुम बाँड़ा।
पहिले खाबइ रान परोसी, गोसैयाँ कब छाँड़ा।।

शब्दार्थ - फरका - छप्पर।

भावार्थ - जो बैल कटी हुई पूँछ वाला हो, डगमगा कर चलने वाला हो और अपनी लम्बी सींगों से छप्पर को ढकेलने वाला हो, वह इतना अशुभ होता है कि अपने मालिक के साथ-साथ पड़ोसियों को भी खा जाता है।

[359]

नाटा खोटा बेंचि के, चारि धुरंधर लेहु।
आपन काम निकारि के, औरहु मँगनी देहु।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि हे किसान! छोटे-मोटे बैल बेंच कर चार बड़े-बड़े बैल खरीद लो। उनसे अपनी भी खेती हो जायेगी और दूसरों को भी उधार दे सकोगे।

[360]

नीला कंधा बैंगन खुरा।
कबहूँ न निकले कंता बुरा।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि जिस बैल का कंधा नीला और खुर बैंगनी रंग का हो, वह मालिक के लिए कभी बुरा नहीं निकलता है।

[361]

निटिया बरद छोटिया हारी।
दूब कहै मोर काह उखारी।।

शब्दार्थ - निटिया - नाटा या छोटा। हारी - हलवाहा।

भावार्थ - छोटी पूँछ अथवा छोटे कद का बैल और नाटे हलवाहे को देख कर दूब कहती है कि ये मुझे क्या उखाड़ पायेंगे ?

[362]

ना मोहि नाथो उलिया कुलिया, ना मोहिँ नाथो दायें।
बीस बरस तक करौं बरदई, जो ना मिलिहैं गायें।।

भावार्थ - बैल को यदि छोटे-छोटे खेतों में न जोता जाये, न दाहिने जोता जाये और न गाय से मिलने दिया जाये, तो उससे बीस वर्ष तक खेत की जुताई कराई जा सकती है, ऐसा घाघ कहते हैं।

[363]

पतली पेंडुली मोटी रान। पूँछ होय भुइँ में तरियान।।
जाके होवै ऐसी गोई। वाको तकैं और सब कोई।।

शब्दार्थ - गोई - बैलों की जोड़ी।

भावार्थ - जिस बैल की पेंडुली पतली हो, रान मोटी हो और पूँछ लम्बी तथा भूमि को छूती हुई हो, ऐसे बैल की जोड़ी जिस किसान के पास होगी उसकी ओर सबकी दृष्टि जायेगी।

[364]

पूँछ झंपा औ छोटे कान।
ऐसे बरद मेहनती जान।।

भावार्थ - जिस बैल की पूँछ गुच्छेदार हो, कान छोटे हों, उसे अत्यधिक मेहनती समझना चाहिए।

[365]

बरद बिसाहन जाओ कंता। खैरा का जनि देखो दंता।।
जहाँ परै खैरा की खुरी। तो कर डारै चापर पुरी।।

जहाँ परै खैरा की लार। बढ़नी लेके बुहारो सार।।

भावार्थ - किसान की पत्नी कहती है कि हे स्वामी ! बैल खरीदते समय कत्थई रंग के बैल के दाँत नहीं गिनने चाहिये। अर्थात् नहीं खरीदना चाहिए क्योंकि ये मनहूस माने जाते हैं। इनके पैर जहाँ पड़ते हैं वहाँ तबाही आ जाती है। यदि बैल बाँधने की जगह पर उसके मुँह की लार गिर पड़े हो, तो उसे तत्काल झाड़ू से बुहार कर साफ कर देना चाहिए।

[366]

बाँधा बछड़ा जाय मठाय।
बैठा ज्वान जाय तुँदियाय।।

भावार्थ - यदि बछड़ा बराबर बँधा रहे तो वह सुस्त हो जाता है अर्थात् आलसी हो जाता है और जवान व्यक्ति बराबर बैठा रहे तो उसकी तोंद निकल आती है।

[367]

बाँसड़ औ मुँह धौरा।
उन्हें देखि चरवाहा रौरा।।

भावार्थ - उभरी हुई रीढ़ वाला और सफेद मुँह वाला बैल अत्यधिक सुस्त होता है इन्हें देख चरवाहा भी चिल्ला उठता है।

[368]

बरद बेसाहन जाओ कंता।
कबरा का जनि देखो दन्ता।।

भावार्थ - हे स्वामी ! बैल खरीदने जाना तो चितकबरे बैल का दांत न देखना अर्थात् न खरीदना।

[369]

बैल बेसाहन जाओ कंता।
भूरे का मत देखो दन्ता।।

भावार्थ - हे स्वामी ! यदि बैल खरीदने जाना तो भूरे रंग का बैल मत लेना।

[374]

मियनी बैल बड़ो बलवान।
तनिक में करिहै ठाढ़े कान।।

भावार्थ - मियानी नस्ल का बैल अत्यधिक बलवान होता है। क्षण भर में ही वह कान खड़े कर लेता है।

[375]

मुँह का मोट माथ का महुआ। इन्हैं देखि जनि भूल्यो रहुआ।।
धरती नहीं हराई जोतै। बैठ मेंड़ पर पागुर करै।।

भावार्थ - यदि बैल का मुँह मोटा हो और माथा पीला हो, तो उसे देखकर भूले मत रहो अपितु सावधान हो जाओ क्योंकि वह एक हराई भी खेत नहीं जोत सकता और मेंड़ पर बैठा हुआ पागुर करता रहेगा।

[376]

मत कोइ लीजौ मुसरहा बाहन।
खसम मारि के डालै पायन।।

भावार्थ - मुसरहा नस्ल का बैल नहीं खरीदना चाहिए क्योंकि यह मनहूस होता है और मालिक को मार कर पैरों तले डाल देता है।

[377]

लम्बे लम्बे कान। और ढीला मुतान।।
छोड़ो छोड़ो किसान। न तो जात हैं प्रान।।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि जिस बैल के कान लम्बे हों, पेशाब की इन्द्रिय झूलती हुई हो, हे किसान! उसे जल्दी से हटा दो, नहीं तो तुम्हारे प्राण ले लेगा।

[378]

वह किसान है पातर।
जो बरदा राखै गादर।।

शब्दार्थ - गादर - सुस्त, आलसी।

भावार्थ - जिस किसान के पास गादर (सुस्त, आलसी) बैल है वह सदैव निर्बल रहता है।

[379]

सेत रंग औ पीठ बरारी।
ताही देखि जनि भूल्यो लारी।।

भावार्थ - ऐसा बैल जो सफेद रंग का हो तथा पीठ की रीढ़ दबी हुई हो, तो उसे तत्काल खरीद लेना चाहिए।

[380]

सौंख कहै देख मोर कला।
बेमेहरी का करौं घरा।।

शब्दार्थ - सौंख - जिस बैल के माथे पर निशान हो।

भावार्थ - जिस बैल के माथे पर निशान हों, वह अशुभ होता है और किसान के घर को बिना पत्नी के कर देता है। अर्थात् उसकी पत्नी को ही खा जाता है।

[381]

सात दाँत उदन्त को, रंग जो काला होय।
इनको कबहुँ न लीजिये, दाम चहै जो होय।।

भावार्थ - यदि उदन्त बैल हो और उसके सात दाँत हों तथा रंग उसका काला हो तो ऐसे बैल को कभी नहीं लेना चाहिए। चाहे उसका दाम कुछ भी हो।

[382]

सींग मुड़े माथा उठा, मुँह का होवे गोल।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल।।

भावार्थ - जिस बैल के सींग मुड़े हों, मस्तक उठा हुआ हो, मुँह गोल हो, बाल मुलायम हों, कान चंचल हों, वह बैल चलने में तेज और अनमोल होता है।

[383]

समथर जोते पूत चरावै। लगते जेठ भुसौला छावै।।
भादों मास उठे जो गरदा। बीस बरस तक जोतो बरदा।।

भावार्थ - यदि बैल को समथर (बराबर जमीन वाले) खेत में जोते; किसान का बेटा उसे चरावें; जेठ लंगते ही भूसा रखने का घर छा दे, बैल के बैठने की जगह ऐसी सूखी हो कि भादों में वहाँ धूल उड़े, तो उस बैल को बीस साल तक हल में जोता जा सकता है।

[384]

सींग गिरैला बरद के, औ मनई का कोढ़।
ये नीके ना होयँगे, चाहे बद लो होड़।।

भावार्थ - बैल का गिरा हुआ सींग और आदमी का कोढ़, ये कभी ठीक नहीं होते चाहे शर्त लगा लो।

[385]

हिरन मुतान औ पतली पूँछ।
बैल बेसाहो कंत बेपूछ।।

भावार्थ - जो बैल हिरन की तरह पेशाब करता हो तथा जिसकी पूँछ पतली हो, ऐसे बैल को तत्काल खरीद लेना चाहिए।

[386]

है उत्तम खेती वाकी।
होय मेवाती गोई जाकी।।

भावार्थ - यदि किसान के पास मेवाती नस्ल के बैलों की जोड़ी हो तो उसकी खेती उत्तम होगी।

[387]

उदन्त बरदे उदन्त ब्याये।
आप जायँ या खसमै खाये।।

भावार्थ - जो गाय उदन्त (जिसके दूध के दाँत न गिर चुके हों) अवस्था में साँढ़ से जोड़ा खाय और उदन्त ही बच्चा दे, वह या तो स्वयं मर जाती है या मालिक को मार डालती है।

[388]

जब देखो पिय संपति थोड़ी।
बेसहो गाय बिआउरि घोड़ी।।

भावार्थ - हे स्वामी ! यदि धन का अभाव हो तो बच्चा देने वाली गाय और घोड़ी खरीद लो।

[389]

भैंस कन्देलिया पिय लाये।
माँगे दूध कहाँ से आये।।

भावार्थ - हे स्वामी ! यदि कन्देलिया नस्ल की भैंस लाये हो, तब भला दूध कहाँ से मिले ? अर्थात् कन्देलिया नस्ल की भैंस दूध कम देती है।

नीति सम्बन्धी कहावतें

[390]

ओछे बैठक ओछे काम, ओछी बातें आठो याम।
घाघ बतायें तीन निकाम, भूलि न लीजौ इनकै नाम।।

शब्दार्थ - ओछे-नीच। आठोयाम-आठों पहर।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि जो व्यक्ति आठों पहर ओछे अर्थात् बुरे लोगों की संगत में रहते हैं, नीच काम करते हैं, छोटी बातें करते हैं वे बिल्कुल बेकार होते हैं। भूल कर भी उनका नाम न लीजिए।

[391]

आठ कठौती माठा पीवै, सोरह मकुनी खाइ।
उसके मरे न रोइये, घर के दलिद्दर जाय।।

भावार्थ - जो व्यक्ति आठ कठौता (काठ की परात) मट्ठा पीता हो, सोलह मकुनी (सत्तू भरी रोटी) खाता हो उसके मरने पर कभी भी रोना नहीं चाहिए क्योंकि उसके मरने से घर का दरिद्र ही चला जाता है।

[392]

ओछो मंत्री राजै नासै, ताल बिनासै काई।
सान साहिबी फूट बिनासै, घग्घा पैर बिवाई।।

शब्दार्थ - ओछो-नीच प्रकृति।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि नीच प्रकृति का मंत्री राजा का नाश करता है, काई तालाब का नाश करती है, आपसी बैर-भाव (फूट) शान शौकत का नाश करती है तथा पैर की बिवाई पैर का नाश करती है।

[393]

आलस नींद किसानै नासै चोरै नासै खाँसी।
अँखिया लीबर बेसवै नासै बाबै नासै दासी।।

शब्दार्थ - लीबर-कीचर।

भावार्थ - आलस्य और नींद किसान का, खाँसी चोर का, कीचर लगी मुचमुचाती आँख वेश्या का तथा दासी बाबा (साधु) का नाश करती है।

[394]

आपन-आपन सब कोउ होइ, दुख माँ नाहिं सँघाती कोइ।
अन बहतर खातिर झगड़न्त, कहैं घाघ ई बिपत्ति क अन्त।।

भावार्थ - अपने-अपने के लिए हर कोई होता है लेकिन दुःख में कोई किसी का साथी नहीं होता। हर कोई अन्न वस्त्र के लिए झगड़ रहा है, इससे बढ़कर विपत्ति क्या हो सकती है, ऐसा घाघ का मानना है।

[395]

अम्बा नींबू बनिया गर दाबे रस देयँ।
कायथ कौवा करहटा मुर्दा हू सों लेयँ।।

भावार्थ - आम, नींबू और बनिया ये बिना दबाये रस नहीं देते और कायस्थ, कौवा और किलहटा (एक पक्षी) ये मुर्दे से भी रस निकाल लेते हैं।

[396]

आठ गाँव का चौधरी बारह गाँव का राव।
अपने काम न आय तौ ऐसी-तैसी जाव।।

भावार्थ - यदि आठ गाँव का चौधरी और बारह गाँव का राव हो, फिर भी वक्त पड़ने पर काम न आये तो वह अपनी ऐसी-तैसी में जाए।

[397]

अधकचरी विद्या दहे राजा दहे अचेत।
ओछे कुल तिरिया दहे दहे कलर का खेत।।

शब्दार्थ - कलर - कपास।

भावार्थ - यदि व्यक्ति पढ़ा लिखा हो पर अनुभवहीन हो, राजा असावधान हो, स्त्री नीच कुल की हो और खेत कपास का हो, तो यह सब दुख दायी हैं, व्यर्थ हैं। खेत में कपास बोने से खेत कमजोर हो जाता है।

[398]

ऊँच अटारी मधुर बतास।
घाघ कहैं, घरही कैलास।

शब्दार्थ - अटारी-कोठा, छत। बतास-हवा।

भावार्थ - यदि ऊँची अटारी हो और हवा हलकी - हलकी चल रही हो, तो समझो वह घर नहीं कैलाश पर्वत है।

[399]

उधार काढ़ि ब्यौहार चलावै छप्पर डारै तारो।
सारे के सँग बहिनी पठवै तीनिउ का मुँह कारो।।

शब्दार्थ - ब्यौहार-सूद पर रूपया उधार देना। तारो-ताला।

भावार्थ - उधार लेकर कर्ज देने वाला, छप्पर में ताला लगाने वाला और साले के साथ बहन भेजने वाला, घाघ कहते हैं इन तीनों का मुँह काला होता है।

[400]

एक तो बसे सड़क के गाँव। दूजे बड़े बड़ेन माँ नाँव।।
तीजे भये वित्त से हीन। घग्घा हम पर बिपदा तीन।।

भावार्थ - एक तो गाँव सड़क पर बसा हो, दूसरे बड़े बड़ों में नाम हो, तीसरे द्रव्य से रहित हो तो घाघ कहते हैं कि ये तीनों विपदायें हमारे ऊपर हैं।

[401]

कहै घाघ घाघिन से रोय,
बहु संतान दरिद्री होय।

भावार्थ - घाघ घाघिनी से रोकर कहते हैं कि अधिक संतान वाला दरिद्र होता है क्योंकि वह अपनी संतानों पर उतना ध्यान नहीं दे पाता।

[402]

कलिजुग में दो भगत हैं, बैरागी औ ऊँट।
वै तुलसी बन काटहीं, ये किये पीपर ठूँठ।।

भावार्थ - घाघ व्यंग्यात्मक रूप में कहते हैं कि कलियुग में दो ही भक्त हैं- एक बैरागी, दूसरा ऊँट। बैरागी तुलसी का वन काटता रहता है और ऊँट पीपल को ठूँठा करता रहता है।

[403]

काँटा बुरा करील का, औ बदरी का घाम।
सौत बुरी है चून की, औ साझे का काम।।

भावार्थ - करील का काँटा, बदली की धूप, आटे की भी सौत और साझे का काम, ये चारों बहुत बुरे होते हैं।

[404]

कुतवा मूतनि मरकनी, सरबलील कुच काट।
घग्घा चारौ परिहरौ, तब तुम पौढ़ौ खाट।।

शब्दार्थ - मरकनी-खाट। कुच। नस।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि जिस खाट पर कुत्ते मूतते हों, जो चरमराती हो, जो ढीली-ढाली हो और जो इतनी छोटी हो कि पैर की नस काटती हो, ऐसी खाट को छोड़कर दूसरी खाट पर सोना चाहिए।

[405]

कोपे दई मेघ ना होई, खेती सूखति नैहर जोई।
पूत बिदेस खाट पर कन्त, कहैं घाघ ई विपत्ति क अन्त।।

भावार्थ - ईश्वर कुपित हो गया है, बरसात नहीं हो रही है, खेती सूख रही है, पत्नी मायके चली गयी है, पुत्र परदेश में है, पति खाट पर बीमार पड़ा है, घाघ कहते हैं कि यह स्थिति विपत्ति की चरम सीमा है।

[406]

खेती, पाती, बीनती, औ घोड़े की तंग।
अपने हाथ सँवारिये, लाख लोग होय संग।।

भावार्थ - खेती, पत्र लेखन, प्रार्थना, घोड़े की जीन कसना, इन सब कार्यों को स्वयं करना चाहिए, चाहे जितने विश्वासी व्यक्ति आपके साथ

हों लेकिन इन कार्यों के लिए उन पर निर्भर न हों। ऐसा करने पर खेती बिगड़ सकती है, पत्र प्रचारित हो सकता है, प्रार्थना का प्रभाव कम हो सकता है और घोड़े की जीन यदि ढीली हो सकती है जो घातक सिद्ध होगी।

[407]

खेत न जोतै राड़ी। न भैंस बेसाहै पाड़ी।
न मेहरि मर्द क छाड़ी। क्यों न बिपदा गाढ़ी।।

भावार्थ - राढ़ी घास वाले खेत को नहीं जोतना चाहिए, पाड़ी (भैंस का बच्चा) भैंस नहीं खरीदनी चाहिए और चाहे जितना बड़ा संकट हो दूसरे की छोड़ी हुई स्त्री से शादी नहीं करनी चाहिए।

[408]

गया पेड़ जब बकुला बैठा। गया गेह जब मुड़िया पैठा।।
गया राज जहँ राजा लोभी। गया खेत जहँ जामी गोभी।।

शब्दार्थ - मुड़िया - संन्यासी।

भावार्थ - जिस पेड़ पर बगुला बैठता हो, जिस घर में संन्यासी का आना-जाना हो, जिस राज्य का राजा लोभी हो और जिस खेत में गोभी (एक प्रकार की घास) जमने लगे, इन सब को नष्ट हुआ ही समझना चाहिए।

इसका एक अन्य रूप भी मिलता है-

गइल खेत जब जामलि गोभी गइल गाँव जहँ ठाकुर लोभी।
गइल मठ जब रंडी पइठल गइल पेड़ जब बकुला बइठल।।

[409]

घर में नारी आँगन सोवै, रन में चढ़के छत्री रोवै,
रात में सतुवा करै बिआरी, घाघ मरै तेहि का महतारी।।

शब्दार्थ - बिआरी - रात का खाना।

भावार्थ - जिस घर में स्त्री या बहू रात में कमरे में न सो कर आँगन में सोती हो, जो क्षत्रिय युद्ध-भूमि में साहस से लड़ने के स्थान पर रुदन करने लगे तथा जो रात में सतुवा खाये, इन तीनो की माँ को मरे के बराबर समझना चाहिए क्योंकि बहू की देखभाल की जिम्मेदारी माँ की होती है, क्षत्रिय अपनी माँ के दूध की लाज रखता है और यदि माँ है, तो रात में पुत्र कभी सतुवा खाकर नहीं सोयेगा।

[410]

घाघ बात अपने मन गुनहीं,
ठाकुर भगत न मूसर धनुहीं।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि जिस प्रकार मूसर (अनाज कूटने वाला उपकरण) झुककर धनुहीं नहीं बन सकता, ठीक उसी प्रकार ठाकुर कभी भगत नहीं बन सकता, न ही झुक सकता है।

[411]

घर घोड़ा पैदल चलै, तीर चलावे बीन।
थाती धरे दमाद घर, जग में भकुआ तीन।।

भावार्थ - घर में घोड़ा होते हुए भी पैदल चलने वाले, बीन-बीन कर तीर चलाने वाले और अपनी धरोहर (थाती) दामाद के घर रखने वाले, ये तीनो महामूर्ख की श्रेणी में आते हैं।

[412]

घर की खुनुस औ ज्वर की भूख, छोट दमाद बराहे ऊख।
पातर खेती भकुवा भाय, घाघ कहैं दुख कहाँ समाय।।

शब्दार्थ - खुनुस-कलह, क्रोध। बराहे-रास्ता। भकुआ-मूर्ख।

भावार्थ - घर में दिन-रात की कलह, बुखार के बाद की भूख, बेटी से छोटा दामाद, रास्ते की ऊख, हलकी खेती और मूर्ख भाई ये सभी कष्टकर हैं।

[413]

चाकर चोर राज बेपीर।
कहै घाघ का धारी धीर।।

शब्दार्थ - चाकर-नौकर।

भावार्थ - यदि नौकर चोर हो और राजा निर्दयी हो, तो घाघ कहते हैं कि ऐसी स्थिति में धीरज धारण करना कठिन है।

[414]

चना क खेती चिक्कथन। बिटिअन कै बढ़वारि।।
यतनेहु पर धन ना घटै तो करै बड़े से रारि।।

शब्दार्थ - चिक्क-कसाई। रारि-लड़ाई।

भावार्थ - चने की खेती, बकरी का व्यापार, लड़कियों की बढ़वार, यदि इन सब से धन की समाप्ति न हो, तो किसी बड़े आदमी से लड़ाई कर लो।

[415]

चार छावैं, छः निरावैं।
तीन खाट, दो बाट।।

भावार्थ - छप्पर छाने के लिए चार व्यक्ति, निराई के लिए छः व्यक्ति, चारपाई बुनने के लिए तीन व्यक्ति एवं राह पर चलने के लिए दो व्यक्ति होने चाहिए।

[416]

छज्जे की बैठक बुरी, परछाईं की छाँह।
द्वारे का रसिया बुरा, नित उठि पकरै बाँह।।

भावार्थ - छत के छज्जे पर बैठना बुरा होता है। परछाई की छाया भी अच्छी नहीं होती। इसी तरह दरवाजे का (निकट में रहने वाला) प्रेमी भी अच्छा नहीं होता, जो रोज उठकर प्रेमिका की बाँहें पकड़ता रहता है।

[417]

जोइगर, बँसगर बुझगर भाय, तिरिया सतवँती नीक सुभाय।
धनपुत हो मन होइ बिचार, कहैं घाघ ई सुक्ख अपार।।

शब्दार्थ - जोइगर - बलवान। बसगर - वंशवाला। बुझगर - समझदार।

भावार्थ - जो व्यक्ति बलवान हो, वंशवाला हो, समझदार भाईवाला हो और जिसकी स्त्री सतवंती एवं अच्छे स्वभाव वाली हो तथा वह पुत्र और धन से युक्त उत्तम विचारों वाला हो तो घाघ कहते हैं कि ये उसके लिए अपार सुख हैं।

[418]

जेहि का ऊँचा बैठना, जेहि का खेतु निचान।
तेहि का बैरी का करै, जेहि कै मीत देवान।।

भावार्थ - जिसकी संगत बड़े लोगों से हो, जिसका खेत नीचे ढलान पर हो जहाँ पानी स्वयं बह जाता है, जिसकी दोस्ती राजा के दीवान या मंत्री से हो, उसको अपने दुश्मन से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

[419]

जिसकी छाती एक न बार।
उससे सब रहियौ हुसियार।।

भावार्थ - जिस व्यक्ति के छाती में एक भी बाल न हो, उससे सभी को सावधान रहना चाहिए।

[420]

जेहि घर साला सारथी, औ तिरिया की सीख।
सावन में हर बैल बिन, तीनों माँगैं भीख।।

भावार्थ - जिस घर में साले का हुक्म चलता हो, आदमी अपनी पत्नी के बताये रास्ते पर चलता हो और जिस किसान के घर में सावन में हल बैल का प्रबन्ध न हो तो निश्चित है कि इन तीनों घरों में भीख माँगने की स्थिति आ जाती है।

[421]

झिलँगा खटिया बातल देह, तिरिया लम्पट हाटे गेह।
भाई बिगरि मुद्दई मिलंत, घाघ कहै ई विपत्ति क अंत।।

शब्दार्थ - झिलँगा-ढीली-ढाली। हाटे-बाजार। बिगरि-नाराज। मुद्दई-बैरी।

भावार्थ - यदि बान टूटी हुई चारपाई हो, शरीर में वात रोग हो, पत्नी बदचलन हो, भाई नाराज होकर शत्रु से दोस्ती कर ले और बाजार में घर हो तो घाघ का कहना है कि इससे बढ़कर कोई दूसरी विपत्ति नहीं हो सकती।

[422]

ढीठ पतोहु धिया गरियार, खसम बेपीर न करै बिचार।
घरे जलावन अन्न न होई, घाघ कहैं सो अभागी जोई।।

शब्दार्थ - ढीठ - जबर, धृष्ट। धिया - लड़की।

भावार्थ - यदि बहू धृष्ट हो, बेटी आलसी हो, पति दुख-सुख का ध्यान न देने वाला हो और घर में चूल्हा जलने की लकड़ी और अन्न न हो तो इससे बढ़कर दयनीय स्थिति क्या हो सकती है। ऐसे परिवार को अभागा ही कहा जाएगा।

[423]

ढिलमिल बेंट कुदारी, हँसि के बोलै नारी।
हँसि के माँगै दामा, तीनो काम निकामा।।

भावार्थ - यदि कुदाल की बेंट ढीली हो, स्त्री हँस-हँस कर बात कर रही हो और व्यक्ति हँस कर दाम माँग रहा हो तो तीनों अच्छे नहीं होते।

[424]

ताका भैंसा गादर बैल। नारि कुलच्छनि बालक छैल।।
इनसे बाँचें चातुर लोग। राज छाड़ि के साधै जोग।।

शब्दार्थ - ताका - जिसकी आँखें दो तरह की हो। गादर - आलसी।

भावार्थ - ताका भैंसा, आलसी बैल, कुलक्षणा स्त्री और शैकीन बेटे से सदैव चतुर लोगों को बचना चाहिए। इनकी संगति में यदि राजसुख हो तो उसे छोड़कर फकीरी करना अधिक श्रेष्ठ है।

[425]

तीन बैल दो मेहरी।
काल बैठल बा डेहरी।।

भावार्थ - यदि किसान के पास तीन बैल और दो पत्नियाँ हों, तो समझो उसकी देहरी पर अकाल या मृत्यु बैठी है।

[426]

तीन बैल घर में दो चाकी।
पूरब खेत राज की बाकी।।

भावार्थ - जिस किसान के पास तीन बैल हों वह हमेशा परेशान रहेगा, जिस घर में दो चक्कियाँ चलती हों अर्थात् फूट हो वहाँ कभी शान्ति नहीं मिलेगी। यदि किसान का खेत पूरब दिशा में है तो सुबह जाते और शाम को आते समय सूर्य की रोशनी पड़ेगी और आँखे कमजोर होगी। यदि मालगुजारी न जमा हुई तो राजा का अपमान सहना पड़ेगा। ये चारों चीजें किसान के लिए कष्टदायक होती हैं।

[427]

तपै मृगसिरा बिलखे चार।
बन बालक औ भैंस उखार।।

भावार्थ - मृगशिरा के तपने से कपास, बालक, भैंस और ईख ये चारों सबसे अधिक कष्ट पाते हैं।

[428]

धौले भले हैं कपड़े, धौले भले न बार।
आछी काली कामरी, काली भली न नार।।

भावार्थ - वस्त्र सफेद अच्छे लगते हैं पर सफेद बाल नहीं, कम्बल काला अच्छा लगता है पर काली नारी नहीं।

[429]

नसकट पनहीं बतकट जोय जो पहिलौंठी बिटिया होय।
पातर खेत बौरहा भाय, घाघ कहै दुख कहां समाय।।

शब्दार्थ - पनहीं-जूता। जोय-पत्नी। पहिलौंठी-पहले पहल। बौरहा-सनकी, पागल।

भावार्थ - जूता नस काटने वाला हो, पत्नी बात काटने वाली हो और पहली संतान पुत्री हो, खेत इतना पतला हो कि उसमें हल चलाते न बने अथवा बुवाई में बीज दूर-दूर जमे हों और भाई सनकी हो तो घाघ कहते हैं कि ऐसे में दुःख की कोई सीमा नहीं है।

[430]

नारि करकसा कटहा घोर, हाकिम होइके खाइ अँकोर।
कपटी मित्र पुत्र हो चोर, घग्घा इनको गहिरे बोर।।

शब्दार्थ - करकसा-झगड़ालू, प्रपंची। घोर-घोड़ा। कटहा-काट खाने वाला। अँकोर-घूसखोर।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि यदि स्त्री कर्कशा हो, घोड़ा काटने वाला हो, हाकिम घूसखोर हो, मित्र कपटी हो और पुत्र चोर हो, तो इन सबको पकड़कर गहरे पानी में डुबो देना चाहिए अर्थात् ऐसे लोगों से मुक्ति ले लेनी चाहिए।

[431]

निहपछ राजा मन हो हाथ, साधु परोसी नीमन साथ।
हुकुमी पूत धिया सतवार, तिरिया भाई रखे विचार।।

कहै घाघ हम करत विचार, बड़े भाग से दे करतार।।

शब्दार्थ - निहपछ-निष्पक्ष। नीमन-अच्छा। धिया-पुत्री। सतवार-अच्छे स्वभाव। तिरिया-पत्नी।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि राजा निष्पक्ष, (न्यायप्रिय) हो, अपना मन नियंत्रण में हो, पड़ोसी सज्जन हो, दोस्त निष्कपट हो, पुत्र आज्ञकारी और पुत्री अच्छे आचरण की हो, स्त्री के भाई अच्छे व्यवहार वाले हों, ऐसे लोग बड़े भाग्यशाली होते हैं।

[432]

नीचन से ब्योहार बिसाहा, हँसि के मांगे दम्मा,
आलस नींद निगोड़ी घेरे, घघ्घा तीनि निकम्मा।

भावार्थ - जो लोग बुरे लोगों से मित्रता करते है, हँसकर अपना पैसा माँगते हैं और जिन्हें आलस्य या नींद हर समय घेरे रहती है, ये तीनों निकम्मे यानी बेकार होते हैं।

[433]

ना अति बरखा ना अति धूप।
ना अति बकता ना अति चूप।।

भावार्थ - अत्यधिक वर्षा अच्छी नहीं होती, बहुत अधिक धूप भी अच्छी नहीं होती, इसी प्रकार अत्यधिक बोलना और अत्यन्त चुप रहना भी अच्छा नहीं होता।

[434]

पूत न माने आपन डाँट, भाई लड़ै चहै नित बाँट।
तिरिया कलही करकस होइ, नियरा बसल दुष्ट सब कोइ
मालिक नाहिंन करै विचार, घाघ कहै ई विपत्ति अपार।।

भावार्थ - यदि बेटा बात न माने, भाई जायदाद के बँटवारे के लिए प्रायः लड़ता रहे, पत्नी झगड़ालू, कर्कशा हो, दुष्ट व्यक्ति निकट रहता हो, घर का मालिक अविवेकी हो तो घाघ कहते हैं कि ये सब कष्ट को बढ़ाने वाले होते हैं।

[435]

परहथ बनिज, सँदेसे खेती, बिन बर देखे ब्याहै बेटी।
द्वार पराये गाड़ै थाती, ये चारों मिलि पीटैं छाती।।

शब्दार्थ - परहथ-दूसरे के हाथ या भरोसे। थाती-धन। बनिज-व्यापार।

भावार्थ - दूसरों के सहारे व्यापार करने वाला, संदेशों से खेती करने वाला, बिना वर देखे ही अपनी लड़की का व्याह करने वाला और अपनी थाती या धन को दूसरे के दरवाजे पर गाड़ने वाला व्यक्ति सदैव पछताता है।

[436]

पहिनि खड़ाऊँ खेतु निरावै, ओढ़ि रजाई झोंकैं।
घाघ कहै ई तीनों भकुआ, बेमतलब की भौंकैं।।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि खड़ाऊँ पहन कर खेत की निराई करने वाला और रजाई ओढ़-कर भाड़ झोंकने वाला, निरुद्देश्य बोलने वाला, ये तीनों ही मूर्ख हैं।

[437]

पहिले छावै तीन घरा।
सार भुसौला औ बड़हरा।।

भावार्थ - वर्षा होने के पहले पशुओं के रहने, भूसा रखने, और कंडे रखने वाला घर छा लेना चाहिए।

[438]

फूटे से बहि जातु है, ढोल, गँवार, अँगार।
फूटे से बनि जातु हैं, फूट, कपास, अनार।।

शब्दार्थ - बहि-नष्ट होना।

भावार्थ - ढोल, गंवार और अंगार ये तीनों फूटने से नष्ट हो जाते हैं, लेकिन फूट, (भदईं ककड़ी) कपास और अनार फूटने से बन जाते हैं अर्थात् उनकी कीमत फूटने के बाद ही अच्छी होती है।

[439]

बगड़ बिराने जो रहे मानै त्रिया की सीख।
तीनों यों हीं जायँगे पाही बोवै ईख।।

शब्दार्थ - बगड़ - घर।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि दूसरे के घर में रहने वाला, स्त्री के कहने पर चलने वाला और दूसरे गाँव में ईख बोने वाला, तीनों ही व्यक्ति सदैव नुकसान ही उठाते हैं।

[440]

बैल मरकहा चमकुल जोय।
वा घर ओरहन नित उठि होय।।

भावार्थ - जिस किसान का बैल मारने वाला हो और स्त्री चटक-मटक वाली चंचल हो, उसे सदैव उलाहना मिलता है।

[441]

बैल बगौधा निरघिन जोय।
वा घर ओरहन कबहुँ न होय।।

भावार्थ - जिस किसान के पास बगौधा (घर का पाला) बैल हो और फूहड़-घिनौनी सुशीला पत्नी हो, उसके घर उलाहना कभी नहीं आता।

[442]

बूढ़ा बैल बेसाहै झीना कपड़ा लेय।
आपुन करै नसौनी देवै दूषन देय।।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि जो गृहस्थ बूढ़ा बैल खरीदता है, पतला कपड़ा पहनता है, वह नाश तो अपना करता है लेकिन दोष ईश्वर को देता है।

[443]

बैल तरकना टूटी नाव।
ये काहू दिन दैहें दाँव।।

शब्दार्थ - तरकना - भड़कने वाला।

भावार्थ - भड़क जाने वाला बैल और टूटी हूई नाव कभी भी धोखा दे सकती है।

[444]

बाध, बिया, बेकहल, बनिक, बारी, बेटा, बैल।
ब्यौहार, बढ़ई, बन बबुर, बात सुनो यह छैल।।

जो बकार बारह बसैं, सो पूरन गिरहस्त।
औरन को सुख दे सदा, आप रहै अलमस्त।।

शब्दार्थ - बाध-चारपाई बुनने के लिए मूँज की बड़ी पतली रस्सी। बेकहल-पटुए या सन की छाल। बारी-बगीचा। ब्योहर- उधार या सूद पर पैसा देने वाला। बन-कपास।

भावार्थ - बाध, बीज, बेकहल, (पटुए या सन की छाल) बनिया, बारी, बेटा, बैल, ब्यौहर, बढ़ई, बन, बबूल और बात ये बारहों बकार जिसके पास हों वही पूरा गृहस्थ है। वही व्यक्ति दूसरों को सुख दे सकता है और स्वयं भी सुखी एवं निश्चिन्त रह सकता है।

[445]

बैल चौंकना जोत में, औ चमकीली नार।
ये बैरी हैं जान के, कुसल करैं करतार।।

भावार्थ - वह बैल जो हल जोतते समय चौंकता हो और वह स्त्री जो अधिक चमक-दमक कर चलती हो, ये दोनों जान के दुश्मन हैं, जिसके घर में ये दोनों हो, उसकी रक्षा ईश्वर ही करे।

[446]

बिन बैलन खेती करै, बिन भैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार।।

शब्दार्थ - साख-पीढ़ी या पुश्त।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि जो गृहस्थ यह कहता है कि मैं बिना बैलों के खेती करता हूँ; बिना भाइयों की सहायता के दूसरों से झगड़ा करता हूँ और बिना स्त्री के गृहस्थी चलाता हूँ, वह चौदह पुश्तों का झूठा होता है।

[447]

बनिया क सखरज, ठकुर क हीन, वैद क पूत व्याधि नहिं चीन्ह।
पंडित क चुप चुप, बेसवा मइल, कहै घाघ पाँचों घर गइल।।

शब्दार्थ - सखरज-उदार।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि यदि बनिया का पुत्र उदार या अपव्ययी हो, ठाकुर का पुत्र निर्बल और असक्त हो, वैद्य के पुत्र को रोग की पहचान न हो, पंडित का पुत्र चुप रहने वाला हो और वैश्या गंदी हो तो ये पाँचों घर नष्ट हो जाते हैं।

[448]

बाछा बैल, बहुरिया जोय,
ना घर रहै न खेती होय।

भावार्थ - जो किसान नये बछड़ो को बैल बनाकर खेती करता है और जिसकी पत्नी नई-नवेली हो, तो न तो उस किसान की खेती अच्छी हो पाती है और न ही वह घर संभल पाता है।

[449]

बिना माघ घिव खिचड़ी खाय, बिन गौने ससुरारी जाय।
बिन बरखा के पहिरे पउवा, कहै घाघ ये तीनों कउवा।।

शब्दार्थ - पउवा-कठनहीं, हवाई चप्पल की तरह काठ की बनी खड़ाऊँ जिसमें रस्सी की बद्धी लगी होती है।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि माघ के अतिरिक्त अन्य महीनों में खिचड़ी में घी मिलाकर खाने वाला, बिना गौना आये ससुराल जाने वाला, बिना बरसात आये कठनहीं पहनने वाले, ये तीनों मूर्ख होते हैं।

[450]

बाढ़ै पूत पिता के धर्मे।
खेती उपजै अपने कर्मे।।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि पुत्र पिता के धर्म से फलता-फूलता है और खेती अपने कर्म से अच्छी होती है।

[451]

भेदिहा सेवक सुन्दरि नारि,
जीरन पट कुराज दुख चारि।।

भावार्थ - दूसरों को घर का भेद बताने वाला नौकर, रूपवती स्त्री, फटा कपड़ा और दुष्ट राजा ये चारों दुःख के कारण हैं।

[452]

माघ पूस की बादरी, औ कुँवारा घाम।
ये दोनों जो कोइ सहै, करै पराया काम।।

भावार्थ - माघ और पूस महीने की बदली और क्वार की धूप को जो सहन कर ले, वही दूसरे का काम कर सकता है क्योंकि माघ और पूस में ठंडी बहुत होती है और क्वार में धूप अधिक तेज होती है।

[453]

मुये चाम से चाम कटावैं, सकरी भुंइ मां सोवै।
घाघ कहैं ये तीनौ भकुवा, उढ़रि गये पर रोवै।।

शब्दार्थ - मुये-मरे हुए। चाम-चमड़ा। सकरी-कम जगह। भकुआ-बेवकूफ। ओढ़री-बहकाकर लाई गयी स्त्री।

भावार्थ - चमड़े के छोटे जूते पहनकर पैर कटवाने वाला, सकरी जमीन में सोने वाला, और भगा कर लाई गई स्त्री के भाग जाने पर विलाप करने वाला, ये तीनों ही मूर्ख होते हैं।

[454]

माँ ते पूत पिता ते घोड़ा।
बहुत न होय तो थोड़म थोड़ा।

भावार्थ - माँ का गुण पुत्र में और पिता का गुण घोड़े में अधिक नहीं तो थोड़ा जरूर होता है।

[455]

राँड़ मेंहरिया अन्ना भैंसा।
जब बिचलै तब होवै कैसा।।

भावार्थ - विधवा स्त्री और बिना स्वामी का स्वच्छंद भैंसा यदि बहक जायें तो अनर्थ ही होगा।

[456]

लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान।
ममिला बिगरै साँझ बिहान।।

भावार्थ - यदि ठाकुर (राजा, ज़मींदार) बच्चा हो और उसका मंत्री बुड्ढा हो तो दोनों में कभी मेंल नहीं खा सकता और सुबह शाम में किसी वक्त झगड़ा हो सकता है।

[457]

सावन घोड़ी भादौं गाय। माघ मास जो भैंस बिआय।।
कहैं घाघ यह साँची बात। आप मरै कि मालिकै खाय।।

भावार्थ - घाघ कहते हैं कि यदि घोड़ी सावन में और गाय भादों में और भैंस माघ के महीने में बच्चा देती है तो या तो वह स्वयं मर जायेगी या अपने मालिक को खा जायेगी।

[458]

सधुवै दासी, चोरवै खाँसी, प्रेम बिनासै हाँसी।
घग्घा उनकी बुद्धि बिनासै, खाय जो रोटी बासी।।

भावार्थ - साधु को दासी, चोर को खाँसी और प्रेम को हँसी (उपहास) नष्ट कर देती है। इसी तरह जो बासी रोटी खाते हैं उनकी भी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

[459]

सांझै से परि रहती खाट, पड़ी भड़ेहरि बारह बाट।
घर आँगन, सब घिन-घिन होय, घग्घा गहिरे देव डुबोय।।

शब्दार्थ - भड़ेहरि - बर्तन आदि। घिन-गंदा।

भावार्थ - जो स्त्री सांझ से ही खाट पर पड़ी सोती हो और उसके घर की चीजें तितर-बितर हों, और जिसका घर-आंगन धिनाता रहता हो, ऐसी औरत को घाघ के अनुसार गहरे पानी में डुबो देना ही श्रेष्ठ होता है।

[460]

हँसुआ ठाकुर खँसुआ चोर।
इन्हैं ससुरवन गहिरे बोर।।

भावार्थ - हँस कर बात करने वाले ठाकुर और खाँसी आने वाले चोर इन ससुरों को गहरे पानी में डुबो देना चाहिए।

[461]

हरहट नारि बास एकबाह, परुवा बरद सुहुत हरवाह।
रोगी होइ होइ इकलन्त, कहैं घाघ ई विपत्ति क अन्त।।

भावार्थ - कर्कशा स्त्री, अकेले का घर, पराया बैल, आलसी हलवाहा, रोगी होकर अकेले रहना, घाघ कहते हैं कि इससे बढ़कर और कोई विपत्ति नहीं होगी।

ज्योतिष सम्बन्धी कहावतें

[462]

अखै तीज रोहिनी न होई। पौष, अमावस मूल न जोई।।
राखी स्रवणो हीन विचारो। कातिक पूनों कृतिका टारो।।

महि-माहीं खल बलहिं प्रकासै। कहत भड्डरी सालि बिनासै।।

शब्दार्थ - तज-छोड़ना। मही-धरती। खल-दुष्ट।

भावार्थ - भड्डरी कहते हैं कि बैशाख अक्षय तृतीया को यदि रोहिणी नक्षत्र न पड़े, पौष की अमावस्या को यदि मूल नक्षत्र न पड़े, सावन की पूर्णमासी को यदि श्रवण न पड़े, कार्तिक की पूर्णमासी को यदि कृत्तिका न पड़े, तो समझ लेना चाहिए कि धरती पर दुष्टों का बल बढ़ेगा और धान की उपज नष्ट होगी।

[463]

अद्रा भद्रा कृत्तिका, असरेखा जो मघाहिँ।
चन्दा ऊगै दूज को, सुख से नरा अघाहिँ।।

भावार्थ - द्वितीया का चन्द्रमा यदि आर्द्रा, भद्रा (भाद्रपद), कृत्तिका, अश्लेषा या मघा में उदित हो, तो मनुष्य को सुख ही सुख प्राप्त होगा।

असाढ़ मास पुनगौना। धुजा बाँधि के देखौ पौना।
जो पै पवन पुरब से आवै। उपजै अन्न मेघ झर लावै।।

अगिन कोन जो बहै समीरा। पड़ै काल दुख सहै सरीरा।।

दखिन बहै जल थल अलगीरा। ताहि समें जूझैं बड़ बीरा।।
तीरथ कोन बूँद ना परैं। राजा परजा भूखन मरैं।।

पच्छिम बहै नीक कर जानो। पड़ै तुसार तेज डर मानो।।
बायब बह जल थल अति भारी। मूस उगाह दंड बस नारी।।

उत्तर उपजै बहु धन धान। खेत बात सुख करै किसान।।
कोन इसान दुन्दुभी बाजै। दही भात भोजन सब गाजै।।

शब्दार्थ - पुनगौना - पूर्णिमा। उगाह - उत्पत्ति।

भावार्थ - आषाढ़ मास की पूर्णमासी को झण्डी बाँधकर हवा का रुख देखिये। यदि पूर्व की हवा हो तो पैदावार और वर्षा अधिक होगी। यदि अग्नि (पूर्व और दक्षिण के) कोण की हो तो अकाल पड़ेगा एवम् शारीरिक कष्ट मिलेगा। हवा यदि दक्षिण की हो तो वर्षा अधिक होगी और बड़े-बड़े योद्धा आपस में लड़ेंगे। यदि दक्षिण-पश्चिम कोण की हवा हो तो वर्षा कम होगी, राजा प्रजा दोनों भूखे मरेंगे। यदि पश्चिम की हवा हो तो मौसम अच्छा रहेगा, लेकिन पाला ज्यादा पड़ेगा। यदि वायव्य (पश्चिम-उत्तर) कोण की हवा हो तो वर्षा अधिक होगी और चूहे अधिक पैदा होंगे जो हानि पहुँचायेंगे। प्लेग होगा और स्त्रियाँ दुःख पायेंगी। हवा यदि उत्तर दिशा की हो तो धन-धान्य की उपज अधिक होगी और किसान मौज करेंगे। हवा यदि ईशान (पूर्व-उत्तर के) कोण की हो तो पैदावार अच्छी होगी, शादी-ब्याह अधिक होंगे। लोग दही-भात खाकर मस्त रहेंगे।

[465]

एक पाख दो गहना।
राजा मरै कि सहना।।

शब्दार्थ - सहना - अधीनस्थ राजकर्मचारी। नगर प्रधान।

भावार्थ - यदि एक पक्ष में दो ग्रहण लगे तो राजा या शाहंशाह में से कोई एक मरेगा।

[466]

एक मास में ग्रहण जो दोई।
तो भी अन्न महंगो होई।।

भावार्थ - यदि एक महीने में दो ग्रहण लगे तो अन्न महँगा होगा।

[467]

कै जु सनीचर मीन को, कै जु तुला को होय।
राजा बिग्रह प्रजा छय, बिरला जीवै कोय।।

भावार्थ - शनिश्चर मीन का हो या तुला का, दोनों ही परिस्थिति में राजाओं में युद्ध होगा, प्रजा का नाश होगा और शायद ही कोई जीवित बचे।

[468]

गहता आथा गहतो ऊगै।
तोऊ चोखी साख न पूगै।।

शब्दार्थ - गहता - ग्रहण। आथा - अस्त। ऊगै - उदय।

भावार्थ - यदि ग्रहण ग्रस्तोदय (लगा हुआ ही उदय) और ग्रस्तास्त (लगा हुआ अस्त) हो तो फसल अच्छी नहीं होगी।

[469]

चैत अमावस जै घड़ी, परती पत्रा माँहिं।
तेता सेरा भड्डरी, कातिक धान बिकाहिं।।

भावार्थ - पचांग में चैत की अमावस जितनी घड़ी की होगी कातिक में धान उतने ही सेर बिकेगा, ऐसा भड्डरी का मानना है।

[470]

चैत सुदी रेवतड़ी जोय। बैसाखहिं भरणी जो होय।।
जेठ मास मृगसिर दरसंत। पुनरबसू आषाढ़ चरंत।।

जितो नछत्र कि बरत्यो जाई। तेतो सेर अनाज बिकाई।।

भावार्थ - चैत सुदी (कृष्ण) में रेवती, वैशाख में भरणी, ज्येष्ठ में मृगशिरा और आषाढ़ में पुनर्वसु जितने भी घड़ी रहेगी, अनाज उतने सेर बिकेगा।

[471]

चैत पूर्णिमा होइ जो, सोम गुरौ बुधवार।
घर घर होइ बधावड़ा, घर घर मंगलचार।।

भावार्थ - यदि चैत की पूर्णिमा सोमवार, वृहस्पतिवार या बुधवार को पड़े तो घर-घर आनन्द की बधाई बजेगी और मंगलचार होगा।

[472]

छः ग्रह एकै रासि बिलोकौ।
महाकाल को दीन्हों कोकौं।।

भावार्थ - जब छः ग्रह एक ही राशि में हों तो समझो महाकाल को निमन्त्रण दिया गया है।

[473]

जो चित्रा में खेलै गाई।
निहचै खाली साख न जाई।।

भावार्थ - यदि कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा-गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, गो क्रीड़ा के दिन चित्रा नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो फसल अच्छी होती है।

[474]

जेठ पहिल परिवा दिना, बुध बासर जो होइ।
मूल असाढ़ी जो मिलै, पृथ्वी कम्पै जोइ।।

भावार्थ - यदि ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा को बुधवार पड़े और आषाढ़ की पूर्णिमा को मूल नक्षत्र हो तो पृथ्वी दुःख से काँप उठेगी।

[475]

जेठ आगली परवा देखू। कौन बासरा है यों पेखू।।
रबिबासर अति बाढ़ बढ़ाव। मंगलवारी ब्याधि बताय।।

बुधा नाज महँगा जो करई। सनिवासर परजा परिहरई।।
चन्द्र सुक्र सुरगुरु के बारा। होय तो अन्न भरो संसारा।।

भावार्थ - यदि ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को रविवार पड़े तो बाढ़ आयेगी, मंगल पड़े तो रोग बढ़ेंगे, बुध पड़े तो अन्न महँगा होगा, शनि पड़े तो प्रजा को कष्ट होगा, यदि सोम शुक्र और वृहस्पति पड़े तो संसार अन्न से भर जायेगा।

[476]

जेठ बदी दसमी दिना, जो सनिबासर होइ।
पानी होय न धरनि पर, बिरला जीवै कोई।।

भावार्थ - यदि ज्येष्ठ कृष्ण दशमी को शनिवार पड़े तो पृथ्वी पर वर्षा नहीं होगी और शायद ही कोई जीवित बचेगा।

[477]

जिहि नक्षत्र में रबि तपै, तिहीं अमावस होय।
परिवा साँझी जो मिलै, सूर्य ग्रहण तब होय।।

भावार्थ - सूर्य जिस नक्षत्र में होता है उसी में अमावस्या होती है, शाम को यदि प्रतिपदा हो तो सूर्यग्रहण अवश्य होगा।

[478]

ज्येष्ठा आर्द्रा सतभिखा, स्वाति सुलेखा माँहि।
जो संक्रान्ति तो जानियो, महँगो अन्न बिकाहिँ।।

भावार्थ - यदि ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिष, स्वाति और श्लेषा नक्षत्रों में संक्रान्ति हो तो समझ लेना चाहिए कि अन्न महँगा बिकेगा।

[479]

तेरह दिन का देखी पाख।
अन्न महँग समझो बैशाख।।

भावार्थ - यदि पक्ष तेरह दिन का होगा तो बैशाख में अन्न महँगा बिकेगा।

[480]

दूजे तीजे किरबरो, रस कुसुम्भ महँगाय।
पहले छठयें आठयें, पिरथी परलै जाय।।

शब्दार्थ - किरबरो-खराब, गड़बड़। परलय-प्रलय।

भावार्थ - यदि सूर्य संक्रान्ति के बाद दूसरा और तीसरा दिन गड़बड़ है तो रसदार पदार्थ और तेल महँगे होंगे। यदि पहला, छठाँ और आठवाँ दिन खराब है तो पृथ्वी पर प्रलय मचेगी।

[481]

न गिनु तीनि सै साठ दिन, ना कर लग्न बिचार।
गिनु नौमी आषाढ़ बदि, होवै कौनउ बार।।

रबि अकाल मंगल जग डगै, बुधा समो सम भावो लगै।
सोम सुक्र सुरगुरु जो होय, पुहुमी फूल फलन्ती जोय।।

भावार्थ - भड्डरी कहते हैं कि न तो तीन सौ साठ दिनों की गिनती करो, न ही लग्न विचारो। सिर्फ आषाढ़ कृष्ण नवमी का विचार करो, वह चाहे जिस दिन पड़े। यदि रविवार को हो तो अकाल पड़ेगा, मंगलवार को हो तो जग कांप उठेगा, बुधवार को हो तो समभाव रहेगा, सोमवार, शुक्रवार और वृहस्पतिवार को हो तो पृथ्वी फूले फलेगी।

[482]

पाँच सनीचर पाँच रवि, पाँच मंगर जो होय।
छत्र टूट धरनी परै, अन्न महँगो होय।।

भावार्थ - भड्डरी कहते हैं कि यदि एक महीने में पाँच शनिवार, पाँच रविवार और पाँच मंगलवार पड़ें तो महा अशुभ होता है। यदि ऐसा होता है तो या तो राजा का नाश होगा या अन्न मँहगा होगा।

[483]

बिजै दसैं जो बारो होई।
संवतसर को राजा सोई।।

भावार्थ - विजयदशमी के दिन जो वार पड़ेगा, वही संवत्सर का राजा होगा, जैसे मंगलवार को हो तो राजा मंगल होगा।

[484]

भादों सुदि की पंचमी, स्वाति सँजोगी होय।
दोनों सुभ जोगै मिलै, मँगल बरती लोय।।

भावार्थ - यदि भाद्र शुक्ल पक्ष की पंचमी को स्वाति नक्षत्र हो, तो यह योग शुभ होता है। ऐसे में लोग आनन्द से रहेंगे।

[485]

भादौं मासै ऊजरी, लखौ मूल रबिवार।
तो यों भाखै भड्डरी, साख भली निरधार।।

भावार्थ - यदि भाद्र शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन मूल नक्षत्र पड़े तो निश्चित रूप से फसल अच्छी होगी, ऐसा भड्डरी कहते हैं।

[486]

भादों की छठ चाँदनी, जो अनुराधा हो।
ऊबड़खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरा होय।।

भावार्थ - यदि भाद्र शुक्ल छठ को अनुराधा नक्षत्र हो, तो खराब जमीन में भी बीज बोने पर पैदावार अच्छी होगी।

[487]

मार्ग महीना माहिं जो, जेष्ठा तपै न मूर।
तो इमि बोलै भड्डरी, निपटै सातो तूर।।

भावार्थ - यदि अगहन मास में न ज्येष्ठा नक्षत्र तपे और न ही मूल नक्षत्र, तो सातों प्रकार के अन्न पैदा होंगे, ऐसा भड्डरी का मानना है।

[488]

माघ उज्यारी तीज को, बादर बिज्जु जु देख।
गेहूँ जौ संचय करौ, महँगो होसी पेख।।

भावार्थ - यदि माघ शुक्ल तृतीया को बादल और बिजली दिखाई पड़े तो अन्न महँगा होगा। इसलिए गेहूँ और जौ का संचय शुरू कर दो।

[489]

माघ जु परिवा ऊजली, बादर वायु जु होय।
तेल और सुरही सबै, दिन दिन महँगो होय।।

भावार्थ - भड्डरी का मानना है कि यदि माघ शुक्ल प्रतिपदा को बादल हों और हवा धीरे-धीरे चल रही हो तो तेल और घी दिन-प्रति-दिन महँगे होंगे।

[490]

माघ उँजेरी चौथ को, मेह बादरो जान।
पान और नारेल ये, महँगो अवसि बखान।।

भावार्थ - यदि माघ शुक्ल चौथ को बादल हों और पानी बरसे तो पान और नारियल अवश्य महँगे होंगे।

[491]

माघ छठी गरजै नहीं, महँगो होय कपास।
सातें देखा निर्मली, तो नाहीं कछु आस।।

भावार्थ - यदि माघ शुक्ल पक्ष की छठ को आसमान में बादल न गरजें तो कपास महँगा होगा लेकिन यदि सप्तमी को आकाश बिल्कुल स्वच्छ रहा तो कुछ भी होने की आशा नहीं है।

[492]

माघ पांच जो हों रविवार।
तो भी जोसी समय विचार।।

भावार्थ - यदि माघ मास में पाँच रविवार पड़ें तो समय अच्छा होगा, ऐसा भड्डरी ज्योतिषी का मानना है।

[493]

माघ उजेरी अष्टमी, वार होय जो चन्द।
तेल घीव को जानिये, महँगो होय दुचन्द।।

शब्दार्थ - दुचन्द-दुगना।

भावार्थ - यदि माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी को सोमवार हो तो तेल और घी का दाम दूना हो जायेगा।

[494]

मीन सनीचर कर्क गुरु, जो तुल मंगल होय।
गोहूँ गोरस गोरड़ी, बिरला बिलसै कोय।।

भावार्थ - यदि मीन का शनिश्चर, कर्क का वृहस्पति और तुला का मंगल हो, तो गेहूँ, दूध और ईख की उपज कम होगी और शायद ही कोई इनका सेवन कर पाएगा।

[495]

मूल गल्यो रोहिनि गली, अद्रा बाजी बाय।
हाली बेंचो बरधिया, खेती लाभ नसाय।।

भावार्थ - यदि मूल और रोहिणी नक्षत्र में बादल छाये हों और आद्रा नक्षत्र में हवा चल रही हो तो किसान को चाहिए कि वह जल्दी से बैलों को बेच डालें क्योंकि खेती में लाभ की सम्भावना नहीं है।

[496]

मास ऋष्य जो तीज अँध्यारी, लेहु जोतिसी ताहि विचारी।
तिहि नक्षत्र जो पूरनमासी, निहचै चन्द्रग्रहन उपजासी।।

भावार्थ - महीने की कृष्ण पक्ष की तृतीया को कौन सा नक्षत्र है ज्योतिष से इसका विचार कर लेना चाहिए। यदि उसी नक्षत्र में पूर्णिमा पड़े तो निश्चय ही चन्द्र ग्रहण होगा।

[497]

माघे मंगर जेठ रवि, जो सनि भादों होय।
छत्र टूटि धरती परे, कि अन्न महँगो होय।।

भावार्थ - यदि माघ मास में पाँच मंगलवार, जेठ में पाँच रविवार या भादों में पाँच शनिवार पड़ें तो राजा का नाश होगा या अन्न महँगा होगा।

[498]

मंगलवारी होय दिवारी।
हँसैं किसान रोवै बैपारी।।

भावार्थ - दीपावली यदि मंगलवार को पड़ती है तो किसान हँसेंगे और व्यापारी रोयेंगे।

[499]

राम बाँस जहँ धँसै अचूका।
तहँ पानी की आस अखूटा।।

शब्दार्थ - राम बाँस-ऐसा बाँस जिसके सिरे पर नोकदार लोहा जड़ा हो।

भावार्थ - जिस स्थान पर रामबाँस बिना रुकावट के धँस जाये वहाँ कुआँ खोदने पर इतना पानी होगा कि कभी खत्म नहीं होगा।

[500]

रवि के आगे सुरगुरू, ससि सुक्रा परबेस।
दिवस चु चौथे पाँचवें, रुधिर बहन्तो देस।।

भावार्थ - सूर्य के आगे वृहस्पति हों, चन्द्रमा शुक्र की परिधि में प्रवेश करें, तो उसके चौथे पाँचवें दिन देश में रक्त बहेगा।

[501]

रिक्ता तिथि अरु क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात।
जो संक्रान्ति सो जानियो, संबत महँगो जात।।

भावार्थ - रिक्ता (चौथ, नवमी और चतुर्दशी) तिथि और क्रूर दिन (जैसे शनि-मंगल) को यदि दोपहर या प्रातः काल में संक्रान्ति पड़े तो समझना चाहिए कि संवत् महँगा जायेगा। अर्थात् वर्ष भर महँगाई रहेगी।

[502]

सनि चक्कर की सुनिये बात। मेष राशि भुगतै गुजरात।।
वृष में करै निरोधाचार। भूवै आबू औ गिरनार।।

मिथुने पिंगल औ मुलतान। कर्के कास्मीर खुरसान।।
जो सनि सिंहा करसी रंग। जो गढ़ दिल्ली होसी भंग।।

जो सनि कन्या करै निवास। तो पूरब कछु माल बिनास।।
तुला वृश्चिकै जो सनि होय। मारवाड़ ने काट विलोय।।

मकरा कुंभा जो सनि आवै। दीन्हों अन्न न कोई खावै।।
जो धन मीन सनीचर जाइ। पवन चलै पानी जु नसाय।।

भावार्थ - भड्डरी का कहना है कि यदि शनि मेष राशि पर है तो गुजरात कष्ट भोगेगा। यदि शनि वृष राशि पर है तो सभी प्रकार के सुख

छिन्न-भिन्न हो जायेंगे और आबू गिरनार प्रान्त दुख भोगेगा। यदि शनि मिथुन राशि पर है तो पिंगल (उत्तर-पश्चिम) देश और मुल्तान, कर्क राशि पर है तो कश्मीर और खुरासान में संकट आयेगा। यदि शनि सिंह राशि पर हो तो दिल्ली का राज भंग होगा। शनि यदि कन्या राशि पर है तो पूर्व दिशा को हानि पहुँचायेगा और तुला तथा वृश्चिक राशि पर शनि है तो मारवाड़ भूखों मरेगा। शनि यदि मकर और कुंभ राशि पर है तो इतना भीषण कष्ट पड़ेगा कि दिया हुआ अन्न भी व्यक्ति नहीं खा पायेगा। शनि यदि धनु और मीन राशि पर है तो हवा तेज चलेगी और सूखा पड़ेगा।

[503]

सातै पाँच तृतीया दसमी, एकादसि में जीव।
एहि तिथिन पर जोतहू, तौ प्रसन्न हो सीव।।

भावार्थ - ऐसा माना जाता है कि सप्तमी, पंचमी, तृतीया, दशमी और एकादशी में जीव का निवास होता है। यदि इन तिथियों में खेत की जुताई की जाये तो शिव जी प्रसन्न होते हैं।

[504]

स्वाती दीपक जो बरै, खेल बिसाखा गाय।
घना गयंदा रन चढ़ै, उपजी साख नसाय।।

भावार्थ - यदि दीपावली के दिन स्वाति नक्षत्र हो एवं कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को विशाखा नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो बड़ी लड़ाई होगी और खेती को नुकसान होगा।

[505]

सनि आदित औ मंगल, पौष अमावस होय।
दुगुनो, तिगुनो, चौगुनो, नाज महंगी होय।।

भावार्थ - यदि पौष की अमावस्या को शनिवार, रविवार अथवा मंगलवार पड़े तो इसी के क्रम में अनाज दोगुना, तिगुना और चौगुना महँगा हो जायेगा।

[506]

सोम सुकर सुरगुरु दिवस, पूस अमावस होय।
घर घर बजी बधाबड़ा, दुःखी न दीखै कोय।।

भावार्थ - पूस की अमावस्या को यदि सोमवार, वृहस्पतिवार या शुक्रवार पड़े तो शुभ होता है और हर जगह बधाई बजेगी तथा कोई भी आदमी दुःखी नहीं रहेगा।

[507]

सावन उजरे पाख में, जो ये सब दरसायँ।
दुंद होय छत्री लड़ैं, भिरैं भूमिपति रायँ।।

भावार्थ - सावन शुक्ल पक्ष में यदि यही योग पड़े तो भयानक लड़ाई होगी। क्षत्रिय और राजा-राव लड़ेंगे।

[508]

सावन बदी एकादसी, जितनी घड़ी क होय।
तितनो संवत नीपजै, चिंता करे न कोय।।

भावार्थ - सावन कृष्ण पक्ष एकादशी को जितनी घड़ी एकादशी रहेगी उतना ही संवत् उत्पादक होगा कोई चिंता न करे।

[509]

होली झर को करो विचार, सुभ और असुभ कहा फल सार।
पश्चिम बायु बहै अति सुन्दर, समयो निपजै सजल बसुंधर।।

पूरब दिसि के बहै जो बाई, कछु भींजै कछु कोरो जाई।
दक्खिन बाय बहे वध नास, समया निपजे सनई घास।।

उत्तर बाय बहे दड़बड़िया, पिरथी अचूक पानी पड़िया।
जोर झकोरै चारो बाय, दुख या परघा जीव डराय।।

जोर झलो आकासै जाय, तौ पृथवी संग्राम कराय।।

शब्दार्थ - कोरे-खाली। बध-मृत्यु। अचूक-निश्चय।

भावार्थ - होली की लपट अथवा होली के दिन बहने वाली हवा पर विचार कर लेना चाहिए क्योंकि उस दिन की लपट या हवा पर शुभ और अशुभ फल निर्भर होते हैं। यदि हवा पश्चिम की बहे तो शुभ होगी धरती पर वर्षा होगी, उत्पादन अच्छा होगा और हवा यदि पूरब की बहे तो कुछ वर्षा एवं कुछ सूखे का योग होता है। यदि हवा दक्षिण की बहे तो मनुष्यों का वध एवं विनाश होगा। खेती में सनई और घास अधिक पैदा होगी। हवा यदि उत्तर की तेज झोंकों के साथ बही तो पृथ्वी पर पानी अवश्य बरसेगा। यदि हवा चारों दिशाओं की चले अर्थात् चौवाई चले तो समय खराब होगा, दुःख मिलेगा और जीवों में भय होगा। हवा यदि नीचे से ऊपर की ओर जोर से जाये या लपट आकाश में जाये तो निश्चय ही पृथ्वी पर संग्राम होगा। ऐसा ज्योतिष भड्डरी का मानना है।

[510]

होली सूक सनीचरी, मंगलवारी होय।
चाक चहोड़े मेदिनी, बिरला जीवै कोय।।

भावार्थ - यदि होली शुक्र, शनि और मंगल को पड़े तो पृथ्वी पर भयानक समय आने वाला है और शायद ही कोई बचे।

शुभाशुभ सम्बन्धी कहावतें

[511]

कपड़ा पहिरै तीनि बार। बुध बृहस्पत सुक्रवार।।
हारे अबरे इतवार। भड्डर का है यही बिचार।।

भावार्थ - वस्त्र धारण करने के लिए बुध, वृहस्पति और शुक्रवार का दिन विशेष शुभ होता है। अधिक आवश्यकता पड़ने पर रविवार को भी वस्त्र धारण किया जा सकता है, ऐसा भड्डरी का विचार है।

[512]

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान।।
एक सूद्र दो बैस असार। तीनि विप्र औ छत्री चार।।
सनमुख आवैं जौ नौ नार। कहैं भड्डरी असुभ विचार।।

शब्दार्थ - स्वान-कुत्ता। फरफराय-फड़फड़ाना।

भावार्थ - भड्डरी कहते हैं कि यात्रा पर निकलते समय यदि घर के बाहर कुत्ता खड़ा कान फटफटा रहा हो तो अशुभ होता है। यदि सामने से एक शूद्र, दो वैश्य, तीन ब्राह्मण, चार क्षत्रिय और नौ स्त्रियाँ आ रही हों तो अशुभ होता है।

[513]

चलत समय नेउरा मिलि जाय। बाम भाग चारा चखु खाय।।
काग दाहिने खेत सुहाय। सफल मनोरथ समझहु भाय।।

भावार्थ - यदि कहीं जाते समय रास्ते में नेवला मिल जाये, नीलकंठ बाई तरफ चारा खा रहा हो और दाहिने तरफ खेत में कौवा हो तो जिस कार्य से व्यक्ति निकला है वह अवश्य सिद्ध होगा।

[514]

जिन बाराँ रवि संक्रमै, तासों चौथे बार।
असुभ परंती सुभ करै, जोसी जोतिस सार।।

भावार्थ - जिस दिन सूर्य की संक्रान्ति हो और उसका चौथा दिन अशुभ हो, तो फलशुभ होगा। यही भड्डरी ज्योतिषी के अनुसार ज्योतिष का सार है।

[515]

नारि सुहागिन जल घट लावै। दधि मछली जो सनमुख आवै।।
सनमुख धेनु पिआवै बाछा। यही सगुन हैं सब से आछा।।

भावार्थ - यदि सौभाग्यवती स्त्री पानी से भरा घड़ा ला रही हो, कोई सामने से दही और मछली ला रहा हो या गाय बछड़े को दूध पिला रही हो तो यह सबसे अच्छा शकुन होता है।

[516]

पुरुब गुधूली पश्चिम प्रात। उत्तर दुपहर दक्खिन रात।।
का करै भद्रा का दिगसूल। कहैं भड्डर सब चकनाचूर।।

भावार्थ - भड्डरी कहते हैं कि यदि पूर्व दिशा में यात्रा करनी हो तो गोधूलि (संध्या) के समय, यदि पश्चिम में यात्रा करनी हो तो प्रातःकाल, यदि उत्तर दिशा में यात्रा करनी हो तो दोपहर में और यदि दक्षिण की तरफ जाना है तो रात में निकलना चाहिए। यदि उस दिन भद्रा

या दिशाशूल भी है तो ऐसा करने वाले व्यक्ति को कुछ भी नहीं होगा।

[517]

भूरी हथिनी चँदुली जोय।
पूस महावट बिरले होय।।

शब्दार्थ - चँदुली जोय - गन्जे सिर वाली स्त्री।

भावार्थ - भूरे रंग की हथिनी, गंजे सिर वाली स्त्री और पूस महीने की वर्षा बहुत शुभ मानी जाती है। यह कभी-कभी ही नसीब होती है।

[518]

भैंसि पाँच खट स्वान। एक बैल यक बकरा जान।।
तीनि धेनु गज सात प्रमान। चलत मिलैं मति करौ पयान।।

भावार्थ - यदि यात्रा पर जाते समय पाँच भैंसें, छः कुत्ते, एक बैल, एक बकरा, तीन गायें और सात हाथी मिलें तो यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए।

[519]

भैंस जो जन्में पड़वा, बहू जो जन्मे धीय ।
समें कुलच्छन जानिये, कातिक बरसे मीय।।

भावार्थ - भैंस यदि पड़वा को जन्म दे, बहू कन्या को और कार्तिक में पानी बरसे तो ये तीनों समय के कुलक्षण हैं।

[520]

भरणि बिसाखा कृत्तिका, आद्रा मघा मूल।
इनमें काटै कूकुरा, भड्डर है प्रतिकूल।।

भावार्थ - भड्डरी का कहना है कि यदि भरणी, विशाखा, कृत्तिका, आर्द्रा, मघा और मूल नक्षत्रों में कुत्ता काट ले तो बहुत बुरा होता है।

[521]

मंगल सोम होय सिवराती। पछिवाँ बाय बहै दिन राती।।
घोड़ा रोड़ा टिड्डी उड़ैं। राजा मरैं कि परती पड़ैं।।

भावार्थ - यदि शिवरात्रि सोम या मंगल को हो और रात दिन पछुवा हवा बहती रहे तो अनुमान लगा लेना चाहिए कि घोड़ा, रोड़ा (एक पतिंगा) और टिड्डी दल (एक प्रकार का कीड़ा) उड़ेगा तथा राजा की मृत्यु होगी या सूखा पड़ेगा और खेत परती रह जायेंगे।

[522]

रवि तामूल सोम के दरपन। भौमवार गुर धनियाँ चरबन।।
बुध मिठाई बिहफै राई। सुक्र कहै मोहिँ दही सुहाई।।
सन्नी बाउभिरंगी भावै। इन्द्रो जीति पुत्र घर आवै।।

भावार्थ - यदि व्यक्ति कहीं यात्रा पर जा रहा है तो दिन का विचार कर लेना चाहिए। यदि रविवार है तो पान खाकर, सोमवार है तो दर्पण देखकर, मंगल है तो गुड़ और धनिया खाकर, बुध को मिठाई और वृहस्पति को राई खाकर, शुक्र को दही और शनिवार को वायबिडंग खाना चाहिए। ऐसा करके जो पुत्र जाता है वह इन्द्र को भी जीतकर घर आ सकता है।

[523]

लोमा फिरि फिरि दरस दिखावे। बायें ते दहिने मृग आवै।।
भड्डर जोसी सगुन बतावैं। सगरे काज सिद्ध होइ जावै।।

शब्दार्थ - लोमा-लोमड़ी।

भावार्थ - यात्रा पर जाते समय यदि लोमड़ी बार-बार दिखाई पड़े। हिरण बायें से दाहिने की ओर निकल जाये तो व्यक्ति जिन कार्यों के लिए जा रहा होगा वे सभी सिद्ध हो जायेंगे, ऐसा ज्योतिषी भड्डरी कहते हैं।

[524]

सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरि से दूरि निकट निकट, समझौ फल भरपूर।।

भावार्थ - यदि शुभ और अशुभ शकुन दूर हो तो फल को भी दूर समझना चाहिए और यदि निकट हो तो फल को भी निकट समझना चाहिए।

[525]

सनमुख छींक लड़ाई भाखै। पीठि पाछिली सुख अभिलाखै।।
छींक दाहिनी धन को नासै। बाम छींक सुख सदा अकासै।।

ऊँची छींक महा सुभकारी। नीची छींक महा भयकारी।।
अपनी छींक महा दुखदाई। कह भड्डर जोसी समझाई।।

अपनी छींक राम बन गयऊ।
सीता हरन तुरंतै भयऊ।।

भावार्थ - ज्योतिषी भड्डरी का कथन है कि यदि छींक सामने होती है तो लड़ाई होगी, पीठ पीछे हो तो सुख देगी, दाहिने तरफ की छींक धन का नाश करती है और बाईं ओर की छींक सदैव सुख प्रदान करती है। यदि छींक जोर से होती है तो शुभ होती है, हलकी होती है तो भय उत्पन्न करती है। अपनी छींक अत्यधिक दुःख प्रदान करती है यह भड्डरी ज्योतिषी समझा कर कहते हैं। राम का वनगमन उनकी अपनी ही छींक पर हुआ था और इसी के कारण वहाँ सीता का भी तुरन्त हरण हो गया।

[526]

सिर पर गिरैं राज सुख पावै। औ ललाट ऐस्वर्यहि आवै।।
कंठ मिलावै पिय को लाई। काँधे पड़े बिजय दरसाई।।

जुगल कान औ जुगल भुजाहू। गोधा गिरे होय धन लाहू।।
हाथन ऊपर जो कहुँ गिरई। सम्पति सकल गेह में धरई।।

निश्चय पीठ परै सुख पावै। परे काँख पिय बंधु मिलावै।।
कटि के परे वस्त्र बहु रंगा। गुदा परे मिल मित्र अभंगा।।

जुगल जाँघ पर आनि जो परई। धन गन सकल मनोरथ भरई।।
परे जाँघ नर होइ निरोगी। परब परे तन जीव वियोगी।।

या विधि पल्ली सरट विचारा। कहयो भड्डरी जोतिस सारा।।

भावार्थ - छिपकली यदि सिर पर गिरे तो राजसुख मिलता है, ललाट पर गिरे तो ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, कंठ पर गिरे तो प्रियजन से भेंट होती है, कंधे पर गिरे तो विजय होती है, यदि दोनों कानों और दोनों भुजाओं पर गिरे तो धन का लाभ होता है, यदि हाथों पर गिरे तो धन आता है, पीठ पर गिरे तो निश्चित सुख मिलता है, काँख पर पड़े तो प्रिय-बन्धु से मुलाकात होती है, कटि पर गिरे तो रंगबिरंगे वस्त्र मिलते हैं, गुदा पर पड़े तो सच्चा मित्र मिलता है, यदि दोनों जाँघों पर पड़े तो धन आदि सभी मनोरथ पूरे होते हैं। एक जाँघ पर पड़े तो मनुष्य निरोगी रहता है, यदि पर्व के दिन गिरे तो शरीर और जीव का वियोग होगा। इस प्रकार ज्योतिष का सार लेकर छिपकली पर भड्डरी का यही विचार है।

[527]

स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटैं भूमि पर।
तौ निज कारज भंग, अतिही कुसगुन जानिये।।

भावार्थ - यदि यात्रा के समय कुत्ता अपना शरीर फड़फड़ाये या भूमि पर लोटता नज़र आये तो बड़ा अशुभ होता है। व्यक्ति जिस कार्य से जा रहा है वह पूरा नहीं होगा। यह एक अपशकुन है।

[528]

सूके सोमे बुधे बाम। यहि स्वर लंका जीते राम।।
जो स्वर चले सोई पग दीजै। काहे क पंडित पत्रा लीजै।।

भावार्थ - शुक्रवार, सोमवार और बुधवार को बायें स्वर में कार्य प्रारम्भ करने से सफलता मिलती है। राम ने इसी स्वर में लंका जीती थी। यदि बायाँ स्वर चले तो बायाँ पैर आगे निकालना चाहिए दाहिना चले तो दाहिना पैर आगे निकालना चाहिए। इससे कार्य सिद्ध होता है। ऐसा करने वाले व्यक्ति को पंचांग में विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

[529]

सोम सनीचर पुरुब न चालू। मंगर बुद्ध उतर दिसि कालू।।
बिहफै दक्खिन करै पयाना। नहि समुझें ताको घर आना।।

बूध कहै मैं बड़ा सयाना। मोरे दिन जिन किह्यौ पयाना।।
कौड़ी से नहिँ भेट कराऊँ। छेम कुसल से घर पहुँचाऊँ।।

भावार्थ - यदि यात्रा पर जाना हो तो सोमवार और शनिवार को पूर्व, मंगल और बुध को उत्तर दिशा में नहीं जाना चाहिए। यदि व्यक्ति वृहस्पति को दक्षिण दिशा की यात्रा करेगा तो उसका घर लौटना संदिग्ध होगा। बुधवार कहता है कि मैं बहुत चतुर हूँ, व्यक्ति को मेरे दिन कहीं भी यात्रा नहीं करनी चाहिए क्योंकि मैं उसको एक कौड़ी से भी भेंट नहीं होने दूँगा। हाँ ! क्षेमकुशल से उसको घर पहुँचा दूँगा।

स्वास्थ्य सम्बन्धी कहावतें

[530]

अँतरे खोंतरे डंडै करै।
ताल नहाय ओस माँ परै।।

दैव न मारै अपुवइ मरै।

भावार्थ - जो व्यक्ति कभी-कभी (दूसरे-चौथे) व्यायाम करता है अर्थात् नियमित नहीं करता, तालाब में स्नान करता है और ओस में सोता है, उसे भगवान या भाग्य नहीं मारता स्वयं अपनी मूर्खता से मरता है।

[531]

ऊँचे चढ़िके बोला मँडुवा। सब नाजों का मैं हूँ भँडुवा।।
आठ दिना मुझको जो खाय। भले मर्द से उठा न जाय।।

भावार्थ - मँडुआ नामक अन्न ऊँचे खड़े होकर कहता है कि मैं सब अन्नों में भँडुआ (निर्लज्ज) हूँ। यदि मुझे आठ दिन खा ले तो वह कितना भी शक्तिशाली मर्द हो निर्बल हो जायेगा और उठकर चल नहीं पायेगा।

[532]

खाइ कै मूतै सूतै बाउँ।
काहै के बैद बसावै गाउँ।

भावार्थ - यदि व्यक्ति खाना खाने के पश्चत् पेशाब करके बायें करवट सो जाए, तो उसे अपने गाँव में वैद्य बसाने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी अर्थात् ऐसा करने वाला व्यक्ति सदैव स्वस्थ रहता है।

[533]

गाय दुहे, बिन छाने लावै, गरमा, गरम तुरन्त चढ़ावै।
बाढ़ै बल अउर बुद्धि भाई, घाघ कहे सच्ची बतलाई।

भावार्थ - घाघ का कहना है कि गाय को दूहकर उसी समय बिना छाने गरमागरम कच्चा दूध पीने से बल और बुद्धि दोनों बढ़ती हैं।

[534]

चइत सोवै रोगी, बइसाख सोवै जोगी।
जेठ सोवै राजा, असाढ़ सोवै अभागा।।

भावार्थ - चैत मास में सोने वाला व्यक्ति रोगी होता है, वैशाख में योगी पुरुष दिन में आराम करते हैं, जेठ माह में बड़े आदमी (रईस) लोग सोते हैं क्योंकि इस समय लू एवं तपन रहती है, लेकिन आषाढ़ महीने में सोने वाला व्यक्ति अभागा ही होता है, क्योंकि यह समय खेती-किसानी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण होता है।

[535]

चैते गुड़ बैसाखे तेल, जेठे पन्थ असाढ़े बेल।
सावन साग न भादो दही, क्वार करेला न कातिक मही।।

अगहन जीरा पूसे धना, माघे मिश्री फागुन चना।
ई बारह जो देय बचाय, वहि घर बैद कबौं न जाय।।

शब्दार्थ - पन्थ-यात्रा, मही-माठा, धना-धनिया

भावार्थ - यदि व्यक्ति चैत में गुड़, बैसाख में तेल, जेठ में यात्रा, आषाढ़ में बेल, सावन में साग, भादों में दही, क्वाँर में करेला, कार्तिक में मट्ठा अगहन में जीरा, पूस में धनिया, माघ में मिश्री और फागुन में चना, ये वस्तुएँ स्वास्थ्य के लिए कष्टकारक होती हैं। जिस घर में इनसे बचा जाता है, उस घर में वैद्य कभी नहीं आता क्योंकि लोग स्वस्थ बने रहते हैं।

[536]

जाको मारा चाहिए, बिन लाठी बिन घाव।
वाको यही बताइए, घुइयाँ पूरी खाव।।

भावार्थ - यदि किसी व्यक्ति को बिना लाठी या बिना हथियार के मारना चाहते हो तो उसे धुइयाँ (अरुई) और पूड़ी खाने की सलाह दो क्योंकि घुइयाँ और पूड़ी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं।

[537]

प्रात समै खटिया से उठिकै, पीवै ठंडा पानी।
ता घर वैद कबौ नहिं आवै, बात घाघ की मानी।।

भावार्थ - घाघ का मानना है कि जो व्यक्ति प्रातः काल खाट से उठते ही ठंडा पानी पीता है उसका स्वास्थ्य इतना अच्छा रहता है कि कभी डाक्टर या वैद्य की जरूरत नहीं पड़ती।

[538]

भुइयाँ खेड़े हर हो चार, घर हो गिहथिन गऊ दुधार।
अरहर दाल, जड़हन क भात, गागल निबुआ औ घिउ तात।।

खाँड दही जो घर में होय, बाँके नयन परोसै जोय,
कहैं घाघ तब सबही झूठ, उहाँ छोड़ि इहँवै बैकूंठ।।

शब्दार्थ - भुइयाँ-जमीन। खेड़े-गाँव के नजदीक। गागल-रसदार। तात-गर्म।

भावार्थ - यदि खेत गाँव के पास हो, चार हल की खेती हो, घर में गृहस्थी में निपुण स्त्री हो, दुधारू गाय हो, अरहर की दाल और जड़हन (अगहन में पकने वाला धान) का भात हो, रसदार नींबू और गर्म घी हो, दही और शक्कर घर में हो और इन सब चीजों को तिरछी दृष्टि से परोसने वाली पत्नी हो, तो घाघ कहते हैं कि पृथ्वी पर ही स्वर्ग है। इस सुख के अतिरिक्त अन्य सारे सुख मिथ्या हैं।

[539]

सावन हर्रे भादों चीत। क्वार मास गुड़ खायउ मीत।।
कातिक मूली अगहन तेल। पूस में करै दूध से मेल।।

माघ मास घिउ खींचरि खाय। फागुन उठि के प्रात नहाय।।
चैत मास में नीम बेसहनी। बैसाखे में खाय जड़हनी।।

जेठ मास जो दिन में सोवै।
ओकर जर असाढ़ में रोवै।।

भावार्थ - सावन मास में हर्रे, भादों मास में चिरायता, क्वार मास में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पौष मास में दूध, माघ मास में घी और खिचड़ी, फागुन मास में प्रातः स्नान, चैत मास में नीम का सेवन, वैशाख मास में जड़हन का भात खाना चाहिए जेठ मास में दिन में सोने वाले व्यक्ति को आषाढ़ में ज्वर नहीं होता और वह स्वस्थ रहता है।

अनुक्रमणिका

घाघ की कहावतें

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
	अ	
अगहर खेती अगहर मार	- 254	- 75
अगहन जो कोउ बोवै जौवा	- 261	- 77
अगहन दूना पूस सवाई	- 5	2
अगहन बवा	- 260	- 77
अगहन में ना दी थी कोर	- 224	- 67
अगहन में सरवा भर	- 3	- 2
अद्रा गैले तीनि गैल	- 10	- 3
अद्रा में जो बोवे साठी	- 259	- 76
अद्रा धान पुनर्बस पैया	- 257	- 76
अद्रा बरसै पुनर्वस जाय	4	2
अद्रा रेंड़ पुनर्बस पाती	- 256	- 75
अम्बा नीबू बनिया	- 395	- 118
अम्बाझोर बहै पुरवाई	- 9	- 3
अँतरे खोंतरे डंडै करै	- 530	- 160
अमहा जबहा जोतहु जाय	- 342	- 103
असाढ़ जोतै लड़के बारे	- 225	- 67
असाढ़ मास जो गँवही कीन	- 211	- 61
अहिर बरदिया बाह्मन हारी	- 212	- 61

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
आ		
आकर कोदौ नीम जवा	177	51
आगिल खेती आगे-आगे	255	75
आठ कठौती माठा पीवै	391	116
आठ गाँव का चौधरी	396	118
आर्द्रा चौथ	12	4
आधा खेत बटैया देवे	179	52
आधे चित्रा फूटा धान	336	101
आधे हथिया मूरि मराई	258	76
आपन आपन सब कोउ होई	394	117
आलस नींद किसानै नासै	393	117
आस पास रबी बीच में खरीफ	178	51
ई		
ईख तिस्सा	337	101
उ		
उगे अगस्त फूले वन कास	126	36
उजर बरौनी मुँह का महुवा	343	103
उत्तम खेती जो हर गहा	213	62
उत्तम खेती मध्यम बान	181	52
उत्तम खेती आप सेती	214	62
उत्तर चमकै बीजली	20	6
उदन्त बरदै उदन्त ब्याये	387	115
उधारि काढ़ि व्यवहार चलावे	399	119
उर्द मोथी की खेती करिहौ	183	53

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
उलटा बादर जो चढ़ै	- 19	- 6
उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै	- 22	- 6
ऊ		
ऊख कनाई काहे से	- 319	- 95
ऊख करै सब कोई	- 182	- 53
ऊख गोड़िके तुरत दबावै	- 312	- 93
ऊख सरवती दिवला धान	- 262	- 77
ऊगी हरनी फूली कास	- 263	- 77
ऊँच अटारी मधुर बतास	- 398	- 118
ऊँचे चढ़िके बोला मडुवा	- 531	- 160
ए		
एक तो बसो सड़क पर गाँव	- 400	- 119
एक पाख दो गहना	- 465	- 140
एक पानी जो बरसै स्वाती	- 24	- 7
एक बात तुम सुनहु हमारी	- 344	- 103
एक बूँद जो चैत में परै	- 23	- 7
एक मास ऋतु आगे धावै	- 25	- 7
एक समय बिधिना का खेल	- 345	- 104
एक हर हत्या दो हर काज	- 184	- 53
ओ		
ओछे बैठक ओछे काम	- 390	- 116
ओछो मंत्री राजै नासै	- 392	- 117
औ		
औआ बौआ बहे बतास	- 26	- 7

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
	क	
कच्चा खेत न जोते कोई	- 228	- 68
कदम कदम पर बाजरा	- 266	- 78
कपास चुनाई	- 185	- 53
करिया काछी धौरा बान	- 346	- 104
करिया बादर जी डरवावै	- 27	- 8
कर्म हीन नर खेती करै	- 187	- 54
कलिजुग में दो भगत हैं	- 402	- 119
कहा होय बहु बाहें	- 226	- 67
कहै घाघ घाघिन से रोय	- 401	- 119
काँटा बुरा कुरील का	- 403	- 120
कातिक बोवै अगहन भरै	- 264	- 78
कातिक मास रात हर जोतौ	- 227	- 68
कामिनि गरभ औ खेती पकी	- 186	- 54
कार कछौटी झबरे कान	- 348	- 104
कार कछौटी सुनरे बान	- 347	- 104
काले फूल न पाया पानी	- 300	- 89
कुंभे आवै मीने जाय	- 320	- 95
कुड़हल भदईं बोओ यार	- 267	- 79
कुतवा मूतनि मरकनी	- 404	- 120
कोठिला बैठी बोली जई	- 265	- 78
कोपे दई मेघ ना होई	- 405	- 120

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
	ख	
खनि के काटे घन के मोराये	– 194	– 56
खाइ के मूतै सूतै बाउँ	– 532	– 161
खाद परै तो खेत	– 306	– 91
खेत न जोते राड़ी	– 407	– 121
खेत बे पनिया जोतो तब	– 229	– 68
खेती करें अधिया	– 191	– 55
खेती करें ऊख कपास	– 195	– 56
खेती करें साँझ घर सोवै	– 193	– 55
खेती करै खाद से भरै	– 307	– 91
खेती करै बनिज को धावै	– 188	– 54
खेती खसम सेती	– 190	– 55
खेती तो उनकी	– 329	– 98
खेती तो थोड़ी करै	– 189	– 54
खेते पाँसा जो न किसाना	– 305	– 91
खेती पाती बीनती	– 406	– 120
खेत बेपानी बूढ़ा बैल	– 192	– 55
खेती वह जो खड़ा रखावै	– 328	– 98
	ग	
गया पेड़ जब बकुला बैठा	– 408	– 121
गहिर न जोतै बोवै धान	– 231	– 69
गाजर गंजी मूरी	– 268	– 79
गाय दुहे, बिन छाने लावै	– 533	– 161

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
गेहूँ गेरुई गाँधी धान	- 322	- 96
गेहूँ जौ जब पछुवाँ पावै	- 332	- 100
गेहूँ बाहा धान बिदाहा	- 313	- 93
गेहूँ बाहे चना दलाये	- 339	- 102
गेहूँ भवा काहें	- 230	- 68
गोबर चोकर चकवर रूसा	- 308	- 92
गोबर मैला नीम की खली	- 310	- 92
गोबर मैला पाती सड़ै	- 309	- 92
घ		
घनी घनी जब सनई बोवै	- 269	- 79
घर की खुनस और जर की भूख	- 412	- 123
घर घोड़ा पैदल चलै	- 411	- 122
घर में नारी आँगन सोवै	- 409	- 122
घाघ बात अपने मन गुनहीं	- 410	- 122
घोंची देखै ओहि पार	- 349	- 105
च		
चन्दा बैठो मातनो	- 37	- 11
चइत सोवै रोगी	- 534	- 161
चटका मघा पटकिगा ऊसर	- 134	- 38
चढ़त जो बरसै चित्रा	- 31	- 9
चना क खेती चिक्कधन	- 414	- 123
चना चित्तरा चौगुना	- 271	- 80

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
चना में सरदी बहुत समाई	- 323	- 96
चना सींच पर जब हो आवै	- 314	- 93
चमके पश्चिम उत्तर कोर	- 33	- 9
चाकर चोर राज बेपीर	- 413	- 123
चार छावै छः निरावै	- 415	- 124
चित्रा गोहूँ अद्रा धान	- 270	- 79
चित्रा बरसे तीन जायँ	- 32	- 9
चिरैया में चीर फार	- 232	- 69
चैतै गुड़ बैसाखे तेल	- 535	- 162
चौथ अन्हरिया सावन माहीं	- 38	- 11
छ		
छज्जे की बैठक बुरी	- 416	- 124
छद्दर कहै मैं आऊँ जाऊँ	- 351	- 105
छिन पुरवैया छिन पछियाँव	- 40	- 12
छीछी भली जौ चना	- 272	- 80
छोट सींग और छोटी पूँछ	- 352	- 106
छोटा मुँह ऐठा कान	- 350	- 105
छोटी नसी-धरती हँसी	- 233	- 69
ज		
जब देखो पिय सम्पति थोड़ी	- 388	- 115
जब बरसेगा उत्तरा	- 47	- 14
जब बरसै तब बाँधो क्यारी	- 215	- 62
जब बर्र बरौठे आई	- 275	- 81

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
जब सैल खटाखट बाजै	- 238	- 71
जब बहै हड़हवा कोन	- 43	- 13
जब बरखा चित्रा में होय	- 42	- 12
जहँ देखो पटवा की डोर	- 357	- 107
जहवाँ देखिहाँ लोह बैलिया	- 353	- 106
जहाँ देखिहों रूपा धँवर	- 356	- 107
जहाँ परै फुलवा की लार	- 355	- 106
जाको मारा चाहिए	- 536	- 162
जिसकी छाती एक न बार	- 419	- 125
जेकरे ऊखर लगै लोहाई	- 324	- 96
जेकरे खेत पड़ा नहिँ गोबर	- 311	- 92
जेठ में जरै माघ में ठरै	- 196	- 56
जेठ उज्यारी तीज दिन	- 137	- 39
जेतना गहिरा जोतै खेत	- 236	- 70
जेहि घर साले सारथी	- 420	- 125
जेहिं का ऊँचा बैठना	- 418	- 125
जै दिन भादौ बहै पछार	- 46	- 13
जै दिन जेठ बहे पुरवाई	- 136	- 38
जोंधरी जोते तोड़ मड़ोर	- 239	- 71
जोइगर बँसगर बुझगर भाय	- 417	- 124
जो कपास को नाहीं गोड़ी	- 315	- 94
जो कहुँ मग्घा बरसै जल	- 48	- 14

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
जो कहुं हवा अकासे जाय	- 51	- 15
जो कोई अगहन बोवै जौआ	- 273	- 80
जो रोहिनी बरसा करै	- 52	- 15
जौ गेहूँ बोवै पाँच पसेर	- 276	- 81
जो जौ चहै तो उत्तर गहैं	- 234	- 70
जोत न माने अरसी चना	- 237	- 70
जोतै का पुरबी लादै का दमोय	- 354	- 106
जोतै खेत घास ना टूटै	- 235	- 70
जो न बरसे पुनर्वसु स्वाती	- 50	- 14
जो तू भूखा माल का	- 274	- 80
जो हर जोतै खेती वाकी	- 216	- 62
जौ तेरे कुनबा घना	- 197	- 56
झ		
झिलँगा खटिया बातल देह	- 421	- 125
ठ		
डगडग डोलन फरका पेलन	- 358	- 107
ढ		
ढिलढिल बेंट कुदारी	- 423	- 126
ढीठ पतोहु धिया गरियार	- 422	- 126
ढेला ऊपर चील जो बोले	- 53	- 15
ढेकी बोले जाय अकास	- 138	- 39

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
त		
तपै मृगसिरा जोय	- 56	- 16
तपै मृगसिरा बिलखैं चार	- 427	- 127
तरकारी है तरकारी	- 301	- 89
ताका भैंसा गादर बैल	- 424	- 126
तिल कोरें	- 198	- 57
तीन बैल घर में दो चाकी	- 426	- 127
तीन बैल दो मेहरी	- 425	- 127
तीन पानी तेरह गोड़	- 316	- 94
तेरह कातिक तीन असाढ़	- 240	- 71
थ		
थोड़ा जोतै बहुत हेंगावै	- 242	- 72
थोर जोताई बहुत हेंगाई	- 241	- 71
द		
दस बाहों का माँडा	- 244	- 72
दस हल राव आठ हल राना	- 217	- 63
दाना अरसी	- 243	- 72
दिन का बद्दर रात निबद्दर	- 60	- 17
दिन को बादर रात को तारे	- 139	- 39
दिन में गरमी रात में ओस	- 58	- 16
दिन सात जो चले बाँड़ा	- 140	- 40
दुइ हर खेती एक हर बारी	- 199	- 57

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
दूर गुड़सा दूर पानी	- 59	- 17
दो दिन पछुवाँ छः पुरवाई	- 333	- 100
दो पती क्यों न निराये	- 317	- 94
ध		
धनि वह राजा धनि वह देस	- 61	- 17
धनुष पड़ै बंगाली	- 62	- 17
धान गिरैं सुभागे का	- 200	- 57
धान पान उखेरा	- 302	- 89
धान पान औ खीरा	- 303	- 90
धौले भले हैं कपड़े	- 428	- 127
न		
नरसी गेहूँ सरसी जवा	- 277	- 82
नसकट पनही बतकट जोय	- 429	- 128
ना अति बरखा ना अति धूप	- 433	- 129
नाटा खोंटा बेंचि के	- 359	- 108
ना मोहिं नाधो ओलिया कोलिया	- 362	- 108
नारि करकसा कटहा घोर	- 430	- 128
निटिया बरद छोटिया हारी	- 361	- 108
नित्तै खेती दुसरे गाय	- 218	- 63
निहपछ राजा मन हो हाथ	- 431	- 128
नीचन से ब्योहार बिसाहा	- 432	- 129
नीचे ओद ऊपर बदराई	- 325	- 96
नीला कंधा बैंगन खुरा	- 360	- 108

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
नौ नसी एक कसी	245	72
नौमी माह अँधेरिया	64	18
प		
पछिवाँ के बादर	68	19
पछिवाँ हवा ओसावै जोई	334	100
पतली पेंडुली मोटी रान	363	109
परहथ बनिज सँदेसे खेती	435	130
पहिनि खड़ाऊँ खेतु निरावै	436	130
पहिला पवन पुरब से आवे	74	21
पहिले काँकरि पीछे धान	279	82
पहिले छावै तीन घरा	437	130
पहिला पानी भरिगा ताल	146	41
पहिलै पानि नदी उफनायँ	143	40
प्रात समै खटिया से उठिकै	537	162
पानी बरसे आधे पूस	70	20
पाही जोतै तब घर जाय	201	57
पुक्ख पुनर्बस बोवै धान	280	82
पुरबा में पछुवाँ बहै	66	19
पुष्य पुनर्बस भरे न ताल	144	41
पूँछ झँपा औ छोटे कान	364	109
पूत न माने आपन डाँट	434	129
पूनो परिवा गाजे	69	19
पूरब धनुही पच्छिम भान	71	20

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
पूरबा में जिन रोपो भइया	- 278	- 82
पूरुब के बादर पच्छिम जायँ	- 65	- 18
पूस न बोये	- 281	- 83
फ		
फूटे से बहि जातु हैं	- 438	- 130
ब		
बगड़ बिराने जो रहैं	- 439	- 131
बड़सिंगा जनि लीजौं मोल	- 371	- 111
बनिया क सखरच ठकुर क हीन	- 447	- 133
बयार चले ईसाना	- 223	- 66
बरद बेसाहन जाओ कंता	- 365, 368	- 109, 110
बहुत करै सो और को	- 202	- 58
बाँध कुदारी खुरपी हाथ	- 220	- 64
बाँधा बछड़ा जाय मठाय	- 366	- 110
बाँसड़ औ मुँहधौरा	- 367	- 110
बाउ चलेगी उत्तरा	- 84	- 24
बाघ बिया बेकहल बनिक	- 444	- 132
बाछा बैल बहुरिया जोय	- 448	- 134
बाड़ी में बाड़ी करै	- 283	- 83
बाढ़ै पूत पिता के धर्मे	- 450	- 134
बाली छोटी भई काहें	- 247	- 73
बायू में जब वायु समाय	- 81	- 23
बाहे क्यों न असाढ़ यकबार	- 246	- 73

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
बिजै दसैं जो बारी होई	- 483	- 144
बिड़रै जोत पुराने बिआ	- 248	- 73
बिन बैलन खेती करै	- 446	- 133
बिना माध घिव खिचड़ी खाय	- 449	- 134
बीघा बायर होय	- 219	- 63
बुध बउनी	- 284	- 83
बुध वृहस्पति दो भले	- 286	- 84
बूढा बैल बेसाहै	- 442	- 132
बेस्या बिटिया नील हैं	- 203	- 58
बैल चौंकना जोत में	- 445	- 133
बैल तरकना टूटी नाव	- 443	- 132
बैल बगौधा निरधिन जोय	- 441	- 131
बैल बेसाहन जाओ कन्ता	- 369	- 110
बैल मरकना चमकुल जोय	- 440	- 131
बैल मुसरहा जो कोइ ले	- 372	- 111
बैल लीजै कजरा	- 370	- 111
बोओ गेहूँ काट कपास	- 285	- 84
बोली लोखरि फूली कास	- 147	- 41
बोवत बनै तो बोइयो	- 287	- 84
बोवै बजरा आये पुक्ख	- 282	- 83
भ		
भुइयाँ खेड़े हर हो चार	- 538	- 163
भूरी हथिनी चँदुली जाय	- 517	- 155

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
भेदिहा सेवक सुन्दरि नारि	- 451	- 134
भैंस कँदेलिया पिय लाये	- 389	- 115
भैंस जो जनमें पँड़वा	- 519	- 155
म		
मंगल पड़े तो भू चले	- 156	- 44
मंगलवारी होय दिवारी	- 498	- 148
मकड़ी घासा पूरा जाला	- 290	- 85
मक्का जोन्हरी औ बजरी	- 289	- 85
मग्घा लगावे घग्घा	- 96	- 27
मघा के बरसे माता के परसे	- 88	- 25
मत कोइ लीजौ मुसहरा बाहन	- 376	- 112
मघा मारे पुरवा सँवारे	- 291	- 85
मघा में मक्कर पुरवा डाँस	- 327	- 97
मर्द निकौनी बरदै दाये	- 373	- 111
माँ ते पूत पिता ते घोड़ा	- 454	- 135
माघ पूस की बादरी	- 452	- 135
माघ पूस जो दखिना चलें	- 87	- 25
माघ पूस बहै पुरवाई	- 326	- 97
माघ मँझारै जेठ में जारै	- 251	- 74
माघ महीना बोइये झार	- 249	- 73
माघ में गरमी जेठ मे जाड़	- 155	- 44
माघ में बादर लाल घरै	- 86	- 24
माघे मंगर जेठ रवि	- 497	- 148

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
मारूँ हरिनी तोडूँ कास	- 288	- 84
मियनी बैल बड़ो बलवान	- 374	- 112
मुये चाम से चाम कटावैं	- 453	- 135
मुँह का मोट माथ का महुआ	- 375	- 112
मेंड़ बाँध दस जोतन दे	- 250	- 74
मैदे गोहूँ ढेले चना	- 252	- 74
य		
या तो बोओ कपास औ ईख	- 292	- 85
र		
रड़है गेहूँ कुसहै धान	- 205	- 58
राँड़ मेंहरिया अनाथ भैंसा	- 455	- 135
रात दिना घमछाहीं	- 97	- 27
रात निबद्दर दिन को घटा	- 99	- 28
रामबाँस जहँ धंसै अचूका	- 499	- 148
रुँघ बाँध के फाग दिखाये	- 206	- 59
रोहिनी खाट मृगसिरा छउनी	- 294	- 86
रोहिनी बरसै मृग तपे	- 100	- 28
रोहिनी मृगसिरा बोये मक्का	- 293	- 86
ल		
लम्बे लम्बे कान	- 377	- 112
लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान	- 456	- 136
लाल पियर जब होय अकास	- 101	- 28

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
व		
वह किसान है पातर	- 378	- 113
वायु चलेगी दखिना	- 102	- 29
विधि का लिखा न होवै आन	- 207	- 59
स		
सधुवै दासी चोरवै खाँसी	- 458	- 136
सन घना बन बेगरा	- 296	- 87
सब कार हर तर	- 209	- 60
सब दिन बरसै दखिना बाय	- 106	- 30
सभी किसानी हेठी	- 304	- 90
समथर जोते पूत चरावै	- 383	- 114
साँझै से परि रहती खाट	- 459	- 136
साँझै घनुष बिहानै पानी	- 110	- 31
साँझै धनुष सकारे मोरा	- 105	- 29
साठी में साठी करै	- 297	- 87
साठी होवै साठवें दिना	- 330	- 99
सात दाँत उदन्त को	- 381	- 113
सात सेवाती धान उपाठ	- 331	- 99
सावन के पछुवाँ दिन दुइ चारि	- 108	- 30
सावन घोड़ी भादौं गाय	- 457	- 136
सावन भादों खेत निरावै	- 318	- 94
सावन मास बहै पुरवाई	- 171	- 48
सावन साँवा अगहन जवा	- 295	- 86
सावन सुक्र न दीसै	- 175	- 49

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
सावन सूखा स्यारी	- 173	- 49
सावन सूखे धान	- 341	- 102
सावन सोये ससुर घर	- 221	- 64
सावन हरैं भादों चीत	- 539	- 163
सिंह गरजै	- 107	- 30
सींग गिरैला बरद के	- 384	- 114
सींग मुड़े माथा उठा	- 382	- 114
सेत रंग औ पीठ बरारी	- 379	- 113
सोम सनीचर पुरुब न चाल	- 529	- 159
सौंख कहै देख मोर कला	- 380	- 113
ह		
हँसुवा ठाकुर खँसुआ चोर	- 460	- 137
हथिया पूँछ डोलावै	- 120	- 33
हथिया बरसे चित्रा मँड़राय	- 119	- 33
हथिया में हाथ गोड़ चित्रा में फूल	- 210	- 60
हर लगा पताल	- 253	- 74
हरहट नारि बास एक बाह	- 461	- 137
हरिन फलाँगन काकरी	- 298	- 87
हस्त न बजरी चित्र न चना	- 299	- 88
हस्त बरसे तीन होय	- 121	- 33
हिरन मुतान औ पतली पूँछ	- 385	- 114
है उत्तम खेती वाकी	- 386	- 115
होली झर को करो विचार	- 509	- 152
होली सूक सनीचरी	- 510	- 152

भड्डरी की कहावतें

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
	'अ'	
अखै तीज तिथि के दिना	- 335	- 101
अखै तीज रोहिणी न होई	- 462	- 138
अगहन द्वादस मेघ अकास	- 8	- 3
अद्रा भद्रा कृत्तिका	- 463	- 138
अधकचरी विद्या दहे	- 397	- 118
असनी गलिया अंत बिनासै	- 1	- 1
असाढ़ मास आठें अँधियारी	- 7	- 3
असाढ़ मास पुनगौना	- 464	- 139
असुनी गल भरनी गली	- 2	- 1
	'आ'	
आगे मंगल पीछे भान	- 17	- 5
आगे मंगल पीठ रवि	- 124	- 35
आगे मघा पीछे भान	- 18, 125	- 5, 36
आगे रवि पाछे चलै	- 16	- 5
आदि न बरसै अद्रा	- 11	- 4
आद्रा तौ बरसै नहीं	- 122	- 35
आद्रा भरणी रोहिणी	- 123	- 35
आसाढ़ी पूनो की साँझ	- 222	- 65
आसाढ़ी पूनो दिना	- 6,14,15	- 2,4,5
आसाढ़ मास पूनो दिवस	- 13	- 4

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
	'इ'	
इतवार करै धनवंतरि होय	- 180	- 52
	'उ'	
उतरे जेठ जो बोलै दादुर	- 21	- 6
	'ए'	
एक मास में ग्रहण जो दोई	- 466	- 140
	'क'	
कपड़ा पहिरै तीनि बार	- 511	- 153
कर्क बुवावै काकरी	- 321	- 95
कर्क रासि में मंगलवारी	- 131	- 37
कर्क संक्रमी मंगलवार	- 130	- 37
कातिक मावस देखो जोसी	- 127	- 36
कातिक सुदी एकादसी	- 28	- 8
कातिक सुदि पूनो दिवस	- 29	- 8
काहे पंडित पढ़ि पढ़ि मरो	- 128	- 36
कुही अमावस मूल बिन	- 338	- 102
कृतिका तो कोरी गई	- 129	- 37
कृष्ण अषाढ़ी प्रतिपदा	- 132	- 140
कै जु सनीचर मीन को	- 467	- 127
	'ग'	
गवन समय जो स्वान	- 512	- 153
गहता आथा गहतो ऊगै	- 468	- 140

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
	'च'	
चलत समय नेउरा मिलि जाय	- 513	- 154
चित्रा स्वाती बिसाखड़ी	- 133	- 38
चैत अमावस जै घड़ी	- 469	- 141
चैत के पछिवाँ भादौं जला	- 30	- 9
चैत पूर्णिमा होइ जो	- 471	- 141
चैत मास उजियाले पाख	- 135	- 38
चैत मास जो बीजु बिजोवै	- 35	- 10
चैत मास दसमी खड़ा	- 34, 39	- 10, 11
चैत सुदी रेवतड़ी जोय	- 470	- 141
चैत अमावस मूल को	- 36	- 10
	'छ'	
छः ग्रह एकै रासि बिलोकौ	- 472	- 141
	'ज'	
जब पुरवा पुरवाई पावै	- 41	- 12
जिन बाराँ रवि संक्रमै	- 514	- 154
जेठ आगली परिवा देखू	- 475	- 142
जेठ उँजारे पच्छ में	- 45	- 13
जेठ पहिल परिवा दिना	- 474	- 142
जेठ बदी दसमी दिना	- 476	- 142
जेठ मास जो तपै निरासा	- 44	- 13
जेहि नक्षत्र में रबि तपै	- 477	- 143

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
ज्येष्ठा आर्द्रा सतभिखा	478	143
जो चित्रा में खेलै गाई	473	142
जो बदरी बादर मां खमसै	49	14
'त'		
तपा जेठ में जो चुइ जाय	57	16
तीब्रि बरनीं बादरी	54	15
तीतर बरनी बादरी	55	16
तेरह दिन का देखी पाख	479	143
'द'		
दूजे तीजे किरबरो	480	143
'ध'		
धुर अषाढ़ की अष्टमी	141	40
धुर आसाढ़ी बिज्जु की	63	17
'न'		
न गिनु तीनि सै साठ दिन	481	144
नवै असाढ़े बादले	142	40
नारि सुहागिन जल घट लावै	515	154
'प'		
पवन थम्यो तीतिर लवै	76	21
पाँच मंगरी फागुनी	145	41
पाँच सनीचर पाँच रवि	482	144
पूरब के बादर पच्छिम जाय	77	21

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
पुरुब गुधूली पश्चिम प्रात	- 516	- 154
पूरब के घन पच्छिम चलै	- 79	- 22
पूस उजेली सत्तमी	- 73	- 20
पूस मास दसमी अँधियारी	- 72	- 20
पौष अँध्यारी तेरसै	- 78	- 22
पौष अँध्यारी सत्तमी	- 75	- 21
पौष अमावस मूल को	- 67	- 19
'फ'		
फागुन बदी सुदूज दिन	- 80	- 22
'ब'		
बादर ऊपर बादर धावै	- 82	- 23
बैसाख सुदी प्रथमै दिवस	- 340	- 102
बोले मोर महातुरी	- 83	- 23
'भ'		
भरणि बिसाखा कृत्तिका	- 520	- 155
भादों की छठ चाँदनी	- 486	- 145
भादों की सुदी पंचमी	- 484	- 145
भादौं बदी एकादसी	- 148	- 42
भादौं मासै ऊजरी	- 485	- 145
भैंसि पाँच खट स्वान	- 518	- 155
भोर समै डरडम्बरा	- 149	- 42
'म'		
मंगल रथ आगे चलै	- 158	- 44
मंगलवारी मावसी	- 152	- 43

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
मंगल सोम होय सिवराती	- 521	- 136
माघ अँधेरी सत्तमी	- 89	- 25
माघे नौमी निरमली	- 159	- 45
माघ अमावस गर्भमय	- 90	- 25
माघ उँजेरी चौथ को	- 490	- 146
माघ उँजेरी पंचमी	- 150	- 42
माघ उजेरी अष्टमी	- 493	- 147
माघ छठी गरजै नहीं	- 491	- 146
माघ ऋष्य जो तीज अँध्यारी	- 496	- 148
माघ जो सातैं कज्जली	- 94	- 27
माघ जु परिवा ऊजली	- 489	- 146
माघ उज्यारी तीज को	- 488	- 146
माघ उज्यारी दूज दिन	- 91	- 26
माघ पाँच जो हों रविवार	- 492	- 147
माघ सत्तमी ऊजली	- 92	- 26
माघ सुदी आठैं दिवस	- 95	- 27
माघ सुदी जो सत्तमी	- 93,151	- 26, 42
माघ सुदी पून्यो दिवस	- 157	- 44
मार्ग बदी आठें घन दरसै	- 85	- 24
मार्ग महीना माँहिं जो	- 487	- 145
मीन सनीचर कर्क गुरु	- 494	- 147
मूल गल्यो रोहिनि गली	- 495	- 147
मृगसिरा वायु न बाजिया	- 153	- 43
मृगसिरा वायु न बादला	- 154	- 43

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
	'य'	
यकसर खेती यकसर मार	- 204	- 58
	'र'	
रवि के आगे सुरगुरू	- 500	- 149
रवि तामूल सोम के दरपन	- 522	- 156
रात निर्मली दिन को छाँहीं	- 162	- 46
रात्यो बोलै कागला	- 160	- 45
रिक्ता तिथि अरु क्रूर दिन	- 501	- 149
रोहिनि माही रोहिनी	- 161	- 45
रोहिनी जो बरसै नहीं	- 98	- 28
	'ल'	
लोमा फिरि फिरि दरस दिखावै	- 523	- 156
	'स'	
सगुन सुभासुभ निकट हो	- 524	- 157
सनमुख छींक लड़ाई भाखै	- 525	- 157
सनि आदित औ मंगल	- 505	- 151
सनि चक्कर की सुनिये बात	- 502	- 149
सर्प तपै जो रोहिणी	- 208	- 59
सातै पाँच तृतीया दसमी	- 503	- 150
सावन उखम में भादों जाड़	- 117	- 32
सावन उजरे पाख में	- 507	- 151
सावन कृष्ण एकादसी	- 176	- 50
सावन कृष्ण पक्ष में देखौ	- 169	- 48
सावन के प्रथम दिन	- 103	- 29

विषय	कहावत संख्या	पृष्ठ
सावन पछुवाँ भादों भरे	- 109	- 30
सावन पहली चौथ में	- 118	- 33
सावन पहली पंचमी	- 104, 168	- 29, 48
सावन पहिले पाख में	- 112	- 31
सावन पुरवाई चलै	- 163	- 46
सावन बदी एकादसी	- 508	- 151
सावन सुक्ला सत्तमी	- 165	- 47
सावन सुक्ला सत्तमी	- 166	- 47
सावन सुक्ला सत्तमी	- 174	- 49
सावन सुक्ला सत्तमी	- 164	- 46
सावन सुक्ला सत्तमी	- 114	- 32
सावन सुक्ला सत्तमी	- 172	- 49
सावन सुक्ला सत्तमी	- 167	- 47
सावन सुक्ला सत्तमी	- 115	- 32
स्वाती दीपक जो बरै	- 504	- 150
स्वान धुनै जो अंग	- 527	- 158
सिर पर गिरै राजसुख पावै	- 526	- 158
सुक्रवार की बादरी	- 116	- 32
सुदि असाढ़ की पंचमी	- 111	- 31
सुदि असाढ़ में बुध को	- 170	- 48
सुदि असाढ़ नौमी दिना	- 113	- 31
सूके सोमे बुद्धे बाम	- 528	- 159
सोम सुकर सुरगुरु दिवस	- 506	- 151

संदर्भ ग्रन्थ

1. अवधी बृहत् लोकोक्तियाँ - सं. श्रीमती कमला शुक्ला
2. अवधी कहावतें - डॉ. इन्दु प्रकाश पाण्डेय
3. घाघ और भड्डरी - पं. राम नरेश त्रिपाठी
4. भोजपुरी लोकोक्तियाँ - डॉ. शशिशेखर तिवारी
5. मिश्रबन्धु विनोद - (भाग द्वितीय) मिश्रबन्धु
6. लोक साहित्य के प्रतिमान - डॉ. कुन्दन लाल उप्रेती
7. लोक साहित्य की भूमिका - डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
8. शिवसिंह सरोज - शिवसिंह सेंगर
9. हिन्दी शब्द सागर (प्रथम खण्ड) - पं. श्यामसुन्दर दास
10. हिन्दी नीतिकाव्य - भोलानाथ तिवारी
11. कविता कौमुदी भाग एक - सं. पं. राम नरेश त्रिपाठी
12. घाघ और भड्डरी की कहावतें - डॉ. अशोक त्रिपाठी

वर्षा सम्बन्धी

[1]

अगिन जवासा, गाड़ीवान, छेड़ी छीपी ऊँट कंहार।
वेस्या बानर बानिन, दस मलिन जौ बरसै पानी।

शब्दार्थ- अगिन-आग। जवासा-एक प्रकार की घास। छेड़ी-बकरी। छीपी-कपड़ों पर छपाई करने वाले।

भावार्थ- घाघ कवि करते हैं कि आग, जवासा, गाड़ी चलाने वाला, बकरी, कपड़े पर छपाई करने वाला, ऊँट, कुम्हकार, वेस्या, बन्दर और बनिये की स्त्री ये दसों पानी बरसने पर दुःखी होते हैं। क्योंकि इन्हें अपने-अपने कार्यों को करने में कठिनाई होती है।

[2]

आवत अदरा ब कइलन, जात न देलन हस्त।
येही में दूनों गइलन, पाहुन आ गिरहय।।

शब्दार्थ- अदरा-आर्द्रा नक्षत्र। देलन-दिया, हस्त-हस्त नक्षत्र, अभिवादन करना। पाहुन-अतिथि।

भावार्थ- घाघ कवि करते हैं कि यदि आर्द्रा नक्षत्र के आगमन के समय और हस्त नक्षत्र के प्रस्थान के समय वर्षा न हुई तो किसान बर्बाद हो जाता है। ठीक इसी प्रकार अतिथि को यदि आने पर आदर और प्रस्थान के समय अभिवादन न मिला तो वह कभी लौटकर नहीं आता है।

[3]

औवा - कौवा बहै बतास, तब होवे बरखा के आस।

शब्दार्थ- औवा-कौवा- चारों ओर बहने वाली हवा, चौबाई। बतास-हवा।

भावार्थ- यदि हवा चारों ओर से बह रही है तो वर्षा होने की सम्भावना रहती है।

[4]

उतरा में जे बहे उतरही, अँगने गगरी भर बउरही।

शब्दार्थ- उतरा-उत्तरा नक्षत्र। उतरही-उत्तर दिशा की ओर से चलने वाली हवा। बउरही-पगली।

भावार्थ- उत्तरा नक्षत्र में यदि उत्तर दिशा से बहने वाली हवा चले तो हे पगली (भोली) आँगन में ही घड़ा भर लो। तात्पर्य यह है कि तुम्हें पानी भरने के लिए बाहर नहीं जाना होगा। तत्काल वर्षा होने वाली है।

[5]

चढ़त बरसे अदरा, उतरत बरसे हस्त।
बीच बरसे माघा, चैन करे गिरहथ।।

भावार्थ- यदि आर्द्रा नक्षत्र आरम्भ में हस्त नक्षत्र अंत में और मघा नक्षत्र बीच में बरसता है तो गृहस्थ आनन्द करता है क्योंकि उसे अलग से पानी देने की आवश्यकता नही रह जाती है।

[6]

जो चले पछिवां वाउ, मिली माँड न कतहु जाउ।
सावन पछिवां सींकि डोलावे, सरसत मेघ कौन विलमावे।।

शब्दार्थ- बाउ-हवा, माँड-बने चावल का पानी। पछिवां-पश्चिम दिशा की हवा।

भावार्थ- यदि आसाढ़ मास में पछिवां हवा चल गई तो धान की फसल नहीं होगी। जहां कही भी जावों माँड नहीं मिलेगा, लेकिन यदि सावन महीने में पछिवां हवा सींक डुलाने लायक (थोड़ी भी) चले तो पानी बरसने से कौन रोक सकता है।

[7]

भौमी माघ अंधेरिया, भूल रिच्छ को भेद।
हो भादों नौमी दिवस, जल बरसे बिन खेद।।

भावार्थ- भड्डरी कहते हैं कि यदि माघ मास के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को मूल नक्षत्र पड़ता है तो यह समझ लेना चाहिए कि भाद्रपक्ष की नवमी को वर्षा अवश्य होगी।

अकाल सम्बन्धी

[1]

आवत करे कुछ अदरा, जात करे कुछ हस्त।
माघ मास के बुनी बिनु, निरधन होय गिरहथ।।

शब्दार्थ- अदरा-आद्रा नक्षत्र। हस्त-हस्त नक्षत्र। बुनी-बूँद।

भावार्थ- यदि आर्द्रा नक्षत्र चढ़ते और हस्त नक्षत्र उतरते नहीं बरसता है और मघा नक्षत्र भी वर्षा की बूँदों के अभाव में सूखा चला जाता है तो किसान निर्धन हो जाता है।

[2]

आसाढ़ी शुदि नवमी, ना बादर ना बीज।
हर फाड़ि इन्हना करय, बइठल चाभय बीज।।

शब्दार्थ- शुदि-शुक्ल पक्ष। इन्हना-ईंधन।

भावार्थ- यदि आसाढ़ शुक्ल नवमी को न बादल न बिजली हो तो किसान हल को चीड़-फाड़ कर ईंधन बना दे और घर बैठे ही बोने वाला बीज भी खा डाले क्योंकि अकाल पड़ेगा।

[3]

कर्क राशि में गुरु जो आवै, सिंह राशि में शुक्र सोहावै।
ताल मां बरसै सीधे धूर, कहूं न उपजै सातौ तूर।।

भावार्थ- भड्डरी कहते हैं कि यदि वृहस्पति कर्क राशि पर, शुक्र सिंह राशि पर होता है तो पानी नहीं बरसता है। सूखे के कारण

ताल (तालाब) भी सूख जाते हैं और उसमें धूल उड़ने लगती है तथा कहीं भी सातों प्रकार के अन्न में कोई नहीं होता।

[4]

क्यों रोहिणी वर्षा करें, बचे जेठ नित मूर।
एक बूँद कृतिका पड़े, नासै तीनों तूर।।

शब्दार्थ- मूर-समूल, पूरा। तूर- अन्न।

भावार्थ- यदि रोहिणी नक्षत्र में वर्षा होती है और पूरा जेष्ठ मास सूखा जाता है तो इससे कुछ भी लाभ नहीं होगा। यदि कृतिका नक्षत्र में पानी की एक बूँद भी पड़ जाये तो तीनों प्रकार के अन्न, जौ, गेहूँ और चना बर्बाद हो जाते हैं। तात्पर्य है कि कृतिका नक्षत्र की एक बूँद भी रवि की फसल के लिए हानिकारक समझी जाती है।

[5]

भूइँया लोट चले पुरवाई, ते दिन सावन धूरि उड़ाई।

भावार्थ- जब पुरवा हवा जमीन को छूती हुई अर्थात् बवन्डर बाँधती हुई चले तो सावन में भी वर्षा की आशा नहीं होती है। अर्थात् जितने दिन पूर्वा हवा चलती है उतने दिन सावन जैसा बरसने वाला नक्षत्र भी सूख जाता है।

खेती सम्बन्धी

[1]

ओझा किमिया बैद किसान, आँडू बैल तो खेत-मसान।

शब्दार्थ- ओझा- झाड़ फूँक करने वाला। किमिया- खेत मे काम करने वला मजदूर। आँडू- जिस बैल को बधिया न किया गया हो। मसान- श्मशान (जिसमें कुछ पैदा न हो।)

भावार्थ- घाघ करते हैं कि यदि मजदूर झाँड़-फूँक करता हो किसान वैद्यकी करता हो और बैल बधिया न हो तो समझ लो कि खेती श्मशान हो जायेगी।

[2]

कॉसा फूला चौथ के चाँद, अब का बोया धान किसान।

शब्दार्थ- कॉसा- एक प्रकार की घास। चौथ- भाद्र शुक्ल चतुर्थी।

भावार्थ- भड्डरी का कहना है कि अब तो भादों के शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा दिखाई देने लगा है और आकाश में बादल भी नहीं के बराबर हैं और कास भी फूलने लगे हैं तो ऐसे में हे किसान धान बोने से क्या लाभ होगा, अब तो वर्षा काल भी समाप्त हो चुका है।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी कहा है कि-

फूले कॉस सकल भहि छाई। जनु बरसा कृत प्रकट बुढ़ाई।।

पैदावार सम्बन्धी

[1]

सावन पछुवा भादो पुरवा, आसिन बहे ईसान
कातिक कन्ता सींकि न डोले, कहाँ तू रखबड धान।।

शब्दार्थ- आसिन- क्वार मास, कान्ता पति ईसान- (पश्चिम उत्तर के कोने से बहने वाली हवा) सींकि- थोड़ी सी।

भावार्थ- यदि सावन में पछिवां, भादो में पुरवा और क्वार में ईसान कोण की हवा बहे और कातिक में जरा सी हवा न बहे तो हे पतिदेव तुम धान कहा रखोगे। अर्थात् अत्यधिक पानी बरसने से धान की फसल भरपूर होगी।

किसान सम्बन्धी

[1]

जेकरे भूसा चुका असाढ़, ओकै दिन होइ गवा पहाड़।

भावार्थ- घाघ कवि का मानना है कि जिस किसान के यहाँ भूसा असाढ़ माह में ही समाप्त हो गया उसका दिन पहाड़ हो जाता है क्योंकि किसान का बैल के बिना काम नहीं चल सकता और बिना भूसा-चारा के जानवर कौन रख सकता है? यह चिन्ता किसान को लगातार घेरे रहती है

यह बात घाघ की पुत्रवधू सुन रही थी, वह बड़ी अकलमंद थी और कहती है-

घाघ दहिजरा ना भल कहा, बहुतै के चइतै न रहा।

शब्दार्थ- दहिजरा- दाढ़ीजार (गाली)।

भावार्थ- घाघ दाढ़ीजार (गाली) ने ठीक नहीं कहा है, क्योंकि बहुत किसानों का भूसा तो चैत मास में ही समाप्त हो जाता है फिर उनका काम कैसे चलता है?

पशु सम्बन्धी

[1]

अच्छी गाय बेसाहिए जिसकी कज्जल वान।
सोलह सिंघ, बत्तीस खुर, नवथन तेरह कान।।

शब्दार्थ- कज्जल- काली, बान-नेत्र

भावार्थ- घाघ कहते हैं कि किसान को वही गाय खरीदनी चाहिए जिसकी आँखे काँले रंग की हों, सींघ सोलह इंच, खुर बत्तीस इंच, थन नौ इंच और कान तेरह इंच के हों।

[2]

इनको कबहुं न लीजिये, मुक्त देय जो कोय।
सात दांत उदंत का, बैल जो काला होय।।

शब्दार्थ- उदन्त- वह बछड़ा जिसके दूध के दांत टूटे हों और नये दांत जमे न हों।

भावार्थ- घाघ कहते हैं कि जिस बैल का रंग काला हो और सात दांत हों अथवा उदन्त हो तो उसे यदि कोई मुफ्त में भी दे तो नहीं लेना चाहिए।

नीति सम्बंधी

[1]

आसिन मासे बहे ईसान
थर-थर कापे गाय किसान।

भावार्थ- यदि क्वार मास में ईसान कोण (पूरब और उत्तर के बीच का कोना) की हवा चलती है तो इतनी ठंडक पड़ती है कि गाय और किसान दोनों थर-थर कापने लगते हैं।

[2]

कुकुर सुतानी मरकनी, सरब लील कुश काट।
घग्घा चारो परि रहो, तब तुम पौढ़ो खाट।।

शब्दार्थ- कुकुर सुतानी- जिस खाट पर कुत्ते सोते हों। मकरकनी- चरमराने वाली। सरबलील- जिस पर बैठते ही नीचे धंस जाये। कुश काट- कुश के समान चुभने वाला।

भावार्थ- घाघ कवि कहते हैं कि जिस चारपाई पर कुत्ते सोते हों, जो बैठते ही चरमराती हो, जो इतनी ढीली हो कि बैठने वाला नीचे धंस जाये और जो कुश के समान चुभती हो। इन चार तरह की चारपाइयों को छोड़कर किसी अन्य चारपाई पर ही सोना चाहिए।

[3]

भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गये जड़ाव।
उमिर गये तिरिया मिलै, तीनों देव बहाय।।

भावार्थ- घाघ कवि का मानना है कि समय बीत जाने पर किसी वस्तु का कोई मोल नहीं रह जाता, जैसे भूख के बाद भोजन, जाड़े के बाद ऊनी कपड़ा तथा उम्र गुजर जाने पर स्त्री मिले तो वह व्यर्थ है असमय मिली इन तीनों वस्तुओं को त्याग देना चाहिए।

[4]

रहे निरोगी जो कम खाय।
काम न बिगरे जो गम खाय।।

भावार्थ- घाघ कवि कहते हैं कि जो आदमी अल्पाहारी होता है वह निरोगी रहता है और व्यक्ति अपने किसी काम को सम्पन्न करने में उतावलापन नहीं दिखाता, धैर्य रखता है उसका काम भी नहीं बिगड़ता है।

ज्योतिष सम्बन्धी

[1]

अश्विन बदी अमावस्या, जो आवै सनिवार।
समया होवै किखरो, जोसी करो विचार।।

शब्दार्थ- आश्विन-क्वार मास। किखरो- खराब।

भावार्थ- यदि क्वार मास की अमावस्या को शनिवार पड़ता है तो भड्डरी ज्योतिषी का कहना है कि आगे का समय बहुत खराब होगा, लोगों को विशेष कष्ट होगा।

[2]

कर्क संक्रमी मंगलवार, मकर संक्रमी हो शनिवार।
चन्द्रह मूरतवाली होय, देस उजाड़ करै यौं जोय।।

शब्दार्थ- कर्क संक्रमी- कर्क राशि की संक्रान्ति। मूरत- मुहूर्त।

भावार्थ- भड्डरी का कहना है कि यदि कर्क की संक्रांति मंगलवार, मकर की संक्रांति शनिवार को पड़े और दोनों ही पन्द्रह मुहूर्त तक रहे तो भीषण अकाल पड़ेगा और देश उजड़ जाने का भय है।

[3]

जेठ कृष्ण की परिवा देख,
जो दिन हो उसका फल लेख।
रवि से ज्यादा बूड़ा आवै,
मंगल हो तो व्याधि बतावे।
बुध को गल्ला तेज विकाय,
शनिवार परजा को खाय।
जो शुक्र गुरु का हो वारा,
अन्न भरै जग का भण्डारा।।

भावार्थ- भड्डरी कहते हैं कि ज्येष्ठ माह की प्रतिपदा जिस दिन पड़े उसका फल देखो-यदि उस दिन रविवार पड़ता है तो बाढ़ आती है, मंगल पड़ता है तो रोग और कष्ट आते हैं, बुध पड़ता है तो अन्न महँगा होता है, यदि शनिवार पड़ता है तो प्रजा (जनता) को कष्ट होता है लेकिन शुक्रवार या वृहस्पतिवार हो तो अन्न इतना पैदा होता है कि सारे संसार का भण्डार भर जायेगा।

[3]

दिशाशूल लै जाओ बायें राहु भोगिनी पूठ।
सन्मुख लेवे चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट।।

शब्दार्थ- भोगिनी- भोगने वाले। पूठ- पुट्ठा अर्थात् पीछे।

भावार्थ- भड्डरी कवि कहते हैं कि प्रस्थान के समय जिस दिशा में दिकशूल हो वह बायीं ओर हो और राहू पुट्ठे की ओर अर्थात् पीछे हो तथा चन्द्रमा सामने हो तो यात्रा करने वाला जहाँ जाता है वहाँ से अपार सम्पत्ति ले आता है।

[4]

माघ मास जो परै न सीत,
महंगा नाज जान्यो मेरे मीत।

भावार्थ- घाघ कवि कहते हैं कि यदि माघ महीने में ठंडक नहीं पड़ती है तो पैदावार कम होती है और अनाज महंगा बिकता है।

[5]

कुवार करैला चइत गुड़, भादौ मूली खाय।
पैसा खर्चे गांठ का, रोग बिसावन जाय।।

शब्दार्थ- गाँठ-पास में, पास का। बिसावन-खरीदना।

भावार्थ- घाघ कवि का कथन है कि यदि क्वार महीने में करैला, भादौ में मूली, चैत माह में गुड़ खा लिया तो वह हानिकारक ही होगा। शरीर अस्वस्थ्य हो जाता है और पैसा भी खर्च होता है लेकन रोग पीछा नहीं छोड़ता।

[6]

बासीं भात तेवासी माठा, और ककरी के बतिया।
आधी रात जुड़ावन आवे, भूइँया सुतावे कि खटिया।।

भावार्थ- घाघ कवि कहते हैं कि जो आदमी बासी भात और तीन दिनों का मठ्ठा खाता है तथा ककड़ी की बतिया खाता है उसे आधी रात में ही जूड़ी (जाड़े के साथ बुखार) आता है और वह या तो जमीन पर सो जाता है अर्थात् मर जाता है या खाट पर ही पड़ा रहता है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

साहित्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
डा० राजेन्द्र प्रसाद : एक युग स्मरण	सम्पा० वाल्मीकि चौधरी	२००.००
महाकवि अमीर खुसरो	अनु० अब्दुल सत्तार	३५.००
भुवनेश्वर: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	सम्पा० राजकुमार शर्मा	६०.००
क्षेमेंद्र और उनका समाज	डॉ० मोतीचन्द्र	२२.००
सुब्रहम्ण्य भारती	सम्पा० डा० एन० सुन्दरम	१६५.००
साहित्य मनीषी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	डा० रामचन्द्र तिवारी	६०.००
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र	राधा कृष्ण दास	४८.००
हरिश्चन्द्र	बाबू शिवनन्दन सहाय	१००.००
राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त स्मृति ग्रंथ	सम्पा० स्व० डा० ठाकुर प्रसाद सिंह	१७५.००
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन स्मृति ग्रंथ	सम्पा स्व० श्री कमलापति मिश्र	१२५.००
आचार्य किशोरीदास वाजपेई स्मृति ग्रंथ	सम्पा० डा० मंजु लता तिवारी	२००.००
गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' स्मृति ग्रंथ	सम्पा० डॉ० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक'	१६५.००
बंशीधर शुक्ल रचनावली	सम्पा० डॉ० श्यामसुन्दर मधुप	३७८.००
कबीर	डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	४०.००
गोस्वामी तुलसीदास	डॉ० रामचन्द्र तिवारी	५०.००
रामचंद्र शुक्ल	प्रो० सत्यदेव मिश्र	१५.००
राष्ट्रकवि सोहन लाल द्विवेदी	डॉ० राष्ट्रबन्धु	४०.००
चंदवरदाई	डॉ० सुमन राजे	५०.००
कविवर सुमित्रानन्दन पंत	डॉ० सुरेश चन्द्र गुप्त	५२.००
कथाकार यशपाल	डॉ० मनमोहन सहगल	७०.००
सुभद्रा कुमारी चौहान	डॉ० प्रतीक मिश्र	५५.००
भगवती चरण वर्मा : एक व्यक्तित्व-चित्र	ज्ञान चन्द्र जैन	७०.००
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	डॉ० कन्हैया सिंह	४३.००
मैथिलीशरण गुप्त	डॉ० प्रभाकर शुक्ल	५०.००
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	डॉ० रामेन्द्र पाण्डेय	५०.००
सेनापति	डॉ० अनन्त राम मिश्र 'अनन्त'	५०.००
गुरु नानक देव	डॉ० मनमोहन सहगल	६०.००

सम्पर्क सूत्र

निदेशक

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

6, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ–226001

ISBN : 978-93-82175-09-4

मूल्य : ₹ ६०=००